

**THE BOOK WAS  
DRENCHED**

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_180469**

UNIVERSAL  
LIBRARY



# Osmania University Lib

Call No. H83  
F817  
Author फ्रांस, अनातोले  
Title ताया  
Accession GH 196

This book should be returned on or be  
marked below.

---



सरस्वती-सिरीज़ नं० १५

# ताश्रा

सर्वदानंद वर्मा



प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

प्रयाग

## अनुवादक की ओर से

फ्रांस के अमर कलाकार अनातोले फ्रांस की इस विश्व-विख्या कृति 'ताया' के अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई यदि कोई है, तो वह है इसकी पौराणिकता ! ग्रीस और मिस्र की माइथोलोजी का ऐसा मे- इसमें है कि अनुवादक को तत्समान भारतीय भाव खोजने में खो जाना पड़ता है। फिर भी, चेष्टा की गई है कि मूल पुस्तक के भाव नष्ट न हों। पात्रों का नाम ज्यों का त्यों दिया गया है, उन्हें भारतीय रूप देना अनुवादक को रुचा नहीं।

मन और महात्मा के पतन की यह कहानी, साय ही उस युग की एक अभिनेत्री, भगवान्-विमुख ताया के जीवन की यह कथा साहित्य में अमर है। अनुवाद भी, जो कुछ है, आपके सामने है। 'ताया' के अनुवाद कई भाषाओं में, हिन्दी में भी, निकल चुके हैं। उस लम्बी माला में एक मनका और जोड़ देने का श्रेय ही मुझे है, शेष के अधिकारी हैं, इंडियन प्रेस के प्राण और मुझ पर कृपालु श्री हरिकेशव घोष और स्वयं अना- तोले फ्रांस !

नन्दन-भवन  
७४, जार्ज टाउन  
इलाहाबाद

—सर्वदानन्द वर्मा

Checked 1963



१

उन दिनों उस मरुभूमि में तपस्वियों की बस्ती थी। नील नदी के दोनों किनारों पर इनकी नर्म चिकनी मिट्टी और पेड़ों की टहनियों की बनी भोपड़ियाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर, बिखरी पड़ी थी। ये तपस्वी इस तरह एकान्तवास भी करते थे और आवश्यकता पड़ने पर परस्पर सहायता भी करते थे। कुटियों के बीच-बीच से ऊपर उठे हुए गिरजाघर भी दीख पड़ते थे जिन पर 'क्रास' लगे हुए थे। इन गिरजों में उत्सवों पर साधुगण धार्मिक कृत्यों के लिए एकत्र होते थे। किनारों पर ही कुछ महन्तों के घर थे जो अपनी-अपनी गंकीर्ण कोठरियों में ही बन्द रहकर सिद्धि-प्राप्त करने में संलग्न रहते थे।

इन साधुओं और महन्तों का जीवन संयमपूर्ण था। सूर्यास्त के बाद ये केवल नमक और रोटियाँ खाते थे। इनमें से कुछ समाधियों या कन्दराओं में रहकर और भी अधिक एकान्त जीवन व्यतीत करते थे।

ये लोग सिर पर कन्टोप रखते थे और लबादा पहनते थे। लम्बे जागरण करते थे। भूमि पर सोते थे। ईश-प्रार्थना करते और भजन करते थे। और भी अनेक प्रायश्चित्त के कठिन कार्य प्रतिदिन किया करते थे। पूर्वपाप को नष्ट करने के लिए उन्होंने न केवल समस्त आनन्दों और तृप्तियों को छोड़ दिया था बल्कि वे उस आकर्षण से भी अपने को दूर रखते थे जो आज दिन अनिवार्य है। उनका विचार था कि शारीरिक

यातना से आत्मा का बल बढ़ता है, तथा कोढ़ और फोड़े ही शृंगार की सर्वोत्तम वस्तुएँ हैं। इस प्रकार देवदूतों की वह भविष्यवाणी पूरी हो रही थी जिसमें उन्होंने कहा था कि निर्जन भी फूलों से भर जायेंगे।

इस पवित्र विहार के कुछ लोग तो सन्यास-साधन और चिन्तन में समय व्यतीत करते थे, कुछ ताड़ की जटाओं की रस्सियाँ बटते थे या फसल के समय आस-पास के कृषकों का काम कर दिया करते थे। लोगों का यह भी मिथ्या सन्देह था कि इनमें से कुछ डाके डालकर अथवा कारवाँ लूटनेवाले खानाबदोश अरबों का साथ कर जीविका-उपार्जन करते हैं, पर वास्तव में ये साधु धन-सम्पत्ति से घृणा करते थे। उनके सद्गुणों की सुगन्ध स्वर्ग तक पहुँचती रहती थी।

युवकों के वेष में दण्डधारी देवदूत यात्री बनकर इन कुटियों को देखने आते और शैतान, जानवरों के रूप में, इन्हें प्रलोभन दिखाने के उद्देश्य से कुटियों के चारों ओर फिरते रहते थे। प्रातःकाल भरने से जब साधु लोग अपने घड़े भरने जाते तब इन्हें बालू में शैतानों के चरण-चिह्न देख पड़ते थे। यह विहार एक प्रकार का युद्ध-क्षेत्र था जहाँ सदैव, विशेषतः रात्रि को, पुण्य और पाप, स्वर्ग और नर्क का आश्चर्यजनक द्वन्द्व चलता रहता था।

शैतानों की संख्या प्रचुर थी। बैरागी लोग उनसे अपनी रक्षा भगवान् और देवदूतों की सहायता तथा व्रत, प्रायश्चित्त और शरीर को दुर्बल करनेवाले उपायों के द्वारा किया करते थे। कभी-कभी पाशव इच्छाओं के निर्दयतापूर्वक त्रासित होने पर साधु कराह उठते थे। उस समय उनका स्वर भूखे लकड़बगधों-जैसा होता था। उस समय वे ही शैतान सुन्दर और आकर्षक बन जाते। शैतान यों तो भेदे और कुरूप होते हैं; किन्तु कभी-कभी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को छिपाने के लिए कृत्रिम

मौन्दर्य धारण कर लेते हैं। वैरागी अपनी कोठरियों में ही विस्मय-भरे हुए आनन्द के ऐसे दृश्य देखने लगते, जो शायद उस युग के अत्यन्त विषया-सक्त लोग भी न जानते रहे हों। किन्तु पवित्र 'कास' की छाया उन पर सदैव रहती थी। अतः वे इन प्रलोभनों में नहीं फँसते थे। सबेरा होने पर शैतान अपना असली रूप धारण करके लज्जित और क्रोधित हो भाग जाते थे। उन्हें इस तरह रोज़ भागते हुए देखना स्वाभाविक हो गया था। पूछने पर वे कहते—“यहाँ के ईसाइयों में से एक ने मुझे दण्डों से मारा है और घृणा-सहित खदेड़ दिया है।”

इन निर्जनवासियों को ज्ञात था कि वे दुष्टों को दमन करने की कितनी शक्ति रखते हैं।

कभी-कभी उनकी साधुता विकट हो उठती थी। देवताओं की कृपा से ईश्वरविरोधी कृत्यों का दण्ड देने की क्षमता उनमें थी और जिसे वे अपराधी समझते उसे कोई शक्ति नहीं बचा सकती थी। नगरों के, यहाँ तक कि अलेक्जेंड्रिया तक के लोग यह कहा करते थे कि इन वृद्धों-द्वारा ताड़ित अपराधियों को पृथ्वी अपने गह्वर में रख लेती है। घृणित जीवन व्यतीत करनेवाले सभी लोग, विशेषतः धूर्त, आवारागर्द, विवाहित पुरोहितसमुदाय और वेश्यायें इनसे बहुत भय खाती थीं।

इनकी साधुता ने जंगली पशुओं को भी वशवर्ती बना दिया था। कोई योगी जब मरने लगता था तब एक सिंह उसके पास उसकी क़ब्र अपने पंजों से खोदने आता था। वह पवित्रात्मा इस दृश्य से जान लेता था कि उसकी मृत्यु समीप है, अतः अपने बन्धुओं को गले लगाकर वह प्रसन्नतापूर्वक भगवान् में लीन हो जाने को समाधिमग्न हो जाता था।

इस मंडली में एष्टानी सबसे अधिक प्रभावशाली था। उसकी आयु सौ वर्ष से भी अधिक थी; पर वह पिछले कुछ दिनों से अपने प्रिय शिष्य

मेकैरस और अभायस के साथ माउण्ट कालिजन में रहने लगा था। अतः समूचे विहार में एण्टिनोय के पुरोहित पैफनाशस जैसा सद्गुण-सम्पन्न और कोई न बचा। दो साधु और भी प्रभावशाली थे। इनके नाम थे इफ्रेम तथा सेरापियन। इफ्रेम तथा सेरापियन के अनुगामी साधुओं की संख्या अधिक थी और ये अपने मठों के आध्यात्मिक और सांसारिक प्रबन्धों के लिए प्रसिद्ध भी थे। किन्तु पैफनाशस की तपस्या इनसे कहीं बढ़कर थी। वह सबसे कठिन उपवास करता, कभी-कभी तीन-तीन दिन तक निराहार रह जाता। खुरदुरे बालों का लबादा पहनता, सायं-प्रातः अपने को कोड़ों से पीटता और अकसर चिन्न पड़ा रहता था।

पैफनाशस की कुटी के पास ही अपनी कुटिया बनाकर उसके चौबीस शिष्यों ने भी उसकी साधना का अनुगमन आरम्भ किया था। शिष्यों को वह बहुत चाहता था और निरन्तर उन्हें तपस्या के लिए उकसाता रहता था। उसके धर्मपुत्रों में ऐसे लोग भी थे जो कई वर्षों तक डाकू रहने के बाद पवित्र मठाधीशों के निरन्तर उपदेशों से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने मठ-जीवन स्वीकार कर लिया था। उनके जीवन की पवित्रता ने उनके साथियों को भी चकित कर दिया था। इनमें अबीसी-निया की सम्राज्ञी का रसोईदार, जो मठाधीश-द्वारा धर्म-परिवर्तन के बाद भी आँसू बहाया करता था, और उपरोहित फ्लेपियन, जो एक विज्ञ और चतुर वक्ता था, भी थे। किन्तु पैफनाशस के शिष्यों में सबसे अधिक प्रशंसनीय था पॉल नामक एक युवक किसान, जो अपनी अत्यधिक सरल हृदयता के कारण मूर्ख कहा जाता था। लोग उसकी निष्कपटता पर हँसते थे; किन्तु परमात्मा प्रसन्न होकर उसे दर्शन देते थे और उसे भविष्यवाणी करने की शक्ति प्रदान की थी।

पैफनाशस अपने पवित्र समय का उपयोग अपने शिष्यों को उपदेश देने अथवा सन्यास-साधन में करता था। वह अकसर दृष्टान्तों को खोजने के उद्देश्य से धर्म-पुस्तकों का भी मनन करता था, जिन्होंने उसे इस युवावस्था में ही इतना गुणी बना दिया था। अन्य साधुओं के ऊपर कठोर आक्रमण करनेवाले शैतान उसके पास तक नहीं फटकते थे। राग को, सात श्रृंगाल उमकी कुटी के सामने शान्तभाव से बैठकर उपदेश सुनते थे। कहा जाता था कि वे सात शैतान थे जिन्हें उमने अपनी पवित्रता में वश में कर रक्खा था।

पैफनाशस अलेक्जेंड्रिया में एक भद्र परिवार में पैदा हुआ था। उसे भौतिक विषयों की अच्छी शिक्षा मिली थी। वह कवियों के मिथ्या शब्द-जालों में भी बह गया था और शुरू जवानी में उसका मस्तिष्क दूषित, और विचार अस्त-व्यस्त हो उठे थे। उसका विश्वास था कि मानव-जाति 'ड्यूकैलियन' \* की बाढ़ में बह गई, और अपने साथियों से प्रकृति और सद्गुणों पर, यहाँ तक कि ईश्वर के अस्तित्व पर भी बहस करता रहता था। उन दिनों वह लम्पटों का जीवन व्यतीत कर रहा था, जैसा कि उन दिनों के शहरों में रहनेवाले लोग करते थे। पर अब उसे अपने अतीत पर लज्जा आती थी। वह अपने सहचरों से कहा करता था कि उस समय में मिथ्या आनन्द में लीन रहता था। सुस्वाद और मुरुचिपूर्ण भोजन करता था और आम स्नानगृहों में भी जाता था। वास्तव में अपनी बीस वर्ष की आयु तक उसने ऐसा जीवन बिताया जिसे जीवन की अपेक्षा मृत्यु का काल कहना चाहिए। किन्तु पुरोहित मैक्रिनस के उपदेशों के बाद उसका नव-जीवन हुआ था। वह एकदम बदल गया था।

‘सत्य’ ने उसे पूर्णरूप से आवृत कर लिया था। उसका कहना था कि सत्य की ज्योति बरछे की तरह उसके मन-प्राण में प्रवेश कर गई थी। जिस ज्ञान का व्याख्यान मसीह ने अपने वधस्थान में किया था; उसने इसके मन पर प्रभाव डाला और क्रूस पर चढ़ाये गये ईसा की मूर्ति की वह पूजा करने लगा। बप्तिस्मा के बाद, स्वाभाविक बन्धन के कारण वह अगले वर्ष भी उन भद्र पुषों के साथ ही रहा। एक दिन एक चर्च में उसने उपरोहित को धर्मग्रंथ का यह उद्धरण पढ़ते सुना—“यदि तुम पूर्ण होना चाहते हो तो अपना सब कुछ बेचकर गरीबों को बाँट दो।” उसने शीघ्र ही अपनी जायदाद बेच दी, बिक्री के रुपये दान कर दिये और साधु का जीवन स्वीकार कर लिया।

अपने एकान्त-जीवन के दस वर्षों में वह सदैव वासनाओं से पराङ्मुख रहा और तपोमय जीवन तथा कष्टसहन-द्वारा अपनी आत्मा का संस्कार करता रहा।

एक दिन वह अपने उन दिनों की याद कर रहा था जब वह भगवान् से विमुख था। अधर्म की गुरुता पूरी तरह समझ सकने के लिए वह अपनी भूलों को एक-एक कर याद कर रहा था। उसकी स्मृति में अलेक्जेंड्रिया के थियेटर में बरसों पहले देखी हुई एक अत्यन्त सुन्दरी अभिनेत्री ताया आगई। यह स्त्री खेलों में भी भाग लेती थी और कुशल नृत्यों में भी निस्संकोच शामिल हुआ करती थी। उन नृत्यों की अंगभंगियों के स्मरण से ही भयंकर वासना जाग्रत होती थी। वह ऐसे लज्जा-जनक दृश्यों का भी अभिनय करती थी जिनका सम्बन्ध काफ़िरों की कथाओं के अनुसार वीनस, लीडा और पैसिफ्री आदि विलास की देवियों से था। इस प्रकार वह समस्त दर्शकों के हृदयों में विलास की आग भड़काती थी। जब प्यार-भरे सुन्दर युवक अथवा धनी वृद्ध व्यक्ति उसके द्वार पर मालायें

बिखेरते, वह उदारतापूर्वक उनका स्वागत करती थी। इस तरह वह अपनी आत्मा की हत्या तो करती ही, साथ ही अन्य कितनों को भी चीपट किया करती थी। उसके अनेक प्रशंसकों में पैफनाशस भी एक था। उसके मन में ताया ने वासनाओं की ज्वाला जगा दी थी। एक बार वह उसके घर तक भी गया था किन्तु यौवनागम की स्वाभाविक भीरुता और खदेड़ दिये जाने के डर से द्वार पर ही ठिठक गया था। उसे एक भयंकर अपराध से बचाने के लिए भगवान् ने दया करके इन साधनों से काम लिया था। उस समय पैफनाशस ने इसे नहीं समझा। उस समय वह अपनी भूठी इच्छाओं और अपने हितों में भेद नहीं देख सका था।

उसने अपराध के स्वीकृति-स्वरूप पवित्र क्रास के सामने मस्तक झुका दिया।

पैफनाशस ताया के विषय में सोचने लगा। वही उसके जीवन की 'पाप' थी। मन्यास के नियमों के अनुसार उसने उन पाशव आनन्दों की भयंकरता पर देर तक मनन किया, जो इस स्त्री ने मूर्खता और अज्ञानता के दिनों में उसके मन में जगा दिये थे। कुछ घंटों के चिन्तन के बाद ताया की प्रतिमूर्ति स्पष्ट उसे दीख पड़ी। उसने उसे पुनः देखा। वह शरीर से वैसी ही सुन्दर थी। वह 'लीडा' के रूप में मणिजटित पलंग पर लटी दीख पड़ी, माथा पीछे की ओर झुका हुआ, आर्द्र और प्रकाशमान आँखें, स्पन्दित नाक, अधखुला मुख, पूर्ण विकसित गोल-गोल छातियाँ और लहरियों जैसे स्निग्ध युगल बाहु थे। यह देखकर पैफनाशस छाती पीटकर कह उठा—'हे भगवान्, तुम साक्षी हो! मैं अपने अपराध की गुस्ता समझ रहा हूँ।'

प्रतिमा धीरे-धीरे हिलने लगी। उसके अधरों से धीरे-धीरे विचित्र कण्ट-भावनायें व्यक्त होने लगीं। आँखों में आँसू भरे हुए थे और हृदय

से आँधी-जैसी उसामें निकल रही थीं। उसे इस दशा में देख पैफनाशस द्रवित हो गया और उसने घुटने टेककर प्रार्थना की—“ओ भगवान्, तुमने हमारे हृदय में दया कूट-कूटकर भर दी है जैसे हरे मैदानों में प्रातः-कालीन ओस-विन्दु ! ओ न्यायी और भ्रमाशील परमात्मा, तुम्हें धन्य-वाद है ! मेरी इस निर्बलता को दूर कर दो जो वामना की ओर मुझे ले जा रही है। मुझे क्षमता दो कि मैं तुम्हारे नाम पर तुम्हारे इन जीवों को प्यार कर सकूँ, वे नश्वर हैं और तुम अमर हो। इस स्त्री के लिए मेरे दुखी होने का कारण यही है कि यह तुम्हारी कृति है। स्वर्गदूत भी इस पर कृपा करते हैं। भगवान्, क्या यह तुम्हारी ही कृति नहीं है ? वह इस प्रकार इतने नागरिकों और अपरिचितों के साथ अपराध नहीं कर सकेगी। उसके लिए मेरे हृदय में बड़ी दया उत्पन्न हो गई है। उसके अपराध घृणाजनक हैं और उनके विचार-मात्र से मैं काँप उठता हूँ, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। किन्तु जितना ही महान् उसका अपराध होगा, उतनी ही मैं उस पर कृपा करूँगा। अनन्तकाल तक शैतान उसे कष्ट देते रहें, यह विचार मुझे व्यग्र कर देता है।”

जब वह इस प्रकार चिन्तना कर रहा था, उसने एक श्रृगाल को पाँव के पास बैठे देखा। उसे आश्चर्य हुआ, कुटी का द्वार तो सुबह से ही बन्द था। श्रृगाल उसके विचारों को समझता हुआ जान पड़ा। वह कुत्ते की तरह पूँछ हिला रहा था। पैफनाशस ने पवित्र ‘क्रास’ का चिह्न बनाया, श्रृगाल लुप्त हो गया। यह जानकर कि आज पहली बार शैतान उसकी कुटी में आया है, उसने एक छोटी प्रार्थना की और फिर ताया के विषय में सोचने लगा। वह मन ही मन यह कहकर कि—‘परमात्मा की सहायता से मैं उसे अवश्य बचाऊँगा’, सो गया।

दूसरे दिन सुबह, प्रार्थना के बाद, वह पवित्रात्मा पेलमान के यहाँ गया, जो थोड़ी ही दूर पर रहकर साधु-जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे अपने नियमानुसार शान्त और प्रसन्न थे और अपना बाग खोद-खाद रहे थे। पेलमान बूढ़े थे और उनके पास एक छोटा बाग था, जंगली पशु आकर उनका प्रेम से हाथ चाटते थे और शैतान उनसे दूर रहते थे।

अपनी खुरपी पर टेक लगाते हुए, उन्होंने कहा—‘परमात्मा को धन्यवाद है, भाई पैफनाशस !’

पैफनाशस ने जवाब दिया—“परमात्मा को धन्यवाद है, तुम्हें शान्ति मिले भाई !”

माथे से पसीना पोंछते हुए पेलमान ने उत्तर दिया—“तुम्हें भी शान्ति मिले, भाई पैफनाशस !”

पैफनाशस ने कहा—“भाई पेलमान ! हमारी बातचीत का एकमात्र उद्देश्य उमका गुणगान करना होता चाहिए जो अपने भक्तों के साथ सदैव रहने के लिए वचनबद्ध है। इसी लिए मैं उस परम-पिता की शश-वृद्धि करनेवाले एक उपाय पर तुमसे बातचीत करने आया हूँ।”

“तुम्हारे उपाय पर उसी तरह भगवान् की कृपा हो जैसी मेरे उपवन पर है। प्रतिदिन प्रातःकाल वे ओस के रूप में मेरे बाग पर अपना वरदान बरसाते हैं और खीरा, लौकी आदि का प्रसाद प्रदान कर मुझे अपनी प्रशंसा के लिए बाध्य करते हैं। हमें सदैव शान्ति में रहने के लिए उनकी प्रार्थना करनी चाहिए। हृदय को विचलित करनेवाले भावों से अधिक भय और किसी वस्तु से नहीं किया जा सकता। इनसे विचलित होकर हमारी दशा शराबियों-जैसी हो जाती है और हम बायें-दायें डोलते हुए, पतन के गह्वर में घृणित रूप से गिरने को सदैव उद्यत रहते हैं। ये भावोन्माद हमें कभी-कभी उग्र आनन्दों में डुबा देते हैं और अपने को इन मिथ्या

सुखों में खो देनेवाला व्यक्ति राक्षसों के विकट अट्टहास का शिकार बनता है। इस दुःखजनक आनन्द-द्वारा व्यक्ति भारी विभ्रम में पड़ जाता है। लेकिन कभी-कभी आत्मा और इन्द्रियों का कष्ट इस आनन्द से भी हजार गुना अधिक होता है। भाई पैफ़नाशस! मैं एक पापी व्यक्ति हूँ; किन्तु अपने इस लम्बे जीवन में मैंने अनुभव किया है कि महन्तों की सबसे बड़ी शत्रु उदासीनता है। मेरा मतलब है उस दृढ़ विषाद से जो मन-प्राण पर पूरी तरह छा जाता है और भगवान् का प्रकाश लुप्त कर देता है। इससे बढ़कर आत्म-रक्षा का शत्रु और कोई नहीं, और शैतान की विजय इसी में है कि साधु व्यक्तियों के हृदयों में इस दुष्ट प्रवृत्ति का बीज बो दे। अगर वह आनन्दप्रद प्रलोभन ही हमें दिखाये तब भी गनीमन है; पर वह तो हमें मताने में बाज़ी मार ले जाता है। पिता ऐंष्टानी को इसने क्या वह सुन्दर किन्तु नाजायज़ लड़का नहीं दिखाया जिससे वे रो पड़े? भगवान् की सहायता से ही वे शैतान के जाल से बचे। जब तक वे हमारे बीच रहे, मैं उन्हें पूरी तरह जानता रहा, शिष्यों के साथ वे आनन्दित रहते थे और कभी विषादयुक्त नहीं हुए। किन्तु भाई! तुम तो एक उपाय पर व्रत करने आये हो न? यदि तुम मुझे इसमें शामिल करोगे तो मैं इसे अपना अहोभाग्य समझूँगा; क्योंकि इसका उद्देश्य उस परम-पिता की यशःस्तुति है।”

“भाई पेलमान! मैं सच ही भगवान् की वन्दना करना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए; क्योंकि तुममें सत्य की ज्योति है और अपराध ने तुम्हारी बुद्धि की निर्मलता को धूमिल नहीं किया है।”

“भाई पैफ़नाशस, मैं तुम्हारे चरणों की धूल भी नहीं हो सकता और रेगिस्तान के सिकताकण की तरह मेरे अवगुण भी अनन्त हैं। किन्तु बड़ा होने के नाते अपने अनुभवों से तुम्हें वंचित नहीं रखूँगा।”

“मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ, भाई पेलमान ! मुझे दुःख होता है कि अलेक्जेंड्रिया में एक दरवारी नर्तकी ताया है जो पापमय जीवन व्यतीत कर रही है और जनता के लिए कलंक बनी हुई है।”

“भाई पैफ़नाशस ! यह तो वास्तव में अत्यन्त घृणा की बात है। भद्र-वर्ग में बहुत-सी स्त्रियाँ इसी प्रकार पापमय जीवन बिता रही हैं। क्या इस गम्भीर व्याधि का कोई उपाय तुमने सोचा है ?”

“भाई पेलमान, अलेक्जेंड्रिया जाकर मैं इस स्त्री का पता लगाऊँगा और उसे भगवान् की सहायता से शुद्ध करूँगा। यही मेरा उपाय है भाई ! क्या तुम इसमें सहमत नहीं हो ?”

“भाई पैफ़नाशस, मैं तो एक साधारण अधम व्यक्ति हूँ; किन्तु पिता एण्टानी कहा करते थे—‘तुम जहाँ हो वहाँ से दूसरी जगह जाने में जल्दी न करो।’”

“मेरे इस उद्योग में तुम्हें कुछ गड़बड़ दीखता है क्या, भाई पेलमान ?”

“पैफ़नाशस, अपने बन्धु के निश्चयों पर सन्देह मैं नहीं करता; किन्तु पिता एण्टानी ने यह भी कहा है—‘मूखी धरती पर रख दी जानेवाली मछलियाँ मर जाती हैं, इसी तरह अपनी कुटियों को छोड़कर संसार में मिलनेवाले साधु अपने पवित्र कर्तव्यों से डिग जाते हैं।’”

यह कहने के बाद पेलमान अपना खुरपा ज़मीन में धँसाकर एक फल-दार अंजीर वृक्ष के चारों ओर मिट्टी चढ़ाने लगा। वह खोद ही रहा था कि एक हिरन बाग की कुंजों की बनी चहारदीवारी फाँदकर भीतर आया और आश्चर्य-चकित तथा घबराया-सा खड़ा रह गया। फिर दो छलाँग मारकर बूढ़े के पास आया और उसकी धोती में मुँह छिपा लिया।

पेलमान ने कहा—“इस काले हिरन के निर्माण के लिए परमात्मा को धन्यवाद है।”

वह हिरन के साथ कुटी में चला गया और कुछ रोटियाँ ले आया, जिसे हिरन उसके हाथ से खाने लगा।

पैफनाशम ज़मीन की ओर दृष्टि गड़ाये देर तक मोचता रहा। और तब धीरे-धीरे अभी सुनी हुई बात पर विचार करता हुआ अपनी कुटी की ओर चला गया।

मग ही मन उमने कहा—“यह साधु बहुत अनुभवी और बुद्धिमान है। उसे मेरे उपाय पर सन्देह है। कुछ भी हो, मेरे लिए ताया को उम शैतान के हाथ में छोड़ देना कठिन है, जिसके वश में वह अभी है। परमात्मा मुझे रास्ता दिखाये और शक्ति दें।”

रास्ते में उसे एक तीतरी शिकारी-द्वारा बालू पर फैलाये जाल में फँसी दीख पड़ी। वह समझ गया कि यह एक मादा चिड़िया है, क्योंकि नर उड़ता हुआ जाल के पास आया और चोंच से जाल के छिद्रों को काट काटकर फेंकने लगा। इस तरह उसने अपने जोड़े के निकल भागने भर को छिद्र बना दिया। देवपुरुष ने इस दृश्य पर विचार किया और अपनी तपस्या के बल से घटनाओं का आध्यात्मिक अर्थ समझ लिया। वह समझ गया कि जाल में फँसी हुई चिड़िया ताया ही है, और जैसे उस नरपक्षी ने चोंच से जाल छिन्न-भिन्न कर डाला है वैसे ही वह भी अपनी शक्तिमय वाणी से ताया को अलक्षित रूप से बाँधनेवाले पाप-जाल को तोड़ डालेगा। उसने परमात्मा को धन्यवाद दिया और अपने निश्चय पर अटल रहा। लेकिन जब उसने नरपक्षी को स्वयं ही तोड़े हुए जाल में फँस जाते देखा, वह एक बार पुनः विचलित हो उठा।

रात भर वह सोया नहीं। सुबह के पहले उसने एक स्वप्न देखा। ताया पुनः उसके सामने आई। उसके मुख पर कलुषित आनन्द की आभा नहीं थी और सदा की भाँति वह महीन बहुमूल्य वस्त्र भी नहीं पहने थी।

एक चादर से उसका समूचा शरीर ढँका हुआ था, मुख का कुछ भाग भी परिवेष्टित था जिससे वह पुरोहित केवल बड़ी-बड़ी आँसू की बूंदों से भरे हुए दो नेत्र ही देख सका।

वह स्वयं भी रोने लगा। यह सोचकर कि यह स्वप्न स्वयं भगवान् न उसे दिया है, उसने देर नहीं की। उठकर अपना जरीब हाथ में लिया (ईसाई-धर्म की प्रतिमा), सावधानी से कुटी का द्वार बन्द किया ताकि जंगल के पशु-पक्षी उसके सिरहाने रक्खी हुई धर्म-पुस्तक नष्ट न कर सकें और अपन तेईस शिष्यों का भार उपपुरोहित फ़ेलेवियन को सौंपकर केवल एक लबादा पहनकर वह नील नदी की ओर बढ़ा। लीबिया के किनारे-किनारे वह सिकन्दर-द्वारा बसाये हुए नगर की ओर जाना चाहता था। प्रातःकाल उसने सिकताराशि के बीच थकावट, भूख और प्यास की परवाह न करते हुए चलना शुरू किया और सूर्य करीब-करीब डूब चुका था, जब उमने भयानक नदी के रक्तरंजित जल को सोने और आग के पहाड़ों के बीच गर्जना करते हुए बहने देखा। वह किनारे-किनारे, भगवत्-भजन के उद्देश्य से बनी हुई कुटियों में भीख माँगता हुआ और, गाली, इनकार और झिड़कियाँ प्रसन्नतापूर्वक सहता हुआ बढ़ता जा रहा था। इस समय उसे न तो डाकुओं का डर था और न जंगली जानवरों का, किन्तु रास्ते में पड़नेवाले गाँव और नगरों से वह जरूर बचता जा रहा था। वह नहीं चाहता था कि आँखमिचौनी खेलते हुए बालकों से उसका सामना हो जाय या उसे देख-देखकर स्त्रियाँ, जलाशयों पर अपना-अपना घड़ा उतार, दास-परिहास कर बैठें।

ये सब चीजें साधु के लिए खतरनाक हैं, कभी-कभी धर्मपुस्तक का वह अंश भी पढ़ना घातक होता है जहाँ लिखा है कि भगवान् ममीह नगर-नगर फिरते थे और शिष्यों के साथ भोजन करते थे, अपने धर्मरूपी वस्त्र

पर जिन सद्गुणों की नज़रशाही साधुलोग करते हैं वे भव्य होने के साथ ही बहुत कोमल भी हैं। संसार की एक साँस से ही उनका रंग बदरंग हो जायगा, इसी लिए पैफ़नाशस नगरों में जाने से बचता रहा। वह डरता था कि मनुष्यों को देखकर उसका हृदय द्रवित न हो उठे।

वह पगडंडियों से चलता था। संध्या को वायुचुम्बित भाऊ वृक्षों की मरमर उसे सिहरा देती थी और प्रकृति के उस सौन्दर्य को दूर रखने के लिए सिर पर का कन्टोप वह आँखों पर खींच लेता था। छः दिन की यात्रा के बाद वह 'सिलसाइले' नामक स्थान पर पहुँचा। यहाँ नदी एक सँकरी घाटी से, दोनों ओर स्फटिक पर्वतमालाओं से घिरी हुई बहती है। यहाँ मिस्त्र-निवासियों ने शैतानों की पूजा के लिए उनकी मूर्तियाँ बनाई थी। पैफ़नाशस ने एक बृहत् स्फिक्स\* पहाड़ों के बीच बना हुआ देखा। इस भय से कि कहीं उसमें अब भी पैशाचिक विभूतियाँ न हों, पैफ़नाशस ने 'क्रास' का चिह्न बनाया और ईसा का नाम लिया। एक चमगादड़ उम्मी समय उस राक्षसी मूर्ति के एक कान से निकलकर उड़ गया। पैफ़नाशस ने समझा कि उसने उस प्रेतात्मा को वहाँ से भगा दिया है जो युगों से यहाँ रह रहा था। उसका उत्साह बढ़ा, एक पत्थर उठाकर उसने मूर्ति के मुख पर मारा। मूर्ति का चेहरा इतना उदास हो गया कि पैफ़नाशस द्रवीभूत हो उठा। वास्तव में, इस पत्थर के बने हुए मुख पर के अलौकिक विषाद से कठोर से कठोर व्यक्ति विचलित हो उठता। पैफ़नाशस ने उस राक्षस-मूर्ति से कहा—

“ओ प्रेत, तू ईसा का नाम ले। मैं तुझे परमात्मा, ईसा और पवित्र आत्मा के नाम पर आशीर्वाद दूँगा।”

---

• स्फिक्स—एक जीव, जिसका अंग सिंह का और मुख स्त्री का होता है।

उसके ऐसा कहते ही, स्फिंक्स की आँखों से लाल प्रकाश निकला, भारी पलकें हिलीं और पाषाणमुख में मनुष्य-जैसे स्वर में, ईमा का पवित्र नाम साफ़-साफ़ निकला। पैफ़नाशस ने अपना दायाँ हाथ फैलाकर मिल्-साइले की उस राक्षसी मूर्ति को आशीर्वाद दिया।

वह पुनः यात्रा पर चल पड़ा और उपत्यका समाप्त होते ही उसे एक विशाल नगर का ध्वंसावशेष दीख पड़ा, मन्दिरों में जो अब तक किसी तरह खड़े थे। मूर्तियाँ आधारस्तम्भों का काम दे रही थी और सभी-स्त्रियों की शिराकृति से लेकर पशुओं के सींगों तक—की दृष्टियाँ पैफ़नाशस पर दृढ़ होकर जम गईं जिससे वह भय से पीला पड़ गया। इस तरह वह केवल जड़ी-बूटी खाकर सत्रह दिन तक चलता रहा, रात को जंगली बिल्लियों और चूहों के साथ भग्न महलों में पड़ रहता। रात को काँटेदार पूँछोंवाली स्त्रियाँ भी उसे दिखाई पड़ती थी। पैफ़नाशस जानता था कि ये स्त्रियाँ नर्कनिवासिनी हैं और 'क्रास' का चिह्न बना इन्हे भगा देता था।

अठारहवें दिन उसे गाँवों से दूर, अंधड़ से बालू में दबी एक ताड़ की पत्तियों की दयनीय भोपड़ी दीख पड़ी। यह सोचकर कि शायद इसमें कोई पवित्र साधु रहता हो, वह पास गया। दरवाज़ा लगा नहीं था, एक घड़ा, प्याज़ की एक ढेरी और सूखी पत्तियों का बिछावन अन्दर दिखाई दिया।

उसने स्वयं ही कहा—“यह एक तपस्वी का साज-सामान है। साधु नियमानुसार अपनी कुटी से दूर नहीं जाते। मैं जल्दी ही इस व्यक्ति से मिल सकूँगा। मैं उसे शान्तिमय चुम्बन दूँगा जैसा कि पवित्र साधु ऐण्टानी ने साधु पॉल के घर के पास से जाना हुआ उसे तीन बार आलिंगित किया था। हम अमर और सनातन वस्तुओं पर बातचीत करेंगे और

प्रभु, अपने किसी कीए-द्वारा हमारे लिए रोटियाँ भेजेगे जिसे य साधु मुझे खाने को कहेंगे।”

यह सोचते हुए वह कुटी के चारों ओर साधु को खोजने लगा। अभी सी गज भी नहीं गया होगा कि उसने नील नदी के किनारे एक व्यक्ति को, पाँव पर पाँव चढ़ाये, बैठे देखा। आदमी नंगा था, केश और दाढ़ी सन-जैसे सुफेद थे और उसका शरीर गहरे लाल रंग का था ! पैफनाशस समझ गया कि निम्सन्देह ये ही साधु है। उसने साधुओं के प्रथानुसार उसे नमस्कार किया—

‘तुम्हें शान्ति मिले, भाई ! तुम्हें एक दिन स्वर्गसुख प्राप्त हो।’

उस आदमी ने कोई उत्तर नहीं दिया और अचल बना रहा, जैसे कुछ सुना ही नहीं। पैफनाशस ने सोचा, यह मौन उस भावोन्माद का सूचक है जो साधु अक्सर उपभोग करते हैं। वह हाथ जोड़कर और घुटने टंककर उस अपरिचित के पास बैठ गया और मध्या तक इसी तरह प्रार्थना करता रहा। तब भी जब वह व्यक्ति नहीं हिला, तब पैफनाशस ने उससे कहा—

“पिता, यदि तुम समाधि से मुक्त हो गये हो, जिसमें मैंने तुम्हें देखा है तो भगवान् ईसा मसीह के नाम पर मुझे आशीर्वाद दो।”

दूसरे ने बिना सर घुमाये कहा—“अपरिचित ! मैं न तो तुम्हारा मतलब ही समझा और न तो तुम्हारे भगवान् ईसा मसीह को ही जानता हूँ।”

पैफनाशस ने पूछा—“नवियों ने उनके द्वारे में भविष्यवाणी की, शहीदों ने उनका नाम स्वीकार किया, सीज़र ने स्वयं उनकी पूजा की, और अभी थोड़े दिनों पहले मैंने सिलसाइले की राक्षसी मूर्ति से भी उनकी ख्याति स्वीकार करवाई है। क्या यह सम्भव है कि तुम उन्हें नहीं जानते ?”

“मित्र,”—दूसरे ने उत्तर दिया—“यह सम्भव है। यदि विश्व में कुछ भी निश्चित हो सकता है तो यह निश्चित है कि मैं उन्हें नहीं जानता।”

इस व्यक्ति की अस्मभाव्य अनभिज्ञता पर पैफनाशस आश्चर्यचकित रह गया। कहा—“अगर तुम ईसा को नहीं जानते तो तुम्हें अपने कार्यों का कोई फल नहीं मिलेगा और तुम्हें अमरत्व नहीं प्राप्त होगा।”

ब्रूटे ने जवाब दिया—“कर्म करना या कर्म से विरत रहना, दोनों ही व्यर्थ हैं। जीवन और मृत्यु मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखते।”

“क्या करते हो?”—पैफनाशस ने पूछा “तुम अमरत्व नहीं पाना चाहते? किन्तु, क्या तुम साधुओं की तरह इस रेगिस्तान में कुटी में नहीं रहते हो?”

“ऐसा समझा जा सकता है।”

“तुम नगे और हर चीज से वंचित नहीं रहते?”

“ऐसा ही समझा जा सकता है।”

“क्या तुम फल-फूल पर ही जीवननिर्वाह और सन्यास-साधन नहीं कर रहे हो।”

“ऐसा ही समझा जा सकता है।”

“क्या तुमने समस्त सासारिक माया-मोहों को त्याग नहीं दिया है?”

“वास्तव में मैंने उन सब व्यर्थ चीजों को त्याग दिया है जिन्हें लोग पसन्द करते हैं।”

“तो तुम भी मेरी ही तरह एक दीन पवित्र साधु हो। किन्तु तुम मेरी तरह भगवान् के भक्त और स्वर्गीय परमानन्द के इच्छुक नहीं हो। जब तुम ईसा में विश्वास नहीं रखते तब धर्मपरायण क्यों हो? यदि तुम्हें स्वर्गीय सुख की आशा नहीं तो सासारिक सुखों को क्यों छोड़े हुए हो?”

“अपरिचित, मैंने कुछ नहीं छोड़ा है और अपने को यही सोचकर भुलाये हुए हूँ कि मुझे जीवन की एक काफी सन्तोषजनक रीति मालूम हो गई है, यद्यपि सत्य यही है कि न तो यह जीवन अच्छा है और न बुरा। कोई चीज़ अपने तर्ई सम्मानित या लज्जाजनक, उचित या अनुचित, सुखद या दुःखद और अच्छी या बुरी नहीं होती। विचारों से ही वस्तुएँ गुणवती होती हैं। जैसे नमक मास को स्वादयुक्त बनाता है।”

‘तुम्हारे विचार से कोई वस्तु स्थायी नहीं है। उस सत्य को भी तुम अस्वीकार करते हो जिसे मूर्तिवादियों ने खोज निकाला है। तुम कीचड़ में सोये, थके हुए कुत्ते की तरह अज्ञान में पड़े हुए हो।’

“जैसे कुत्ते को तिरस्कृत करना व्यर्थ है वैसे ही दार्शनिकों का भी। हम नहीं जानते कि कुत्ता क्या चीज़ है और न तो हम अपने को ही जानते हैं। हम कुछ नहीं जानते।”

“बूढ़े, तो क्या तुम नास्तिक-सम्प्रदाय के हो ? क्या तुम उन दयनीय मूर्खों में से हो जो काम और विश्राम दोनों को अस्वीकार करते हैं और सूर्य के प्रकाश और रात्रि की छाया में भी भेद नहीं कर सकते ?”

“मेरे दोस्त, मैं सचमुच ही नास्तिक हूँ और उस सम्प्रदाय का हूँ जो तुम्हारे लिए उपहासजनक होते हुए भी मुझे अच्छा लगता है। एक ही वस्तु की विभिन्न आकृतियाँ होती हैं। ‘मेम्फिस’ के सूचीस्तम्भ (पिरामिड) सूर्योदय के समय प्रकाश के कँगूरे-से लगते हैं, संध्या-समय वे जलते हुए आकाश में काले त्रिभुज जैसे जान पड़ते हैं। किन्तु उनकी आन्तरिक वास्तविकता कौन जान सकता है ? बाह्य रूपों की उपेक्षा करते हुए तुम मुझे दोष देते हो जब कि वास्तव में इन बाह्य रूपों को ही मैं पूर्ण सत्य समझता हूँ। सूर्य देखने में मुझे दीप्तिमान् जान पड़ता है, किन्तु उसका स्वभाव मैं नहीं जानता। मैं जानता हूँ कि आग जलाती है, किन्तु

कैसे और क्यों, यह नहीं जानता। मित्र, तुम मुझे व्यर्थ बुग समझते हो, किन्तु विचारों से कुछ आता-जाता नहीं।”

“इस रेगिस्तान में तुम खजूर और प्याज खाकर क्यों रहते हो? इतने कष्ट क्यों उठाते हो? मैं भी इतना ही कष्ट उठाता हूँ और तुम्हारी तरह एकान्त में संयम-साधन भी करता हूँ, किन्तु मेरे ऐसा करने का उद्देश्य ईश्वर को प्रसन्न करना और अमर मुक्ति पाना है। यह उचित उद्देश्य है, एक महान् पुरस्कार की कामना से कष्ट उठाना बुद्धिमानी है। दूसरी ओर, स्वेच्छा से अपने को व्यर्थ कष्ट और यातना में डाल देना पागलपन है। यदि मैं—ओ परमात्मा, मुझे इस निन्दा के लिए क्षमा करो—यदि मैं नबियों की वाणी, ईसा के उदाहरण, देवपुरुषों के कार्य, धर्म-महाओं की आज्ञा और शहीदों के साक्षी-द्वारा प्रकट ईश्वर के उपदेशों पर विश्वास न करना, यदि मैं यह न जानता होता कि आत्मा की स्वस्थता के लिए शारीरिक कष्ट अनिवार्य हैं, यदि मैं तुम्हारी ही तरह पवित्र रहस्यों से अनभिज्ञ होता तो तुरन्त संसार में लौट जाता, धन-प्राप्ति और विलास-वैभव में रहने की चेष्टा करता और दुनिया के आनन्द में पले लोगों से कहता—‘आओ, बच्चियो, आओ मेरे मित्रो, शराब, वशीकरण और सुगंध की नदी बहाओ।’ किन्तु मूर्ख, तुम अपने को समस्त सुविधाओं से वंचित रखते हो, बिना कुछ पाये सब कुछ खोते जाते हो, प्रतिदान की आशा के बिना ही सब कुछ छोड़ते जाते हो और हमारे तपस्वियों का उपहास-जनक अनुकरण करते हो। वैसे ही, जैसे एक धृष्ट बन्दर दीवाल पर रंग पोतकर समझता है कि किसी कुशल चित्रकार की नक़ल कर रहा है। ओ मूर्खराज, आखिर तुम्हारे पास इसका क्या उत्तर है?”

पैफनाशस अत्यन्त आवेश में यह सब कह गया, किन्तु बूढ़ा शान्त रहा और नम्रता से कहा—“दोस्त, कीचड़ में मोनेवाले कुत्ते ओर दुष्ट बन्दर के उत्तर से क्या लाभ होगा?”

पैफनाशस का एकमात्र उद्देश्य भगवान् का यशगान था। उसका क्रोध दूर हो गया। उसने नम्र होकर कहा—“मुझे क्षमा करो भाई, यदि सत्य के आवेग में मैं सीमा के बाहर जा पड़ा होऊँ। ईश्वर साक्षी है, मुझे तुमसे नहीं प्रत्युत तुम्हारी भूलों से घृणा है। तुम्हें अन्धकार म भटकते देखकर मुझे दुःख होता है, क्योंकि समीह के नाम पर मैं तुम्हें ध्या कर रहा हूँ और तुम्हारी मुक्ति के लिए मेरा हृदय चिन्तित है। बोलो, मुझे अपने तर्क बताओ। मैं उन्हें जानने के लिए व्यग्र हूँ ताकि उनका खण्डन कर सकूँ।”

बृद्ध ने धीरे से उत्तर दिया—“बोलना या शान्त रहना मेरे लिए एक ममान है। अपने तर्क मैं तुम्हें बताऊँगा। तुम्हारे तर्क मैं नहीं जानना चाहता क्योंकि तुमसे मुझे कोई भी दिलचस्पी नहीं है। तुम्हारी प्रमत्तता या दुःख का भी मुझे खयाल नहीं है और तुम्हारे विचारों की ओर मैं भी मैं एकदम उदासीन हूँ। मैं तुमसे घृणा या प्रेम करूँ भी तो कैसे? विराग और गहानुभूति दोनों जानियों के लिए अनुचित है। लेकिन तुम पूछते हो इसलिए बतलाता हूँ। मेरा नाम टिमाक्लीज है और मैं कौस में व्यापारी माता-पिता के कुल में उत्पन्न हुआ था। मेरे पिता नौकाओं का व्यापार करते थे। अपनी योग्यता में वे बहुत कुल मिकन्दर महान् से मिलते-जुलते थे। पर लोभी उतने नहीं थे। संक्षेप में, वे एक साधारण व्यक्ति थे। मेरे दो भाई और थे जो पिता जी की ही तरह नौका-व्यापारी हुए। मैंने अपना ध्यान कला की ओर लगाया। मेरे सबसे बड़े भाई को पिता ने एक कोरियानिवासिनी स्त्री टिमीना से ब्याह

करने को बाध्य किया। वह भाई की रुचि के सर्वथा विपरीत थी और वे उसके साथ सदैव अस्थिरचित्त बने रहते थे। टिमिसा ने मेरे सबसे छोटे भाई के हृदय में पापपूर्ण प्रेम की ऐसी ज्वाला लगा दी जो आगे चलकर भयंकर हो उठी। किन्तु वह दोनों से घृणा करती थी। वह एक वंशीवाले को प्यार करती थी और गत को उससे मिलनी। एक दिन सुबह जाते समय वह अपनी टोपी छोड़ गया जो उत्सवों में पहनता था। उसे पाकर मेरे भाइयों ने उसे मार डालने का निश्चय किया। दूसरे दिन, समस्त अनुरोध और रुदन के बावजूद भी, उसे कोंडों से पीट-पीट कर मार डाला। मेरी भावज निराशा में अपनी संज्ञा खो बैठी, और ये तीनों नराधम जगली जानवरों की तरह, भेड़ियों की तरह गरजते, क्रोध में मुँह में फेन फेकते, जमीन पर दृष्टि गड़ाये, कौड़ियाँ फेकते हुए लडको के शोरोगुल के बीच, अपने पागलपन में कौस में इधर-उधर फिरने लगे। एक दिन वे मर गये और पिता ने उन्हें दफना दिया। थोड़े ही दिनों बाद, उनका पेट भी खराब हो गया, वे कुछ खा-पी नहीं सकते थे, यद्यपि एशिया के समस्त बाजारों की खाद्य सामग्री खरीद लेने भर को धन उनके पास था। अपनी सम्पत्ति दुःख-सहिन वे मुझे दे गये। मैंने उसे यात्रा में खर्च कर दिया। मैं इटली, ग्रीस और अफ्रीका घूमा पर मुझे कोई विज्ञ और प्रसन्न न दीख पड़ा। मैंने एथेन्स और अलेक्जेंड्रिया में दर्शन का अध्ययन किया और भयंकर तर्क-वितर्कों से स्तम्भित रह गया। अन्त में, जब मैं सुदूर भारत-वर्ष तक गया, मैंने गंगा के किनारे एक नग्न व्यक्ति को देखा जो वहाँ, पत्थी मारे, तीस वरसों से अचल बैठा था। उसके कृश तन के चारों ओर दीमक लग गये थे और उसकी जटा में चिड़ियों ने घोंसला बना रक्खा था। किन्तु वह जीवित था। उसे देखकर मुझे टिमिसा, वंशीवाला, अपने दोनों भाई और अपने पिता याद आगये और मैं समझ गया कि यह भारतीय

अवश्य विज्ञ है। मैंने सोचा—‘लोग इसी कारण दुःखी रहते हैं कि जिसे वे लाभ समझते हैं उससे वंचित रहते हैं या उस लाभ की प्राप्ति के बाद उसके खोने के डर से कष्ट उठाने हैं या जिसे वे गलत समझते हैं उसे ही उन्हें सहना होता है। इस तरह के समस्त विश्वास, भावनाओं को दबा दो, सब बुराइयाँ दूर हो जायँगी।’ इसी कारण, उस भारतीय के आदर्श के अनुसार, मैंने निश्चय किया कि किसी वस्तु की कामना नहीं करूँगा, सांसारिक वस्तुओं से एकदम अलग रहूँगा और एकान्त और स्थिर जीवन व्यतीत करूँगा।”

पैफनाशम ने ध्यान से बूढ़े की कहानी सुनी। उसने उत्तर दिया—  
 “टिमाक्लीज़, मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारी बातें बिल्कुल गलत नहीं हैं। उदाहरण के लिए, सांसारिक वस्तुओं को त्याग देना बुद्धिमानी है किन्तु अमरपद को ठुकराना और इस तरह ईश्वरीय कोष अपने ऊपर ओढ़ लेना नादाना है। मुझे तुम्हारी अनभिज्ञता पर दुःख है टिमाक्लीज़ ! और मैं तुम्हें सत्य के नाम पर आदेश करूँगा ताकि तुम परमेश्वर की सत्ता मानकर पुत्र की तरह ही उसकी आज्ञा पर चलो।”

किन्तु टिमाक्लीज़ ने बात काट दी—“अपरिचित, अपने मतों की व्याख्या करने से बाज़ आओ और मुझे अपने विचारों से सम्मत करने की चेष्टा न करो। वहस निष्फल है। कोई मत न रखना ही मेरा मत है। यदि मैं लोगों की कृपा से वंचित रह सकूँ तो मैं दुःख और चिन्ताओं से मुक्त रहता हूँ। अपने रास्ते जाओ और मुझे मेरे उदासीनता-सागर से निकालने की चेष्टा न करो जिसमें जीवन के कठोर श्रम के बाद मैं सुन्दर स्नान कर रहा हूँ।”

पैफनाशस ने धर्म के सिद्धान्तों का गूढ़ अध्ययन किया था। मानव-हृदयों की अपनी जानकारी-द्वारा उसने समझ लिया कि बूढ़े टिमाक्लीज़

पर ईश्वरीय कृपा नहीं है और उसकी आत्मा की मुक्ति का दिन अभी नहीं आया है। उपदेश कही कलंक या अपवाद का रूप न ले ले, इस भय से उसने कोई उत्तर नहीं दिया। अकसर ऐसा होता है कि अविश्वामी व्यक्तियों से झगड़ा उन्हें परिवर्तित करने के बजाय अपराध की ओर प्रेरित करता है। इस कारण, जिनके पास ज्ञान है उन्हें सावधानी से उसका प्रचार करना चाहिए !

उसने कहा—“अभाग टिमाक्लीज़, विदा होता हूँ।”

गहरी साँस लेकर वह रात को ही अपनी पवित्र यात्रा पर चल पड़ा।

प्रातःकाल उसने नदी-किनारे जलपक्षियों को अचल एक पाँव पर खड़े देखा। नदी में उनकी गुलाबी और पीली गर्दनें प्रतिबिम्बित हो रही थीं। नदी के किनारे दूर तक बेट-वृक्ष का पर्णसमूह फैला हुआ था। निर्मल आकाश में सारस त्रिभुजाकार उड़ रहे थे और नरकुलों के बीच में अलक्षित बगुलों का तीव्र स्वर गूँज रहा था।

जहाँ तक दृष्टि जाती थी, नदी की विस्तृत हरित लहरें उछल रही थी, जिन पर पक्षियों के पंखों-जैसे नावों के पाल इधर-उधर उड़ रहे थे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर किनारों पर श्वेत भवन खड़े थे, जिनके चारों ओर हलका धुआँ छाया हुआ था और खजूर वृक्षों से लदे हुए द्वीपों की छाया में फल-फूलों की ओश से बतख, हंसिनी, लालपक्षी और अन्य चिड़ियाँ चहचहाती हुई निकल रही थी। बाईं ओर हरी-भरी घाटी तक फैले हुए मैदान और बाग हर्ष से नाच रहे थे। पके हुए बाल सूर्य के प्रकाश में चमक रहे थे और पृथ्वी की उर्वरता सुगंधित रजकणों के रूप में वाष्प बनकर उड़ रही थी।

पैनाशस घुटने टेककर बैठ गया और बोला—“मेरी यात्रा को मंगलमय करनेवाले परमात्मा को धन्यवाद है। अंजीर वृक्षों के ऊपर प्रातःकालीन

प्रकाश बिखेरनेवाले ईश्वर ! ताया की आत्मा पर भी अपनी कृपा बरसाओ, जिसे तमने इस मैदान के फूलों और वृक्षों की ही तरह प्रेम से निर्मित किया है । अपनी छाया में इसे भी स्वर्गीय जेरूसलेम में खिलनेवाला गुणशाली गुलाब बना दो ।"

जब भी वह किसी वृक्ष को नवयीवन में देखता अथवा किसी सुन्दर पक्षी को देखता, वह ताया की बात मोचने लगता । इस तरह नदी के बायें किनारे के उपजाऊ और आनाद गाँवों में होता हुआ कुछ दिनों में वह अलेक्जेंड्रिया पहुँचा जिसे ग्रीसनिवासियों ने सुन्दर और स्वर्णमय उपनाम दे रक्खा था । मूर्प्रान्त के एक घटे बाद उसने प्रातःकाल की गुलाबी आभा में प्रकाशित एक पर्वत-शिखर पर इस विस्तृत नगर को देखा जिसकी छत्रे प्रकाश में चमक रही थी । वह रुक गया और दोनों हाथ वक्षःस्थल पर बाँध, मोचने लगा :—

"यही वह आनन्दमय स्थान है जहाँ मैं 'पाप' में पैदा हुआ था । जहाँ की विषाक्त हवा में मैं साँस लेता था, जहाँ के आनन्दमागर पर मैं सामूद्रिक अप्सराओं का संगीत सुनता था ! यही मेरा दुलार भरा पालना है, दुनिया की निगाह में यही मेरा घर है । लोगों की दृष्टि में यह फूलों का हिडोला और प्रतिभा का घर है ! अलेक्जेंड्रिया, मा रूप में तुझे प्रिय समझना बच्चों के लिए स्वाभाविक है और मैं इसी वैभव-सज्जित वक्षःस्थल पर पालित-पोषित हुआ हूँ । तपस्वी प्रकृति में घृणा करता है, ईश्वर दर्शनवादी आत्मप्रकाश की अवहेलना करता है, सच्चा ईसाई अपने मानवीय गृह को विदेश समझता है और साधु दुनिया से दूर रहता है । अलेक्जेंड्रिया ! मैंने तुम्हें प्यार करना छोड़ दिया है । मैं तुमसे घृणा करता हूँ । तुम्हारे धन, तुम्हारे विज्ञान, तुम्हारी सभ्यता और मोन्दर्य को मैं घृणा करता हूँ । शैतानों के घर, मैं तुम्हें अभिशाप देता हूँ । काफ़िरो के घृणित आश्रयस्थल !

नास्तिकों के अधिकृत स्थान ! मैं तुम्हें शायद देता हूँ। हमारे धर्म-पिता एन्टानी को जो गहन निर्जन में निकलकर नास्तिकों के इस गढ़ में आत्मदर्शियों और शहीदों के धर्म को दृढ़ करने आये थे, तुम्हो ने राह दिखाई थी ओ ईश्वरपुत्र ! जीवन के देवदूत, ओ जिवरील ! मेरे मामने आओ और अपने पाँखों के आघात से उस विपावन वायु को मुगधित कर दो, जिसमें मैं इस दुनिया के अज्ञान विलासियों के बीच भाँस लेने जा रहा हूँ।”

इस प्रार्थना के बाद वह पुनः यात्रा पर चल पड़ा। वह मठप-द्वार से नगर में प्रविष्ट हुआ। पत्थर का यह द्वार गान से खड़ा था। इसकी छाया में कुछ हतभागों आने-जानेवालों के हाथ नीबू और अंजीर बेच रहे थे या रो-रोकर पैसे भीख माँग रहे थे।

वहाँ झुककर घेंठी हुई एक जीर्ण-जीर्ण बूढ़िया ने साधु का लबादा पकड़कर झुमने हुए कहा—“ओ ईश्वरभक्त, मुझे आशीर्वाद दो; ताकि भगवान् भी मुझे आशीर्वाद दे। मैंने इस दुनिया में बहुत कष्ट उठाये हैं और परलोक में सुख चाहती हूँ। तुम भगवान् के भेजे हुए हो। पवित्र पुरुष, तुम्हारे चरण की धूलि विशुद्ध स्वर्ण में भी अधिक मूल्यवान् है।”

“परमात्मा को धन्यवाद है।”—पैफताशस ने कहा और अधखुले हाथों से क्रास उसके मस्तक पर छुला दिया।

अभी वह मुश्किल से सड़क पर बीस कदम गया होगा कि लड़कों की एक भीड़ उस पर चिल्लाती हुई पत्थर फेंकने लगी—“ओ दुष्ट साधु ! इसे देखो ! यह कौए से भी काला है, बकरी की दाढ़ी से भी बड़ी इसकी दाढ़ी है। निडियों को डराने के लिए इसे मैदान में होआ बजाकर क्यों न लटका दिया जाय ? नहीं, नहीं, मेरे के फूँको पर यह नाहक ओंठ बरसा देगा। यह दुर्भाग्य ले आयेगा। इसका मांस कौओं को खिला दो।”

इन अन्तिम शब्दों के साथ ही उस पर फिर पत्थर बरस पड़े।

पैफनाशस बुदबुदाया—“भगवान् इन बच्चों पर कृपा करें।”

रास्ता चलते हुए उसने सोचा—“उस बूढ़ी ने मेरा सम्मान किया और लड़के मुझे घृणा करते हैं। इस तरह एक ही वस्तु के विषय में वे लोग दो विचार रखते हैं जो अपने निर्णयों में अनिश्चित रहते हैं और भूल कर सकते हैं। यह मानना होगा कि मिथ्यावादी बूढ़ा टिमाक्लीज ज्ञानशून्य नहीं है। अपने अज्ञान के कारण वह समझता है कि वह प्रकाश में वंचित है। संसार की प्रत्येक वस्तु मरीचिका और मिट्टी की तरह नश्वर है। केवल भगवान् में ही स्थिरता और अमरता है।”

वह नेजी में नगर पार कर गया। दस वर्षों की अनुपस्थिति के बाद भी यहाँ की एक एक ईंट वह पहचान रहा था और वे सब उसे कलंकित जान पड़ीं जिनसे उसे एक न एक पाप की याद आ जानी थी। वह कठोरता के साथ अपने नंगे पाँवों में सड़क के पत्थरों को रौंदने, कुचलने लगा और उन पर अपने क्षतविक्षत एड़ियों का रक्त देखकर प्रसन्न हो उठा। मरगपिस के मंदिर के भव्य द्वार मंडप बाईं ओर छोड़ते हुए वह एक मुगन्धि में अलमिन सड़क में चलने लगा, जिसके किनारे भव्य देहाती घर बने हुए थे। देवदारु, तारपीन और अन्य वृक्ष लाल कार्निस और सुनहरे गुम्बदों के ऊपर शिर उठाये खड़े थे। अधखुले द्वारों से उसने संगमरमर के गमलों में पीतल की मूर्तियाँ और हौजों में पानी बहते देखा। केवल एक दृग्गत वंशीध्वनि के और कोई शब्द इन मधुर निर्जन स्थानों की शान्ति भंग नहीं कर रहा था। पैफनाशस एक छोटे किन्तु सुडौल घर के सामने, जिनके खम्भे युवती लड़कियों की भाँति मनोहर थे, ठहर गया। सुप्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिकों को ब्रांज की बनी वस्तु मूर्तियों से यह घर सजा हुआ था। उनमें उसने प्लेटो, सुकरान, अरस्तू, एपिक्यूरस और जिनो की

मूर्तियाँ देखी। द्वार खटखटाने के बाद, प्रतीक्षा करते हुए वह सोचने लगा—  
“इन भ्रमपूर्ण विचारकों की यशवृद्धि मूर्तियों द्वारा कराना व्यर्थ है। उनके असत्यां की पील खुल गई, उनकी आत्मायें नर्क में पड़ी हैं और प्लेटो, जिसकी वाह-चातुरी से विश्व स्तम्भित था, आज पिशाचों के साथ तर्क-विनक कर रहा है।”

एक दाम ने द्वार खोला और एक साधु को नंगेपाँव बरसाती में खड़े देखकर कर्कश स्वर में कहा—कहीं और जाकर भीख माँग। भाग जा, नहीं तो डंडे मारकर खदेड़ दूँगा।

पैफनाशम ने उत्तर दिया—“भारी, मुझे केवल अपने स्वामी निशियस से मिला दो, यही चाहता हूँ।”

गुलाम ने और क्रोधित होकर कहा—“मेरे स्वामी तुम्हारे जैसे कुत्तों से नहीं मिला करते।”

पैफनाशम ने जवाब दिया—“जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो बेटा ! अपने स्वामी से केवल यह कह दो कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।”

दाम गुस्मे से चीख पड़ा—“भाग जा।”

उसने अपनी छड़ी उठाकर पैफनाशम के मुँह पर मारी और पैफनाशम ने, छाती पर हाथ बाँध, अविचल भाव से वह चोट सह ली फिर शान्त भाव से कहा—“मैं याचना करता हूँ मेरे पुत्र, जो कहता हूँ वह कर दो।”

आश्चर्यविस्मित दाम ने सोचा, ‘यह कौन व्यक्ति है जो मार से भी नहीं डरता’, और अपने स्वामी से कहने चला गया।

निशियस स्नान कर रहा था। वह सुन्दर हँसमुख व्यक्ति था। उसके मुख पर मधुर व्यंग्य का भाव था। साधु को अपनी ओर आता देख वह उठा और हाथ बढ़ाते हुए बोला—“तुम हो पैफनाशम, मेरे सहपाठी मित्र और बन्धु, मैं तुम्हें अब भी पहचान सकता हूँ; यद्यपि आदमी की अपेक्षा

तुम जंगली जानवर ही अधिक लगते हो। आओ, मेरे गले से लग जाओ ! तुम्हें याद है जब हम व्याकरण, अलंकार और दर्शन साथ साथ पढ़ा करते थे ? तब भी तुम्हारा स्वभाव मलिन और उद्धत था; पर मैं तुम्हें तुम्हारी सत्यवादिता के कारण प्यार करता था।

“तुम्हारा अविश्वामी होना भी आश्चर्य की बात न थी। तुम चतुर कम थे पर तुम्हारी दानशीलता अपार थी। धन और जीवन दोनों का मूल्य तुम्हारे लिए कुछ नहीं था। तुम्हारे में एक विचित्र प्रतिभा थी, एक अद्भुत साहस था जो मुझे बहुत प्रिय था। दम वरस बाद पुनः तुम्हें देखकर मुझे मच ही आनन्द हो रहा है। तुमने बन को छोड़ दिया। ईसाई-मत के अन्यविश्वासी को त्यागकर पुनः अपने प्राचीन जीवन में आ रहे हो। यह सचमुच ही एक ऐतिहासिक दिन है।”

यह कहकर उसने अपनी दामियों की ओर देखकर आज्ञा दी—  
“क्रोवाइल और मायस्टेल, मेरे प्यारे अतिथि के हाथ-पाँव और दाढ़ी सुगंध से सुरभित करो।”

युवनियाँ मुस्कराई और सुराही, सुगंध की शीशियाँ और आईना ले आईं। पैफनायम ने कठोर मुद्रा से उन्हें रोक दिया और अपनी आँखें नीची कर ली ताकि उन नग्न युवनियों को देख न सके। निशियस ने उसके लिए मसनद आदि मँगवा दी और तरह तरह के भोजन और शराब खाने-पीने को दीं जिन्हें उसने घृणापूर्वक अस्वीकार कर दिया। उसने कहा—  
“निशियस, जिसे तुम भूल से ईसाई-मत का अन्यविश्वास कह रहे हो और जो वास्तव में महासत्य है, उसे मैंने त्यागा नहीं है। पहले केवल शब्द था, शब्द ईश्वर के साथ था और शब्द ही ईश्वर था। वही सब चीजों का निर्माण करता था, जो कुछ भी बना वह उसके बिना नहीं बना। उसी में जीवन था और मानवजाति का प्रकाश वही जीवन था।”

सुगंधित चोगा पहनते हुए निशियस ने उत्तर दिया—“प्रिय पैफनाशस ! क्या तुम समझते हो कि तुम मुझे इन व्यर्थ शृङ्खलाहीन शब्दजालों से चकित कर दोगे ? क्या यह भूल गये कि मैं स्वयं भी थोड़ा-बहुत दार्शनिक हूँ ? क्या तुम समझते हो कि तुम मुझे एमीलियस के वस्त्र में फाड़े हुए कुछ टुकड़ों से संतोष दे दोगे जब कि स्वयं एमीलियस, पॉरफ़ेरियस और प्लेटो, अपनी समस्त महत्ता के बावजूद भी, मुझे संतोष नहीं दे सकते ? सन्तों के बनाये हुए सिद्धान्त केवल मनुष्यों की सरलहृदयता के मनोरंजन के लिए बने हैं। हमें उन पर उम्मीद नहीं रहनी चाहिए जैसे हम और हास्य-कथाओं पर हँस देने हैं।” वह अपने अतिथि का हाथ पकड़कर एक बड़े कमरे में ले गया, जहाँ टोकरियों में भोजन की हजारों गड़्डियाँ रक्खी हुई थी। उसने कहा—“यह मेरा पुस्तकालय है। यहाँ दार्शनिकों द्वारा विश्व को सृष्टि का रहस्य समझाने के लिए बनाये गये सिद्धान्तों का छोटा-सा संग्रह है। अतुल वैभवशाली मेराप्यूम में भी इतना बड़ा संग्रह नहीं है। किन्तु दुःख है कि यह सब केवल रोगी के स्वप्न-से है।”

उसने अपने अतिथि को हाथीदाँत की एक कुर्सी पर वरबस बिठाया और स्वयं भी बैठ गया। पुस्तकालय की पुस्तकों पर पैफनाशस ने एक दुःसभरी दृष्टि फेरी और कहा—“इन्हें जला देना चाहिए।”

निशियस ने उत्तर दिया—“हे भगवान्, इससे बड़ी हानि होगी ! कभी कभी इन बीमारों के स्वप्न बड़े मनोरंजक होते हैं। एक बात और है। यदि लोगों के सब स्वप्नों और कल्पनाओं को नष्ट कर दिया जाय तो दुनिया में कोई रस नहीं रह जायगा और हम सब दुःखप्रद शैथिल्य में निमग्न हो जायेंगे।”

पैफनाशस ने उम्मी की बात को पकड़कर कहा—“यह सत्य है कि काफ़िरों के सिद्धान्त केवल कोरे स्वप्न ही हैं। किन्तु सत्यरूप भगवान्

ने चमत्कारों द्वारा अपने को लोगों के समक्ष प्रकट किया ; वह शरीर धारण करके हमारे साथ रहा ।”

निशियस ने उत्तर दिया—“ईश्वर ने शरीर धारण किया, यह तुमन अच्छी बात कही। भगवान्, जो वस्तुजगत् में सोचता है, कर्म करता है, बोलता है और विचरण करता है, वह मनुष्य ही है। इस नये जूपिटर में लोग विश्वास करेंगे, इसकी आशा तुम कैसे कर सकते हो ? जब पेरीक्लीज के समय भी एथेंस के वे मूर्ख अपने जूपिटर पर विश्वास नहीं कर सके। खैर, इस पचड़े को छोड़ो। तुम भगवान् और उसके भिन्न रूपों पर बहस करने तो नहीं आये हो ? बतलाओ यदि मेरे योग्य कोई सेवा हो।”

एंटीनोय के पुरोहित ने उत्तर दिया—“मुझे एक ऐसा ही सुवासित चोगा उधार दो जैसा पहने हुए हो। साथ ही सुनहरे चप्पल और एक शीशी तैल दो ताकि मैं अपनी दाढ़ी और केश तर कर सकूँ। मुझे एक हजार स्वर्णमुद्राओं की भी आवश्यकता है। पुरानी मित्रता के नाते और भगवान् के लिए मैं तुमसे यही सहायता माँगने आया हूँ।”

निशियस ने दासियों से अपना बहुमूल्य चोगा मँगाया, उस पर एशियाई ढंग से फूलों और पशुओं के चित्र बने हुए थे। दोनों दासियाँ उसे खोलकर उसका भड़कीला रंग प्रकट करने लगीं और प्रतीक्षा करने लगीं कि पैफ़नाशस अपना सिर से पाँव तक ढँका लबादा उतार दे। पर साधु ने कहा कि अपना चोगा उतारने के बजाय वह अपनी खाल उतार दे सकता है। दासियों ने वह कपड़ा नीचे ही पहना दिया। दासी होते हुए भी वे युवतियाँ सुन्दरी थीं और तभी पुरुषों से वे भय नहीं खाती थीं। इस विचित्र बाने में पैफ़नाशस को देखकर वे हँसने लगीं। शीशा उसके सामने करते हुए क्रोबाइल ने उसे अपना प्यारा सामन्त कहा और मायरनेल ने उसकी दाढ़ी खींची। किन्तु पैफ़नाशस ईश्वरार्थना कर रहा था,

उसने उन्हें देखा तक नहीं। मुनहरी चप्पलें पाँवों में डाल और भुद्राओं की थैली कमर में बाँध उसने अपनी ओर देखकर मुस्कराते हुए निशियस से कहा—“तुम मेरे सम्बन्ध में कुछ गलत खयाल न करना। मैं इस चोगे, थैली और चप्पलों का अच्छा ही उपयोग करूँगा।”

निशियस ने उत्तर दिया—“प्यारे बन्धु, मैं कुछ बुरा खयाल नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ, मनुष्य में कुछ अच्छा या बुरा करने की क्षमता ही नहीं है। अच्छा या बुरा केवल विचारों पर मुनहसिर है। तपस्वियों के पास कर्म करने के लिए केवल नियम और स्वभाव होते हैं। मैं अलेक्जेंड्रिया में प्रचलित व्यवहारों को पूर्ण रूप से मानता हूँ और इसी लिए मैं एक भद्र पुरुष समझा जाता हूँ। जाओ मित्र, प्रसन्न रहो।”

पैक्रनाशस ने सोचा कि इससे अपना मन्तव्य बतला देना चाहिए। उसने कहा—“तुम ताया को जानते हो जो यहाँ के थियेटर में अभिनय करती है?”

निशियस ने उत्तर दिया—“वह रूपवती है और कोई ज़माना था जब मैं उसे प्यार करता था। मैंने अपनी एक मिल और दो खेन उसके लिए बेच दिये थे और उसके सम्मान में कविताओं की तीन पुस्तकें रच डाली थी। निःसन्देह सौन्दर्य संसार की सबसे शक्तिशाली वस्तु है और यदि हम सदैव सुन्दर बने रह सकते तो हमें दार्शनिकों के ईश्वरीय शब्द, जीव, माया, मोह और अन्य कल्पित स्वप्नों की तनिक भी चिन्ता न होती। लेकिन, यह देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है पैक्रनाशस, कि तुम अपने मठों को छोड़कर ताया की बातें करने आये हो।”

यह कहकर निशियस ने ठण्डी साँस ली। पैक्रनाशस ने चकित नेत्रों से उसे देखा, वह समझ नहीं सका कि कोई अपना पाप इतने

स्पष्ट रूप से कैसे स्वीकार कर सकता है। उसे आशा थी, धरती फट जायगी और उसमें से अग्निलालें निकलकर उसे खा जायँगी। लेकिन पृथ्वी स्थिर रही और निशियस, हाथ पर सिर रखे, शान्त-भाव से अपने गन योवन की स्मृतियों पर मुस्कराता रहा।

“निशियस, ईश्वर की सहायता से इन ताया को घृणित सांसारिक प्रेम से अलग हटाकर प्रभु मसीह की सेवा में लगा देना ही मेरा उद्देश्य है। यदि उस पवित्र आत्मा ने मेरा साथ नहीं छोड़ा, तो ताया आज ही यह नगर छोड़ देगी और भिक्षुणियों के किसी मठ में प्रविष्ट हो जायगी।”

निशियस ने कहा—“देवी ‘वीनस’ \* को रुष्ट न करो। वे अपूर्व शक्तिमती देवी हैं। यदि तुम उनके सर्वोत्तम पुजारी को ले जाओगे तो वे तुम पर अवश्य रुष्ट होंगी।”

“भगवान् मेरी रक्षा करेंगे,”—पैफनाशस ने कहा—“तुम्हारे हृदय को भी वे प्रकाशित करेंगे ताकि तुम उस नरक से निकल आओ जिसमें डूब रहे हो।”

वह बाहर निकल गया, किन्तु निशियस भी पीछे पीछे गया। द्वार के समीप उसके पास आकर कंधे पर हाथ रख दिये और कान में कहा—“वीनस से भय खाओ, वह भयंकर प्रतिशोध लेती हैं।”

पैफनाशस ने इस चेतावनी को तुच्छ समझा और बिना सिर घुमाये बाहर निकल गया। निशियस से जो बातें हुई थीं, उससे उसके मन में घृणा उपजी थी, किन्तु उसके पूर्व मित्र ने ताया को प्यार किया है, यह

विचार तो बिल्कुल असह्य था। उसे ऐसा लगा कि इस स्त्री के साथ किया गया 'पाप' अन्य पापों से कहीं अधिक घृणित है। उसके मन में भयंकर वैमनस्य का भाव उठा और आज से वह निशियस से घृणा करने लगा। पतित कर्मों से उसने सदा ही घृणा की थी किन्तु आज से पूर्व यह पाप उसे इतना अधिक नारकीय कभी न लगा था, प्रभु ममीह के क्रोध और देवदत्तों के दुःख में उसने इतना भाग कभी न लिया था।

ताया को इन विलासियों के बीच से निकाल लेने की उसकी आकांक्षा और भी प्रबल हो उठी। उस अभिनेत्री को देखने और मुक्त करने की वह कामना करने लगा। इस स्त्री से मिलने के लिए दोपहर भर रुकना आवश्यक था। अभी सबेरा मुश्किल से ही बीता था कि पैफनाशस नगर की प्रभुत्व सड़कों पर फिरने लगा। यात्रा में कुछ न खाने का उसने निश्चय कर लिया था ताकि जिस कृपा के लिए उसने भगवान् से प्रार्थना की है वह उसे सफलतापूर्वक ग्रहण कर सके। अपनी पीड़ित आत्मा के कारण वह नगर के किसी चर्च में भी नहीं गया। वह जानता था कि उन्हें परमात्मा का अस्तित्व तक न माननेवाले नास्तिकों ने अपवित्र कर रक्खा है। वास्तव में इन धर्मविरोधियों ने, जो पूर्व के सम्राट् के आश्रित हैं, पादरी एटानाशियस को अपने धार्मिक अधिकारों से च्युत कर दिया और अलेक्जेंड्रिया के ईसाइयों को भयभीत कर रक्खा है।

वह निरुद्देश्य चलने लगा, कभी कभी दीनभाव से आँखें पृथ्वी की ओर झुका लेता और कभी उल्लास से भर, आँखें ऊपर की ओर कर देता था। कुछ देर इधर-उधर घूम लेने पर वह एक बन्दरगाह पर पहुँचा। बन्दरगाह में अगणित काले काले जलयान खड़े थे और नीला सागर क्षितिज-तट के पास मुस्करा रहा था। एक नौका ने, जिस पर आगे एक

मिरेड\* का चित्र बना हुआ था, अभी लंगर उठाया था । माभी नाव खेते खेते गाते जा रहे थे और शीघ्र ही वह श्वेत सागरकन्या, जिस पर आर्द्र जलकण छितरा रहे थे, साधु को भागती हुई आकृति-सी लगने लगी । वह नोका चालक की सहायता से बन्दरगाह के संकीर्ण राह से निकलकर खुले समुद्र में पहुँच गई और अपने पीछे फेन की भारी लकीर-सी छोड़ती गई ।

पैफनाशस ने सोचा—“मैंने भी एक बार गाते हुए संसार-मागर में यात्रा करनी चाही थी पर मुझे शीघ्र ही अपनी भूल मालूम हो गई, रूपसी का जादू मुझ पर न चल सका ।”

यह सोचता हुआ वह रस्सियों की एक गंडुरी पर बैठ गया और उसे नींद आ गई । नींद में उसे एक स्वप्न दिखाई दिया । उसे एक तीव्र आवाज सुनाई पड़ी और आकाश का रंग लाल हो गया । वह समझ गया कि प्रलय समीप है । वह सम्पूर्ण हृदय से ईश-प्रार्थना करने लगा । उसी समय उसने एक भयंकर जन्तु अपनी ओर आते देखा जिसके माथे पर प्रकाश का एक ‘क्रास’ लगा हुआ था । वह सिलसाइले की वही राक्षसी मूर्ति थी । पशु ने उसे दाँतों से पकड़ कर उठा लिया और बिना चोट पहुँचाये, उसी तरह मुँह में लटकाये ले चला जैसे बिल्ली अपने बच्चों को ले जाती है । इस दशा में पैफनाशस ने कई राज्य पार किये, रास्ते की नदियों और पहाड़ों को पार किया और अन्त में एक निर्जन स्थान पर पहुँचा जहाँ डरावने पहाड़ और जलती हुई राख के ढेर एकत्र थे । पृथ्वी अपनी कई दरारों से आग की लपटें उगल रही थी । पशु ने पैफनाशस को घीरे से पृथ्वी पर रख दिया और कहा—‘देखो ।’

पैफनाशस ने खोह के किनारे से झुककर देखा कि आग की एक नदी धरती के अन्तस्तल से होती हुई काले पहाड़ों के बीच बह रही है। वहाँ तीव्र प्रकाश में शैतान मृत आत्माओं को यातना पहुँचा रहे थे। इन आत्माओं के शरीर अभी वैसे ही थे जैसे मरने के समय थे और उनके वस्त्रों के टुकड़े भी ज्यों के त्यों उनके शरीरों पर थे। यातना के होते हुए भी वे सुखी लगते थे। इनमें से एक लम्बे और गोरे रंग के पुरुष की आत्मा, जिसके माथे पर एक पट्टा और हाथ में एक दंड था, आँखें बन्द किये जा रही थी। उसकी आवाज़ से मरुभूमि में भी मधुरता लहरा रही थी और वह देवता और वीरों की गाथाये गा रही थी। छोटे और हरे रंग के पिशाच उसके ओठों और गले को तप्त लोहे के सीखचों से छेद रहे थे। 'होमर' की यह प्रतिच्छाया फिर भी गाये जा रही थी। पास ही चेंदुला अनाक्ज़ागोरस धूल में अपने परकाल से आकृतियाँ खींच रहा था। एक शैतान उस सन्त के कानों में खीलता हुआ तेल डाल रहा था पर उसके चिन्तन में इससे कोई बिघ्न न पड़ना था। पैफनाशस ने उस आग की नदी के मलिन किनारे पर कुछ आदमियों को पढ़ते हुए, बातें करते हुए और टहलते भी देखा, जैसे यूनानी पाठशालाओं में गुरु-शिष्य वृक्षों की छाया में किया करते थे। सबसे अलग खड़ा बूढ़ा टिमाक्लीज़ अस्वीकृति में सिर हिला रहा था, उस नरक का एक दूत उसकी आँखों के सामने एक मशाल हिला रहा था पर टिमाक्लीज़ कुछ भी नहीं देख रहा था।

इस दृश्य से आश्चर्यचकित हो पैफनाशस ने उस जन्तु की ओर देखा।

वह लुप्त हो गया था और उसके स्थान पर एक नक्राबपोश स्त्री खड़ी थी। उसने कहा—

“अच्छी तरह देखो और समझो। अपने विकट दुराग्रह के कारण ये पतित नरक में भी उन्हीं भ्रमों के शिकार बने हुए हैं जो धरती पर भी इन्हें सत्पथ से डिगाते रहते थे। मृत्यु ने भी इनके विचारों को नहीं बदला। यह स्पष्ट है कि परमात्मा के दर्शन के लिए मर जाना ही यथेष्ट नहीं है। मनुष्य होकर भी जिन्होंने सत्य की उपेक्षा की, वे सदैव उसकी उपेक्षा करते जायेंगे। इन आत्माओं के चारों ओर रोष से घूमनेवाले ये शैतान कौन हैं? ईश्वरीय न्याय के विभिन्न रूप ही तो हैं! इसी कारण ये आत्मायें न तो कुछ देखती हैं न समझती हैं। सत्य ज्ञानशून्य ये आत्मायें स्वयं अपने दुष्कर्मों का ज्ञान नहीं रखती और भगवान् भी इन्हें दंड से मुक्त नहीं कर सकता।”

पैफनाशस ने कहा—“ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं।”

उस नक्राबपोश स्त्री ने उत्तर दिया—“वह अन्याय नहीं कर सकता। दंड देने के पहले उन्हें ज्ञान से प्रकाशित करना आवश्यक है और सत्य की ज्योति पाकर वे मुक्त हो जायेंगे।”

पैफनाशस फिर भयभीत और उद्विग्न होकर उस खोह के किनारे पर भुका। इस बार उसने छोटे छोटे मेहँदी-वृक्षों के नीचे निशियस की हँसती हुई छाया-मूर्ति देखी, माथे पर फूलों की माला लिपटी हुई थी। पास ही मिलेटस की ‘एस्पाशिया’\* नाम की वेश्या अपने भव्य वस्त्रों में बैठी हुई थी। उसकी मुखमुद्रा मनोहर और प्रतिभायुक्त थी। लगता था कि

---

\* एक वेश्या।

वह साथ ही दर्शन और प्रेम पर बोल रही है। भरनी हुई आग की दरसात उन्हें ओस की ताजी बूंद-सी शीतल लग रही थी और झूलसती हुई धरती उनके पैरों के नीचे ऐसे पड़ती थी जैसे नरगम तृणसमूह से बनी हो। पैकनागस यह देखकर क्रोध से पागल हो उठा। वह चीख उठा—  
“भगवान्, इस पर दृष्टि गिराओ। यह निश्चित है। इसे रुलाओ, ऐसा मनाओ कि कराह उठे, दाँत पीसे। इसने नाया के नाथ ‘पाप’ किया है, उसे भ्रष्ट किया है।”

जब पैकनागस की आँख खुली तब वह एक अत्यन्त वक्रिष्ठ माँभी की गोद में पड़ा हुआ था। वह उसे किनारे की ओर खींच रहा था और कहता जा रहा था—“शान्त, मित्र, शान्त हो। कसम जलदेव की, तुम नींद में चौक चौक उठते हो। यदि मैं न रोक रखता तो तुम अब नरक पानी में गिर पड़े होते। मैंने तुम्हारी जान बचाई है।”

“परमात्मा को धन्यवाद है।” पैकनागस ने उत्तर दिया।

वह उठकर नींद में देखे हुए स्वप्न पर विचार करता हुआ सामने की ओर चला। सोचा—“यह साफ ही दुःस्वप्न है, नरक को असत्य समझना परमात्मा का अपमान है। यह अवश्य ही शैतान का दिया हुआ सपना है।”

वह इस तरह तर्क-वितर्क कर रहा था क्योंकि वह जानता था कि ईश्वर-दन स्वप्न और शैतानों-द्वारा दिखाये गये दुःस्वप्नों में भेद कैसे किया जाता है। साधु के लिए यह विवेचन लाभदायक होता है क्योंकि वह प्रेतों से घिरा रहता है। यदि मनुष्यों से वह दूर रहेगा तो पिशाचों से उसका गला नहीं छूट सकता। रेगिस्तान में तो इन पिशाचों की बस्ती ही है। जिस ध्वस्त महल में पवित्रात्मा एण्टोनी ने निवास लिया था वहाँ पहुँचने पर यात्रियों को अजीब कोलाहल सुन पड़ता था। जैसे किसी नगर के

निवासी छुट्टियाँ मना रहे हों। यह शब्द एण्टोनी को प्रलोभन देनेवाले दैत्यों का होता था।

पैफनाशस को यह उदाहरण याद आया। उसे मिस्र देश के प्रसिद्ध सन्त जॉन की याद आई जिन्हें शैतान ने लगातार साठ वर्ष तक अपने आकर्षण से सत्य से डिगाना चाहा, किन्तु जॉन ने नरक के छलों को निष्फल कर दिया। एक दिन किसी तरह शैतान मनुष्य के रूप में जॉन की कुटिया में घुस गया और उनसे कहा—“जॉन, कल शाम तक तुम्हें अपना व्रत जारी रखना होगा।” जॉन ने समझा कि वह किसी देवदूत की आवाज सुन रहे हैं और दूसरे दिन मध्या की पूजा तक, शैतान की आज्ञा मान उपवास किया। पिशाच की सन्त जॉन पर केवल यही एक विजय थी, यद्यपि बहुत तुच्छ यह विजय थी। इसी कारण पैफनाशस ने अपनी नींद में देखे हुए स्वप्न की झुगई तुरन्त पहचान ली।

अभी वह ईश्वर से अपने को पिशाच के फन्दे में डाल देने के लिए शिकायत कर ही रहा था कि उसे मनुष्यों की एक भीड़ एक ओर ढकेले लिये चली। वे सभी लोग एक ही ओर जा रहे थे। उसे नगरों में चलने का अभ्यास नहीं था; फलतः वह राहचलतों के बीच में एक मुस्त और निष्क्रिय लोथ की तरह धक्के खाने लगा। स्वयं अपने ही वस्त्रों में फँसकर वह कई बार गिरते गिरते बचा। ये सब लोग कहाँ जा रहे हैं, यह जानने की इच्छा से उसने उनमें से एक से इस भग-दौड़ का कारण पूछा।

दूसरे ने उत्तर दिया—“भाई, क्या तुम जानते नहीं कि खेल आरम्भ ही होनेवाला है और ताया अभिनय करेगी। ये सब नागरिक थियेटर में ही जा रहे हैं, और मैं भी वहीं जा रहा हूँ। क्या साथ चलोगे ?”

पैफनाशस को लगा कि वहाँ खेलों में ही ताया से मिलना उसके कार्यक्रम के अनुकूल होगा। वह उस अपरिचित के साथ गया। थियेटर

उनके सामने ही था, पोर्टिको में चमकदार परदे पड़े हुए थे और बड़ी-सी गोल दीवाल पर अगणित प्रतिमाएँ लगी हुई थीं। भीड़ के साथ वह एक पतले बगमदे में घुसा जिसके अन्त में प्रकाश से जगमगाता हुआ रंगमंच बना हुआ था। अभी रंगशाला खाली पड़ी हुई थी। परदा नहीं पड़ा था और जनता की एक समाधि-सी बनी दीख पड़ रही थी, ठीक वैसी, जैसी प्राचीन राष्ट्र अपने शूरवीरों की यादगार में बनवाते थे। एक पड़ाव के बीच में यह कब्र बनी हुई थी। तम्बुओं के सामने बहुत-से भाले रखे हुए थे, सुनहरी ढालें तम्बुओं के खम्भे से लटक रही थीं। सब पर निद्रा की-सी शान्ति छाई हुई थी, केवल गोलाकार बैठे हुए दर्शकों में से मधुमक्खी के छत्ते की भाँति भनभनाहट की ध्वनि निकल रही थी। बैंगनी रंग के वस्त्रों की छाया से प्रतिबिम्बित प्रत्येक दर्शक उत्सुकता से रंगमंच की ओर देख रहा था। स्त्रियाँ नीबू खाती जाती थीं और हँसती जाती थीं।

पैफनास मन ही मन ईश-प्रार्थना कर रहा था और व्यर्थ की बातें नहीं करता था। पर उसके पास ही बैठा हुआ व्यक्ति थियेटर के पतन की शिकायत करने लगा। उसने कहा—“पहले अभिनेता लोग चेहरे पहनकर यूरियाइड्स और मिनेन्डर\* की कविताएँ अलंकारपूर्ण स्वरों में गाया करते थे। अब नाटकों में वार्तालाप तो होता नहीं, केवल अभिनय होता है, और स्वर्गीय दृश्यों के बजाय केवल भाग और मुद्रायें ही रह गई हैं। यह तो कोई भी समझ सकता है। न तो वे भयंकर चेहरे रहे, जिनकी धातु की बनी जीभों से अभिनेताओं की आवाजें बड़ जानी थीं, न वे ऊँचे जूते ही रहे जिन्हें पहनकर मनुष्य देवताओं

---

\* दो बड़े विदेशी कवि ।

की तरह लम्बे मालूम होते थे और न वे गौरव और कविता ही रह गये। सब चले गये; अब तो इनके स्थान पर खुले मुँह मूक अभिनय करनेवालों और नर्तकियों का राज्य है। उस समय के यूनान-निवासी यदि स्त्री को इस तरह रंगमंच पर खुले मुँह देखते तो क्या कहते? स्त्री के लिए यो जनता के सामने आना लज्जाजनक है। इसे स्वीकार करके हमने अपने पतन का परिचय दिया है। स्त्री पृथ्वी की शत्रु है और पृथ्वी का कलंक।”

पैफनाश ने उत्तर दिया—“तुम ठीक कहते हो। नारी हमारी सबसे बड़ी शत्रु है। उससे हमें आनन्द होता है और इसी लिए, उससे भय खाना चाहिए।”

साथी डोरियन ने कहा—“देवताओं की शपथ खाना ई, स्त्री से आनन्द नहीं मिलता प्रत्युत दुःख, कष्ट और चिन्तायें ही हाथ आती हैं। प्रेम ही हमारे महान् दुःखों का कारण है। मुनो अपरिचित ! अपनी युवावस्था में मैं ट्रेजेना गया था। वहाँ मैंने एक बड़ा मेहँदी का वृक्ष देखा जिसकी पत्तियों में अगणित छोटे-छोटे छेद बने हुए थे। उस मेहँदी के विषय में ट्रेजेनानिवासी कहते हैं कि रानी फ्रीडरा जिन दिनों हिप्पोलाइटस को प्यार करती थी उन दिनों वह दिन-दिन भर इसी पेड़ के नीचे उसके विरह में घुलती हुई बैठी रहती थी। अपना वह मलिन और उदास समय काटने के लिए, बालों में लगी हुई मुनहरी पिनें निकालकर उसकी पत्तियों को छेदा करती थी। इस तरह सभी पत्तियाँ छिद गईं। अपने उस नादान प्रेमी का सर्वनाश कर चुकने के बाद, जिसे उसने अपने पतित प्रेम में फँसाया था, वह स्वयं भी कष्ट सहती हुई मर गई। उसने अपने वैवाहिक कमरे में अपने को बन्द कर लिया और अपने मुनहरे कमरबन्द के महारे हाथीदाँत की एक

खूँटी से लटक गई। ईश्वर की इच्छा से, उस मेहँदी-वृक्ष की पत्तियों में, जो इस कष्टकथा का गवाह था, हमेशा ही छिद्र बनते रहे। मैंने उसकी एक पत्ती तोड़कर अपने बिछावन के मिश्रदाने रख दी जिसमें मुझे प्रेम की भयकरता में फँसने से वह सदैव सावधान करती रहे और मुझे गुरु एपिक्क्यूरस के सिद्धान्तों में लगाये रहे, जो कहा करते थे कि वासना से सदैव डरना चाहिए। वास्तव में प्रेम विश्वास और धर्म के लिए रोग है और यह कोई नहीं कह सकता कि मैं इसमें मुक्त रहूँगा।”

पैकनागस ने पूछा—“डोरियन, तुम्हारे आनन्द के विषय क्या है?”

डोरियन ने दुःख से उत्तर दिया—“मुझे केवल एक वस्तु में आनन्द आता है और वह है चिन्तन। यद्यपि वह बहुत आकर्षक विषय नहीं है। जिसका पेट खराब हो गया हो, वह और किस चीज में आनन्द प्राप्त कर सकता है?”

उसके इन अन्तिम शब्दों पर पैकनागस उस आनन्दवादी को आध्यात्मिक आनन्द की यह शिक्षा देने जा ही रहा था कि ‘सत्य पर कान धरो और प्रकाश प्राप्त करो’; कि उसने अपने चारों ओर लोगों की उत्सुक दृष्टियाँ और हाथ उठे देखे। थियेटर में गहरा सन्नाटा छा गया और तुरन्त ही वीरगान की ध्वनि निकलने लगी।

खेल आरम्भ हो गया था। सैनिकों ने तम्बू छोड़ दिये थे और कूच की तैयारी कर रहे थे कि एताएक उस समाधि पर बादलों का एक टुकड़ा छा गया। फिर बादल हट गये और सोने के शस्त्रास्त्रों में सजे हुए एंगिलीस की छाया दिखाई पड़ी। मालूम पड़ा, जैसे वह सैनिकों की ओर हाथ फैलाये कह रहा हो—“यह क्या? तुम लोग जा रहे हो ग्रीस के सपूतों? उस देश को जा रहे हो जिसे मैं अब नहीं देख पाऊँगा

और मेरी कन्न पर कुछ भेंट नहीं चढ़ाते हो ?” तुरन्त ही ग्रीकवासियों के वे नेनागण समाधितल के चारों ओर एकत्र हो गये।

थिसियस का पुत्र एकामस बूढ़ा नेस्टर और आगामेम्नान, जो बँड लिये हुए थे और कमरपट्टे बाँधे हुए थे, इस आश्चर्यजनक घटना को देखने लगे। एशिलीस का युवक पुत्र पाइरस पृथ्वी पर मस्तक भुकाये हुए था। यूलिसेस, जो अपनी टोपी से पहचाना जा सकता था, जिससे उसके घुँघराले बाल बाहर निकले हुए थे, की मुखमुद्रा से जान पड़ता था कि वह उस मृतात्मा से सहमत है। वह आगामेम्नान से बातें कर रहा था और उनकी मुखमुद्रा से जनता उनके शब्द समझ रही थी।

वह कह रहा था—“ग्रीम के लिए वीरों की तरह मरनेवाले एशिलीस का हमें सम्मान करना चाहिए। वह चाहता है कि प्रायम की पुत्री कुमारी पालिक्जेना उसकी समाधि पर अर्पित कर दी जाय। ग्रीसवासियों, मृतवीर को संतुष्ट करो ताकि वह यमलोक में प्रसन्न हो सके।”

किन्तु सम्राटों के सम्राट् ने उत्तर दिया—“ट्रोजन की कुमारियों की रक्षा हमें करनी चाहिए जिन्हें हम यज्ञवेदी से एक बार बचा चुके हैं। प्रायम का यशस्वी वंश काफी कष्ट उठा चुका है।”

वह इसलिए ऐसा कह रहा था कि वह पालिक्जेना की बहन को प्यार करता था, किन्तु यूलिसेस ने उसकी इसके लिए तीव्र भर्त्सना की और पालिक्जेना की वलि चढ़ाने का ही तय किया।

यूलिसेस की तारीफ़ में समस्त ग्रीकनिवासियों ने हर्ष से तालियाँ बजाईं। पालिक्जेना की मृत्यु निश्चित हो गई और एशिलीस की मृत आत्मा शान्त होकर गायब हो गई। पात्रों की बात-चीत के बाद कभी उत्तेजक और कभी कर्मग मंगीत होने लगा। दर्शक प्रशंसा करने लगे।

पैफनाशस ने, जो प्रत्येक वस्तु को स्वर्गिक सत्य की तुला पर तोलता था, धीरे से कहा—“इस कथा से यह पता चलता है कि भूछे देवताओं के पुजारी कितने निर्दय थे।”

डोरियन ने जवाब दिया—“सभी धर्मों की जड़ पाप में ही है। यह प्रसन्नता की ही बात है कि एक ग्रीसनिवामी ने, जो ईश्वरोपनिषद् से युक्त था, लोगों को अदृश्य के व्यर्थ भय से मुक्त कर दिया।”

इतने में ही हेक्यूवा\* उस तम्बू के बाहर निकली जिसमें वह कैद थी। उसके बाल बिखरे और कपड़े फटे हुए थे। उस दुर्भाग्य की मूर्ति को देखकर दर्शकों में एक गहरी आह निकली। पालिकजेना की मृत्यु का समाचार उसे एक स्वप्न-द्वारा लग गया था और वह अपने लिए और उसके लिए रो रही थी। पास ही खड़ा यूलिसेस उससे पालिकजेना को माँग रहा था। वह बूढ़ी माता अपने बाल नोचने लगी, गालों में नाखून धँसा दिये और इस निर्दयी पुरुष के हाथ चूमे। पर वह अपनी निर्दय नम्रता से कहने लगा—“बुद्धि से काम लो हेक्यूवा, और ज़रूरत को समझ कर इसे मान लो। हमारे घरों में भी न जाने कितनी बूढ़ी माताएँ अपने उन संतानों के लिए रो रही हैं जो इन वृद्धों के नीचे सदा के लिए सो गये हैं।”

कैमेन्ड्रा, जो कभी वैभवशाली एशिया की सम्राज्ञी थी पर अब गुलाम हो गई थी, निराशा से सिर धुनने लगी।

इसी समय तम्बू का परदा उठने पर कुमारी पालिकजेना दीख पड़ी। दर्शकों में एक स्वर से आवाज़ होने लगी उन्होंने ताया को पहचान लिया। पैफनाशस ने उस स्त्री को एक दार फिर देखा जिसे वह खोज रहा

था। अपने गोरे हाथ से वह तम्बू का भारी परदा ऊपर उठाये थी। सुन्दर मूर्ति की तरह अचल, और नीली आँखों से मधुर और गर्वभरी दृष्टि चारों ओर घुमाती हुई उसने सबको अपने सौंदर्य के जादू से कैपा दिया।

प्रशंसा की एक ध्वनि दर्शकों की ओर से आई और पैफनायस व्याकुल होकर, हाथ छाती पर बाँधे, गहरी साँस ले कह उठा—“ओ परमात्मा, अपने किसी प्राणी को तू यह विकट शक्ति क्यों देता है?”

डोरियन ने, जो इतना व्यग्र नहीं हुआ था, कहा—“जिन परमाणुओं में इस स्त्री का निर्माण हुआ है वे सच ही, आँखों को मनाहर सयोग से लगने हैं। प्रकृति की क्रीड़ाओं का यह एक नमूना है, ये परमाणु नहीं जानते कि उनमें क्या वस्तु बन रही है। एक दिन ये ऐसे ही नष्ट हो जायेंगे जैसे एकत्र हुए हैं। लैला और क्लियोपैट्रा जिन परमाणुओं से बनी थीं, वे अब कहाँ हैं? मैं इससे इनकार नहीं करता कि स्त्रियाँ कभी कभी रूपवती होती हैं। उन्हें भी अपमान और विपत्ति के सामने झुकना पड़ता ही है। विचारवान् लोग ये चीजें समझते हैं पर मर्त्य इन पर ध्यान नहीं देते। स्त्रियाँ प्रेम को जाग्रन् करती हैं, यद्यपि उन्हें प्रेम करना मर्त्यता है।”

इस तरह दार्शनिक और साधु ताया पर विचार करने लगे और अपनी-अपनी विचार-प्रणाली पर स्थिर रहे। दोनों ने यह नहीं देखा कि हेक्मूवा अपनी पुत्री की ओर घूमकर इशारों में कह रही है—इस निर्दयी यूलिसेस पर अपना प्रभाव डालो। अपने आँसू, अपने यौवन, अपने सौंदर्य का जादू डालो।”

ताया ने, या पालिक्जेन्दा ने परदा गिरा दिया। वह एक कदम आगे बढ़ी। सबके दिलों को जीत लिया। जब वह सौम्य मधुर चाल से यूलिसेस

की ओर बढ़ी, वंशियों की स्वरावली के साथ उसके गति की मधुरता ने उसे मंसार भर के संगीत का केन्द्र-सा बना दिया। दर्शक केवल उमी को देख रहे थे, और सब कुछ उसके रंग के आगे दब गया था। दृश्य का अभिनय चलता रहा।

यूलिमेम ने अपना मिर घूमा लिया और हाथ लबादे के भीतर कर लिये ताकि वह उन कटाक्षों और चूमनों को न देख सके। कुमारी ने उसे इशारों से बताया कि उसमें डरे नहीं। उसकी शान्त दृष्टि ने कहा—“यूलिमेम, मैं तुम्हारे साथ चलूंगी और अनिवार्यता की माँग पूरी होगी, क्योंकि मैं मरना चाहती हूँ। प्रायम की कन्या और हेक्टर की वहन होने हुए मैं यह नहीं सहन कर सकती कि मेरी शय्या किसी विदेशी को आमन्त्रित करे। वह पहले बड़े-बड़े सम्राटों के योग्य समझी जाती थी। मैं खुशी में सब कुछ छोड़ती हूँ।”

हेक्पूबा, जो अब तक जमीन में पड़ी हुई थी, झपट कर उठी और उसने अपनी पुत्री को कसकर छाती में लगा लिया। पालिक्वेना ने दृढ़ता से धीरे धीरे अपनी मा का हाथ हटाया और जान पड़ा जैसे कह रही हो—“मा, भगवान् के क्रोध का शिकार न बनो। वे जबर्दस्ती तुम्हें मुझसे अलग कर सकते हैं। प्यारी मा, अपने क्षीण हाथ मुझे दो और मुझे चूम लो।”

ताया के मुख पर शोक का मौदर्य खेल रहा था। दर्शकों ने यह मान लिया कि जीवन के विभिन्न रूपों और क्रियाओं को कुशलता से दिखलाने की शक्ति ताया में है। पैफनाशस ने भी यह सोचकर उसका आज का मौदर्य और चमक-दमक माफ कर दिया कि इसके बाद ही विनम्रता और पवित्रता आनेवाली है, और वह तपस्विनी बन जायेगी। इस विचार से वह प्रसन्न हो उठा।

दृश्य का अन्त निकट आया। हेक्यूबा बेहोश-सी होकर गिर पड़ी और पालिक्जेना, यूलिसेस के साथ उस समाधि की ओर बढ़ी जहाँ चारों ओर वे शूरवीर बैठे हुए थे। करुण संगीत के बीच में वह उस समाधि पर चढ़ी और एगिलीस के पुत्र ने सोने के प्याले में उसे शराब अर्पित की। जब उन बलि करनेवालों ने उसे पकड़ने को हाथ बढ़ाये, तब उसने इशारों से मना कर दिया जिनका अर्थ था कि वह राजकन्याओं की तरह स्वच्छन्द और स्वेच्छा से मरेगी। कपड़े फाड़कर उसने अपनी छाती खोल दी। पायर्स ने मुँह फेरकर अपनी तलवार उसकी छाती में धुसेड़ दी और, किसी कौशल से, उस कुमारी की चमकती हुई छाती से रक्त की धारायें निकलने लगीं। उसका सिर लटक गया, आँखों में मृत्यु का आतंक छा गया और वह मुँह के बल गिर पड़ी।

वे योद्धा ताया को कफन में लपेट रहे थे और फूलों से ढाँक रहे थे। वायु में दर्शकों की चीख और करुण निनाद भरे हुए थे। उसी समय पैफ़नाशस अपनी जगह से उठता हुआ जोर से भविष्यवाणी कर उठा—

“नास्तिको, शैतान के पुजारियों और मूर्ति-पूजकों से भी गये-गुजरे आर्यों! कुछ मीखो। जो तुमने अभी देखा है वह एक रूपक है। इस कथा का एक आध्यात्मिक अर्थ है और शीघ्र ही यह स्त्री स्वेच्छा से उस परमपिता के चरणों पर समर्पित होगी।”

थियेटर से भीड़ छुट रही थी। डोरियन का साथ छोड़कर पैफ़नाशस द्वार के पास पहुँचा। और घंटे भर बाद ही वह ताया का द्वार खटखटा रहा था।

ताया बड़े आदमियों के मुहल्ले में, मिकन्दर की समाधि के पास एक मकान में रहती थी, जिसके चारों ओर बाग थे जिनमें कृत्रिम पहाड़ियाँ बनी हुई थीं और एक मोता बह रहा था। एक बूढ़ी हवशी

नौकरानी ने, जो अँगूठियाँ पहने हुए थी, द्वार खोला और पूछा कि क्या काम है।

पैफ़नाशस ने उत्तर दिया—“मैं ताया से मिलना चाहता हूँ। ईश्वर साक्षी है कि मैं केवल उससे मिलने आया हूँ।”

वह क्रीमती लवादा पहने हुए था और रोव से बातें कर रहा था अतः नौकरानी ने उसे अन्दर आने दिया। कहा—“ताया वहाँ पगियों के कुंज में आपको मिल जायेंगी।”

ताया निर्धन किन्तु स्वाधीन, मूर्तिपूजक माता-पिता की सन्तान थी। अब वह एकदम बच्ची थी, तभी से उसका पिता अलेक्जेंड्रिया में एक सराय खोले हुए था जिसमें ज्यादातर मल्लाह ही आते थे। बचपन की कुछ साफ स्मृतियाँ अब भी ताया के मस्तिष्क में सुरक्षित थी। अँगीठी के पास पाँव पर पाँव रखकर बैठे पिता की याद उसे अब भी आती थी, जो शान्त और भारी भरकम व्यक्ति था और जिसे देव कर डर लगता था। वह उन फिरऊनों में से एक जैसा था जिनकी स्मृति में सड़कों के नुक्कड़ों पर भाट लोग नित्य ही गाते रहते थे। उसे अपनी दुबली-पतली और उदास मा की याद भी आती थी जो घर भर में भूखी बिल्ली की तरह फिरती रहती थी और जिसकी तीखी आवाज और उद्दीपक नेत्रों का प्रकाश घर भर में फैला रहता था। कहा जाता था कि वह एक जादूगरनी है जो रात को अपने प्रेनियों से मिलने के लिए उलटू बन जाती है। यह सब केवल कल्पना थी। मा को बराबर देखने रहने से ताया यह जानती थी कि जादूगरी से उससे कोई संबंध नहीं है। हाँ, वह लालची थी अतः रात भर अपनी दिन की कमाई गिनती रहती थी। आलसी पिता और लालची माता ने उसे जानवरों की तरह निर्बाध बढ़ने का अवसर दिया। इस तरह, शराब के नशे में चूर मल्लाहों के कमर-बन्दों में से एक एक कर पैसे निकालने में, गन्दे गानों से और अश्लील गबदों से, जिनका अर्थ वह खुद भी नहीं जानती थी उनका मनोरंजन करने में वह बहुत चतुर हो गई। खीची हुई शराब की गंध और लमलसे बोतलों से भरी हुई सराय में वह मल्लाहों की गोद में बैठती फिरती, तब मुँह पर शराब का लसका लगाये और मल्लाहों की खुरदुरी दाढ़ियों से खुरचने का

निशान लिये तथा नन्हें हाथों में पैसे दबाये वह वहाँ से भागती और एक बुढ़िया की दूकान पर मिठाई खरीदने पहुँच जाती। रोज़ एक ही बात होती, मल्लाह तूफ़ानों में अपने खतरों की बातें दुहराते, शतरंज या चौसर खेलते और सबसे अच्छी शराब के लिए चीखते चिल्लाते।

शराबियों की हाथापाइयों से रोज़ रात को उसकी नींद टूट जाती। भयंकर हल्लड़ के बीच वे घोंघे खींच खींच कर उछालते जिससे उनके मुँह पर धाव भी हो जाते थे। कभी कभी धूयेंदार लैम्पों के प्रकाश में वह छूरियाँ चमकते और रक्तपान होते देखती थी।

बचपन में उसे यदि कोई भलामानस मिला था तो वह एम्स था जिससे वह दबती थी। एम्स घर का हबशी नौकर था, बर्तनों से भी काला जिन्हें वह तन्मयता में माँजकर चमकाता था और रात की नींद से भी भला। वह अकसर ताया को घुटनों पर बिठा कर सोने चाँदी और खजानों से भरे तहखानों की कहानियाँ सुनाया करता था। ये तहखाने कुछ विलासी राजाओं के लिए बनवाये जाते थे। तहखानों का गुप्त भेद किसी पर प्रकट न हो सके, इसके लिए उनके बन जाने के बाद राजा लोग उन्हें बनानेवाले कारीगरों को मरवा डाला करते थे। इन कहानियों में राजकुमारियों से ब्याह करनेवाले चतुर चोरों की कहानियाँ और पिरामिड बनानेवालों की कहानियाँ भी होतीं। नन्हें बच्ची ताया एम्स को बहुत चाहती। वही उसके लिए पिता भी था, मा भी था, दाई भी था और साथ खेलनेवाला भी था। उसके साथ साथ वह गोदाम में भी जाती, जहाँ शराब के मटके रक्खे होते। बाड़े में भी जाती जहाँ बेचारी मुर्गियाँ एम्स की छुरी देखकर, तेज़ी से पर फड़फड़ाने लगती थीं। अकसर रात को सोने के बदले वह पुआल के बिस्तर पर बैठा बैठा ताया के लिए नाव और पनचक्कियाँ बनाया करता था।

अपने मालिक के निरन्तर दुर्व्यवहार के कारण उसका एक कान फट गया था और बदन पर मार के बहुत-से दाग थे। फिर भी उसके मुख पर शान्ति और प्रसन्नता का ही भाव था। किसी ने उससे यह नहीं पूछा कि उमे आत्मा का यह संतोष और हृदय की यह शान्ति कहाँ से मिलती है। वह बच्चे की तरह भोला-भाला था। अपना दैनिक काम करते वक़्त वह कर्कश स्वर में भजन गाने लगता जिसमे ताया डर जाती थी और रान को वे ही सपने देखती थी।

एम्स ईसाई था। उसका बप्तिस्मा हुआ था और समाज के उत्सवों और खान-पान में उमे थियोडोर कहकर पुकारा जाता था। वह छिपे रूप में, सोने के समय, इन उत्सवों में जाता था।

यह समय ईसाई-धर्म की परीक्षा का था। सम्राट् की आज्ञा से गिरजाघर नष्ट कर दिये गये थे, धर्म-पुस्तकें जला दी गई थी और पवित्र पूजा के पात्र और मोमबत्तियाँ छीन ली गई थीं। ईसाई लोग सम्मान से च्युत कर दिये गये थे। उन्हें प्रतिक्षण मृत्यु का भय लगा रहता था। एलेक्जेंड्रिया के ईसाई-समाज में आतंक का राज्य था। जेल इन कैदियों से खचाखच भर उठे थे। ईसाई लोग आपस में भय-सहित काना-फूसी करते रहते थे कि सीरिया, अरेबिया, मसोपोटामिया, कैपाडोशिया और समूचे राज्य में ईसाई पुरोहित और कुमारियों को कोड़ों से पीटा जाता है, फाँसी दी जाती है और जंगली जानवरों के आगे डाल दिया जाता है। उसी समय मिस्र के ईसाइयों का प्रधान पैगम्बर एण्टोनी, जो अपनी दिव्यदृष्टि और एकान्तवास के लिए प्रसिद्ध था, चील की तरह पहाड़ की चोटी से अलेक्जेंड्रिया नगर में उतरा। उसने गिरजे-गिरजे घूमकर अपने धर्मोन्माद से समूची जाति को प्रभावित और जाग्रत कर दिया। विधर्मियों से वह छिपा रहता था और समस्त ईसाई-सभाओं में उपस्थित

रहकर सबको उसी शक्ति और सतर्कता में भर देता था जिसे उसे प्रेरणा और चेतना मिलती थी। गुलामों पर ज्यादा अत्याचार होता था। उनमें से बहुत-से भय के कारण धर्म पर विश्वास खो बैठे थे। दूसरे बहुत-से जंगलों में इस इरादे से भाग गये थे कि या तो वहाँ चिन्तन करेंगे या लूट पाट कर निर्वाह करेंगे। किन्तु एम्म सभाओं में हमेशा की तरह जाता रहा, कैदियों से मिलता रहा, शहीदों की समाधियाँ तैयार करवाना और प्रसन्नतापूर्वक ईसाई-धर्म में विश्वास प्रकट करता रहा। उसके सच्चे उत्साह से प्रभावित होकर वापस जाने के पहले महान् एण्टोनी ने उस हबशी गुलाम को छाती से लगा लिया और शान्तिमय चुम्बन प्रदान किया।

ताया जब सात वर्ष की हुई तब एम्म ने उससे भगवान् की चर्चा करनी शुरू की।

उसने बताया—“भगवान् स्वर्ग में रहता है जैसे फिरऊन अपने हरम के तम्बुओं में और अपने बाग के पेड़ों के नीचे छाँह में रहता है। वह बहुत पुराना है, दुनिया में भी ज्यादा पहले का है। उसके केवल एक पुत्र है—ईसा, जिसे वह समूचे हृदय से प्यार करता है और जो कुमारी युवतियों और देवदूतों से भी ज्यादा सुन्दर है। प्रभु ने ईसा से कहा—‘मेरा हरम, मेरा महल, छुहारे के वृक्षों और झरनों को छोड़। मनुष्य के कल्याण के लिए पृथ्वी पर उतर। वहाँ बालरूप में तुझे गरीबों के साथ दरिद्रता में जीवन बिताना होगा। कष्ट ही तेरा रोज़ का भोजन होगा और तेरे आँसू इतने बहेंगे कि उनसे नदियाँ बन जायेंगी जिसमें थके हुए गुलाम हर्ष से स्नान करेंगे। जा, बच्चे !’

“ईसा ने पिता की आज्ञा मान ली और जूडिया के बेथेलहम नामक स्थान पर पृथ्वी पर जन्म लिया। वे फूलों से भरे मैदानों में फिरते रहते

थे और अपने साथियों से कहते रहते थे—‘भूखे रहनेवालों का सीभाग्य है, क्योंकि उन्हें मेरे पिता के साथ भोजन करने का अवसर मिलेगा। प्यासे रहनेवाले भी धन्य हैं क्योंकि वे स्वर्ग के भरणों का जल पियेंगे। रोते रहनेवाले भी भाग्यवान् है क्योंकि मैं अपने दामन से उनकी आँखों के आँसू पोछूँगा।’

“इसी कारण गरीब लोग उन्हें चाहते थे और उनका विश्वास करते थे। किन्तु धनी लोग उनसे घृणा करते थे, उन्हें डर था कि कहीं वे गरीबों को उभार न दें। उन दिनों पृथ्वी पर क्लियोपेट्रा और सीज़र सबसे शक्तिशाली थे। वे दोनों मसीह से घृणा करते थे। न्यायाधीशों और पुजारियों को उन्होंने मसीह को मार डालने की आज्ञा दी। मिस्र की रानी की आज्ञा से सीरिया के राजकुमारों ने एक ऊँचे पहाड़ पर शूली तैयार कराई और उस पर चढ़कर मसीह को मार डाला। वहाँ की स्त्रियों ने मृत शरीर को धो धोकर दफना दिया। पर मसीह ने अपनी समाधि के फाटक को तोड़ डाला और अपने पिता परमात्मा के पास ऊपर चले गये।”

“उसी समय से उनके भक्तगण स्वर्ग को जाते हैं। परमपिता परमात्मा खुले हृदय से उनका स्वागत करता है और कहता है—‘तुम मेरे पुत्र को प्यार करते हो अतः मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। यहाँ स्वर्ग में खाओ, पिओ और मीज करो।’

“मनोहर संगीत के स्वरों के साथ साथ वे नहाते हैं और जब तक खाते-पीते रहते हैं, बराबर नृत्य और गीत चलते रहते हैं, जिनका अन्त नहीं। परमात्मा उन्हें अपने नेत्रों की ज्योति से भी अधिक प्यारा समझता है क्योंकि वे उसके अतिथि होते हैं, और उन्हें अपने बाग का दाढ़िम फल खाने को देता है।”

एम्स अक्सर ऐसी ही बातें करता था। इस तरह ताया को सत्य का ज्ञान हुआ। वह खुश होकर कहती—“मैं भी वे अनार खाऊँगी।”

एम्स उत्तर देता—“मसीह का बप्तिस्मा लेनेवाले लोग ही ये स्वर्ग-फल खा सकते हैं।”

ताया ने बप्तिस्मा लेने की बात कही। यह देखकर कि उसे मसीह में विश्वास है, एम्स ने उसे और गूढ़ उपदेश देने का निश्चय किया ताकि बप्तिस्मा ले लेने पर वह धर्म में पूरी तरह प्रविष्ट हो सके। धर्मपुत्री की भाँति वह एम्स के एकदम निकट हो गई।

अपने अन्यायी माता-पिता के कारण ताया को बड़ा कष्ट था। घर में सोने तक के लिए क्रायदे का स्थान नहीं था। वह अस्तबल के एक कोने में जानवरों के बीच मोती थी। वहाँ प्रतिगत को एम्स छिपकर पहुँच जाता था।

एम्स चुपचाप जाकर ताया के पुआल के बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठ जाता; उसका काला शरीर और मुँह अँधेरे में छिप जाते; बड़ी बड़ी श्वेत आँखें चमकती रहतीं और उनमें से प्रकाश निकलता रहता; वैसे ही, जैसे द्वार की साँसों से प्रकाश-किरणें आती हैं। वह उदासी-भरे मधुर स्वर में बोलता जिसमें संगीत की कण रागिनी होती। कभी कभी गुप्त आत्माओं के स्वरों की भाँति किसी गधे की रेंक या किसी बैल के बैबाहट का स्वर भी एम्स के स्वर के साथ मिल जाता; जब वह धार्मिक सिद्धान्त दुहराता होता। अँधेरे में से एम्स की आवाज स्फूर्ति, शान्ति, आशा और विश्वास लिये निकलती और ताया, एम्स के हाथ में हाथ दिये इन उदास स्वरों और अपनी कल्पना-मूर्तियों के साथ खेलती हुई, शान्त होकर प्रसन्नचित्त से अँधेरी रात और रहस्यमय साधुओं की मधुर संगति में सो जाती। उस

समय अस्तबल की दरारों से किसी तारे का प्रकाश दिखाई देता था ।

उसकी दीक्षा एक वर्ष तक चलती रही और तब वह दिन आया जब ईसाई लोग धार्मिक उत्सव मनाते हैं । उस महत्त्वपूर्ण सप्ताह में एक दिन रात को जब ताया अपने पुआल पर सोई थी, उसे लगा कि एम्स उसे उठा रहा है । उनकी आँखें एक नई ज्योति से दीपी थीं, वह सदा की तरह इस वक्त फटे फटाये कपड़े नहीं पहने था, बल्कि एक लम्बा मफ़ेद चोगा पहने हुए था । ताया को उसके नीचे छिपाते हुए उसने धीरे से कहा—आओ मेरी प्राण, मेरी आँखों की पुतली, आओ । बप्तिस्मा के वस्त्र पहनो ।’

अपनी छाती से लगाये हुए वह ताया को ले चला । उत्सुक और सहमी हुई ताया ने, अपने हाथ अपने इस मित्र के गले में लपेट दिये । वह अँधेरे में उसे बाहर लिये जा रहा था । अँधेरी गलियों से वे गुजरे, यहूदियों का मुहल्ला पार किया, फिर एक कब्रिस्तान में होकर निकले । कब्रगाह से एक उकाब की अशुभसूचक चीख सुनाई पड़ी । कई चौमुहानियाँ पार की जहाँ क्रामों के ऊपर अपराधियों के मृत शरीर लटक रहे थे और कौए कर्कश रव कर रहे थे । ताया ने एम्स की छाती में मुँह छिपा लिया । शेष यात्रा में उसने सिर बाहर कर कुछ देखने का साहस नहीं किया । सहसा उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वे किसी तहखाने में उतर रहे हों । आँखें खोलने पर उसने अपने को एक तंग खोह में पाया जिसमें सुगंधित मशालें जल रही थीं । दीवालों पर ठँकी हुई खड़ी मूर्तियाँ लगी थीं जो धुएँ में सजीव लगती थीं । तसवीरों में लम्बा लबादा पहने व्यक्ति थे, अंगूर की लतायें थीं । व्यक्ति हाथों में खजूर लिये हुए थे । उनके चारों ओर मेमने और फ़ाख़्ते मँडरा रहे थे ।

उन प्रतिमाओं में ताया ने नजारेथ के मसीह को पहचान लिया, उनके चरणों पर फूल खिले हुए थे। हाल के मध्य में, लबालब पानी से भरे हुए पत्थर के एक कुण्ड के पास, एक वृद्ध व्यक्ति खड़ा था जिसके माथे पर पुरोहितों की टोपी थी। वह सोने का कामदार ढीला-ढाला कुर्ता पहने हुए था। उसके वस्त्र क्रीमनी थे। उसका घना दाढ़ीयुक्त चेहरा एक सौम्य और शान्तभाव लिये हुए था। उसका नाम पुरोहित विवान्वास था और वह साडरेन के गिरजे का बहिष्कृत सभ्य था। अब वह भेड़ों का ऊन कातकर जीवन-निर्वाह करता था। उसके पास दो गरीब लड़के खड़े थे। पास ही हाथ में एक छोटा वस्त्र लिये एक बुढ़िया हबशिन खड़ी थी। एम्म ने ताया को गोद में उतार दिया और पुरोहित के भामने घुटने टेककर कहा—‘यही वह छोटी बच्ची है पिता, जिसे मैं अपने प्राणों से भी अधिक चाहता हूँ। मैं इसे आपके पास लाया हूँ ताकि आप इसे अपने वचनानुसार, अगर उचित समझें तो, वप्तिस्मा दें।’

पुरोहित ने यह सुनकर अपने हाथ फैलाये जो कटे कुटे थे। परीक्षा के कठिन दिनों में भी धर्म पर अपना विश्वास कायम रखने के कारण उसकी उँगलियाँ उखाड़ ली गई थीं। ताया डर गई और एम्म की गोद में भाग गई, किन्तु उस साधु ने दुलारभरे शब्दों से उसे आश्वासन देते हुए कहा—‘प्यारी बेटी, डरो नहीं। एम्म तुम्हारा धर्म-पिता है, जिसे हम लोग धियोडोर कहते हैं, और यह सौम्य बूढ़ी स्त्री तुम्हारी मा है जिसने तुम्हारे लिए अपने हाथों यह सफेद वस्त्र तैयार किया है।’ उस हबशिन की ओर घूमकर उसने कहा—‘इसका नाम नीतिदा है। इस दुनिया में यह गुलाम भले ही हो, किन्तु स्वर्ग में प्रभु मसीह इसे अपनी पत्नी की भाँति ग्रहण करेंगे।’ फिर उसने ताया से पूछा—‘ताया, क्या तुम उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा

पर, उसके एकमात्र पुत्र पर जो हमारी मुक्ति के लिए मर गया और प्रभु मसीह के शिष्यों के प्रवचनों पर विश्वास करती हो ?”

“हाँ,”—उस हबशी और हबशिन ने जवाब दिया जो ताया के हाथ पकड़े हुए थे ।

पुरोहित के आदेशानुसार नीतिदा ने ताया के सब कपड़े उतार डाले । लड़की एकदम नंगी हो गई, केवल गले में एक तावीज पड़ा रहा । पुरोहित ने उसे बप्तिस्मावाले जलकुण्ड में तीन बार गोता लगाया । पुरोहित के सहकारियों ने तेल दिया जिसमें विवान्वास ने उसे तर किया और नमक दिया जिसका एक कण उमने ताया के ओठों पर रख दिया । तब उसके गीले शरीर को पोंछ-पाँछ कर नीतिदा ने, जो इन परीक्षाओं के बाद अमर जीवन व्यतीत करनेवाली थी, अपना बनाया हुआ श्वेत वस्त्र उसे पहना दिया ।

पुरोहित ने सबको आशीर्वाद दिया और यह क्रिया समाप्त हो जाने के बाद अपने पुरोहिती के गहने उतार डाले ।

जब सब लोग तहखाने के बाहर निकल आये तब एम्म ने कहा—  
‘हमें आज हर्ष मनाना चाहिए; क्योंकि हमने एक आत्मा आज प्रभु को समर्पित की है । पादरी विवान्वास, आइए, हम सब आपके घर चलें और बाक़ी रात आनन्द मनायें ।’

पादरी ने उत्तर दिया—‘तुम ठीक कहते हो, थियोडोर ।’

वह उस पार्टी को अपने घर ले गया । घर बहुत नज़दीक था । मकान में एक ही कमरा था । उसमें दो करचे रखे हुए थे । एक बड़ा टेबुल था और एक फटी दरी बिछी थी । भीतर घुसने ही पादरी ने कहा—‘नीतिदा, कड़ाही और तेल की बोतल लाओ । हम भोजन बनायें ।’

यह कहते हुए उसने अपने लबादे के नीचे से कुछ छोटी मछलियाँ निकाली जिन्हें उसने वहाँ छिपा रक्खा था, और खूब आग सुलगाकर उन्हें पकाना शुरू किया। पादरी, ताया, दोनों लड़के और दोनों गुलाम गोलाकार ज़मीन पर बैठ गये और ईश्वर को धन्यवाद देते हुए मछली खाने लगे।

विवान्दास ने अपने कष्टों का हाल सुनाया और धार्मिक विजय पर विश्वास प्रकट किया। उसकी भाषा अस्तव्यस्त; पर अलंकारपूर्ण थी। उसने सच्चे व्यक्तियों की तुलना बैगनी कपड़े से की और बप्तिस्मा को समझाने के लिए कहा—‘पवित्र आत्मायें जल पर तैरती रहती हैं, तभी ईसाई लोग जल का बप्तिस्मा लेते हैं। किन्तु जल-धाराओं में शैतानों का भी निवास होता है, जल-परियों को समर्पित सोतों से हमेशा भय खाना चाहिए। इस तरह हम देखते हैं कि पानी में भी कभी कभी आत्मा और शरीर की व्याधियाँ सन्निहित रहती हैं।’

कभी कभी वह पहेली-भरी बातें कहता जिससे ताया उसकी हार्दिक प्रशंसा करती। भोजन के बाद उसने अपने मेहमानों को थोड़ी शराब पीने को दी, जिसने उन्हें नशे से इतना बेसुध किया कि वे भेदे गाने गाने लगे और बहकी बहकी बातें करने लगे। एम्स और नीतिदा उठकर प्रेत-नाच नाचने लगे। यह नृत्य उन्होंने बचपन में सीखा था और यह उनकी जाति में सृष्टि के आरम्भ से चला आता था। यह प्रेम का नृत्य था। लय-ताल के साथ हाथ और शरीर हिलाते हुए वे भागने और पीछा करने का अभिनय कर रहे थे। आँखें नचाते और हँसते समय उनके चमकीले दाँत दीख पड़ते थे।

इस तरह ताया का पवित्र बप्तिस्मा हुआ।

उसे मनोरंजन प्रिय लगता था और ज्यों-ज्यों वह बढ़ने लगी, उसके मन में विचित्र विचित्र इच्छायें जागने लगीं । दिन भर वह सड़क के लड़कों के साथ नाचती गाती रहती और रात को जब पिता के घर लौटती तब भी गाती ही रहती ।

ज्ञान एम्स की अपेक्षा उसे लड़के-लड़कियों का साथ अधिक रुचता । यह उसने नहीं देखा कि एम्स भी उसके साथ अब कम रहने लगा था । अत्याचार होने बन्द हो गये थे, ईसाइयों की धर्म-सभायें नियमित रूप से होने लगी थीं और एम्स इनमें हमेशा शरीक होता था । उसका जोश और भी बढ़ा । कभी कभी रहस्यमय बातें उसके मुख से निकलती । वह कहता,—‘धनियों के पास धन नहीं रह जायगा ।’ वह उन स्थानों पर जाता जहाँ ईसाई जमा होनेवाले होते और वहाँ दीवाल की छाह में फैले लाचारों को एकत्र कर उनमें गुलामों के स्वातंत्र्य और न्याय की बातें कहता । वह कहता—“परमात्मा के राज्य में गुलामों को ताजी शराब और सुस्वादु फल खाने को मिलेंगे । धनी लोग उनके पाँवों के पास कुत्तों की तरह पड़े रहेंगे और उनके जूटे टुकड़े खायेंगे ।”

ये विचार दबे न रह सके, नगर भर में फैल गये और गुलामों के स्वामियों को भय हुआ कि एम्स कहीं उनके गुलामों को बग़ावत के लिए न भड़कावे । ताया के पिता को भी उससे बहुत घृणा थी । पर वह अपनी घृणा छिपाये रहता था ।

एक दिन देवताओं के लिए सुरक्षित रक्खा हुआ एक नमकदान सराय से चोरी हो गया । चोरी का इलज़ाम एम्स पर ही लगाया गया, कहा गया कि अपने स्वामी से घृणा और देवताओं के अपमान की भावना से ही उसने यह काम किया है । बिना किसी सबूत के यह अपराध लगाया गया और एम्स ने भरसक इसे अस्वीकार किया । फिर भी उसे न्यायालय

में ले जाया गया। और चूँकि वह एक बेकार गुलाम समझा जाता था, जज ने उसे मृत्युदण्ड सुना दिया। जज ने उससे कहा—‘तुम्हारे हाथ क्राँस पर ठोक दिये जायेंगे क्योंकि तुमने उनका अच्छा उपयोग नहीं किया है।’

एम्स ने धैर्यपूर्वक सजा सुनी, आदर के साथ जज को नमस्कार किया और तब उसे जेल ले जाया गया। तीन दिन वह वहाँ बन्द रहा और बराबर क़ैदियों को धार्मिक प्रवचन सुनाना रहा। कहा जाता है कि उसकी बातों में प्रभावित होकर अपराधी और जेलर स्वयं प्रभु ममीह पर विश्वास करने लगे।

वह उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ से आज से दो साल पहले वह अपने श्वेत वस्त्रों में सुकुमार फूल-सी प्यारी ताया को लिये निकला था। जब उसके हाथ क्राँस पर कील से जड़ दिये गये, वह कराहा तक नहीं, केवल कई बार उसके मुख से यही निकला—‘मैं प्यासा हूँ।’

उसकी यातना तीन दिन और तीन रात तक रही। यह विश्वास करना कठिन है कि मानव-शरीर इतना कष्ट सह सकता है। कई बार ऐसा जान पड़ा जैसे वह मर गया। मक्खियाँ उसके नेत्रों पर आ जुटतीं और खाने लगतीं; पर सहसा ही वह अपनी खून से भरी पलकें खोल देता। चौथे दिन सुबह उसने हँसकर कहा—‘स्वर्ग के दूत आ रहे हैं। मेरे लिए शराब और फल ला रहे हैं। उनके पंखों की हवा कितनी सुखद है!’

एम्स की मृत्यु हो गई।

•

•

•

मृत्यु के बाद भी उसके मुख पर उल्लास का भाव बना हुआ था। उस क्राँस के चारों ओर पहरे पर नियत सिपाही यत्र देखकर प्रशंसा से भर गये। विवान्दास अपने अन्य ईसाई बन्धुओं के साथ उसके शरीर को

सेण्ट जॉन के समाधि-स्थल पर अन्य शहीदों के साथ दफनाने के लिए माँगने आये। ईसाइयों ने उस हबशी महात्मा थियोडोर की स्मृति-रक्षा सम्मानपूर्वक की।

तीन बरस बाद मैक्सेन्सस के विजयी कान्सटैण्टाइन ने एक फ़रमान जारी करके ईसाइयों को मुक्त कर दिया। उसके बाद ईसाइयों को सतानेवाले केवल धर्मविरोधी लोग ही रह गये।

एम्स की मृत्यु के समय ताया ग्यारह बरस की थी। उसे इस घटना से भारी दुःख और निराश हुई। उसकी आत्मा अभी इतनी परिष्कृत नहीं हुई थी कि वह समझ सके कि एम्स की मृत्यु उसके जीवन के समान ही धन्य है। उसके नादान मन में यह भावना उठी कि इस दुनिया में वही व्यक्ति पवित्र जीवन व्यतीत कर सकता है जो भयंकर यातनायें सहे। वह पवित्र जीवन बिताने से डरने लगी; क्योंकि उसका शरीर कष्ट सहने से डरता था।

पूर्ण वयस्क होने के पहले ही, बन्दरगाह पर घूमने-फिरनेवाले लड़कों में से कुछ उसके प्रेमी बन गये। शाम को वह नगर के बाहर के स्थानों पर फिरते रहनेवाले बूढ़ों के पीछे लग जाती। इससे जो रुपये मिलते उससे वह अपने लिए गहने और वस्त्र खरीदती।

अपने कमाये हुए धन का कोई अंश वह घर नहीं ले जाती थी। इसी लिए उसकी माँ उसके साथ दुर्व्यवहार करती थी। माता की मार से बचने के लिए वह नंगे पाँवों शहरपनाह की ओर भाग जाती जहाँ दीवार की दरारों में छिपकलियों के बीच छिपी रहती। वहाँ बैठे-बैठे वह धनी स्त्रियों की बातें सोचती रहती जो दासियों से घिरी अपने भवनों में रहती हैं।

एक दिन उस पर रोज़ से अधिक मार पड़ी। वह जाकर सदा की तरह नगर के फाटक पर पड़ी हुई थी कि एक बूढ़ी स्त्री उसके सामने आकर रुकी। कुछ पल उसकी ओर देखकर बुढ़िया ने कहा—‘ओ सुन्दर फूल-सी बच्ची ! तुझे पैदा करनेवाला पिता और तुझे इस दुनिया में लानेवाली माता धन्य है ।’

ताया ज़मीन पर आँखें गड़ाये चुप बैठी रही। उसकी आँखें लाल थीं, जान पड़ता था कि वह रो रही थी।

बुढ़िया ने कहा—‘मेरी बच्ची ! तुम्हारे ज़ेमी देवकन्या को पालने-पोसने के सुख पर क्या तुम्हारी मा अपने को मौभाग्यवती नहीं मानती ? क्या तुम्हारा पिता तुम पर हृदय से गर्व नहीं करता ?’

ताया ने धीरे से उत्तर दिया, जैसे अपने से ही कह रही हो—‘मेरा पिता घोर शराबी है और मा भारी कंजूस है।’

बुढ़िया ने चारों ओर देखा कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। तब आश्वस्त होकर कहा—‘मेरी रतन ! तुम मेरे साथ चलो। तुम्हारे जीवन में सदा हँसी और नृत्य ही भर उठेगा। मैं तुम्हें मिठाइयाँ खिलाऊँगी और मेरा लड़का, मेरा खुद का बेटा, तुम्हें अपनी आँखों की पुतली मानकर प्यार करेगा। वह सुन्दर है, युवक है, उसका शरीर फूल-सा मुलायम है।’

ताया ने उत्तर दिया—‘मैं तुम्हारे साथ चलाँगी।’

वह उठकर बुढ़िया के साथ नगर के बाहर चल दी।

इस बुढ़िया का नाम था मोयरो और इसका काम था जगह-जगह से लड़के-लड़कियों को एकत्र करना, जिन्हें नाचना मिखलाकर वह अमीरों के यहाँ उत्सवों में किराये पर भेजती थी।

उसने देखा कि ताया जल्दी ही एक अत्यंत रूपवती युवती होगी। कोड़े मार-मारकर उसने ताया को संगीत की शिक्षा दी। सितार के तालों

पर जब उसके पैर ठीक से न उठते तब बुढ़िया चमड़े के फीनों से पाँवों पर मारती। बुढ़िया का लड़का, जो एक निर्बल, विकृत आकार का हिजड़ा था, ताया के साथ बहुत अन्याचार करता। उसी को केन्द्र मानकर समूची स्त्री-जाति के प्रति जो उसकी घृणा थी, प्रदर्शित करता। नाचनेवालों का वह प्रतिद्वन्द्वी था, अतः उसने ताया को मूक अभिनय की कला में मुख के भावों से, मुख-मुद्रा से समस्त मानवीय भावनाएँ, मुख्यतया वामना, प्रदर्शित करना सिखलाया। इच्छा न रहते हुए भी उसने ताया को कुशल उस्ताद की तरह ये बातें सिखलाई; किन्तु साथ ही उसकी उन्नति में वह जलता भी था। उसके गालों को खरोच लेता, हाथों में चुटकियाँ काटता, पीठ में सुई चुभो देता, जैसे शैतान लड़कियाँ आपस में किया करती हैं। उसने यह स्पष्ट समझ लिया था कि ताया पुरुषों के मनोरंजन की ही वस्तु है। इन सुन्दर शिष्याओं के कारण वह शीघ्र ही एक कुशल गायिका, अभिनेत्री और चतुर नर्तकी बन गई। अपने मालिक की कठोरताओं से उसे आश्चर्य नहीं होता था, कष्ट सहता वह स्वाभाविक समझने लगी थी। बुढ़िया के लिए उसके मन में थोड़ा बहुत आदर का भाव भी था जो स्वयं एक गायिका थी। एन्टियोक में रहते समय मोयरों ने एक बार ताया को धनी व्यापारियों के भोजन में नाचने और वाँसुरी बजाने के लिए किराये पर भेजा। ताया ने वहाँ नृत्य किया। इससे सब लोग प्रसन्न हुए। आवारे रईस भोजन के बाद उसे इधर-उधर कुंजों में ले गये। बिना प्रेम का मूल्य जाने ही उसने अपने को सबको सौंप दिया। एक दिन रात को नगर के सबसे समृद्ध और धनी युवकों के सामने उसने नाचा। नृत्य के बाद प्रोकोन्सल का युवक और कामी पुत्र उसके पास आया और मधुर स्वर में उससे बोला—‘ताया, क्या ही अच्छा होता यदि मैं तुम्हारे बालों पर स्थित कलंगी होता, तुम्हारे मनोहर तन पर का वस्त्र

होता या तुम्हारे सुन्दर चरणों की चप्पल ही होता ! मेरी यही कामना है कि तुम पादुका की तरह मेरे शरीर को चरणों से कुचलो, मेरे आलिंगन ही तुम्हारे वस्त्र और केश की कलंगी हों। आओ, सुन्दरी ! मेरे घर चलो और दुनिया को छोड़ दो।'

ताया उसकी ओर देख रही थी । उसने देखा, युवक सुन्दर है । एकाएक उसे लगा, उसके माथे पर पसीना चुहचुहा आया है, वह काँप उठी। आँखों के सामने बादल उठते से जान पड़ने लगे। ताया ने युवक-के साथ जाने से इनकार कर दिया। युवक की आनुर दृष्टि और प्रेम की बातें सब व्यर्थ गई और जब उसने ताया को जबरदस्ती भुजाओं में भर लिया तब ताया ने कठोरता से उसे अलग कर दिया। वह युवक आँसू बहाने लगा; पर ताया के हृदय में एक नया, अज्ञात और अदृष्ट-भाव उठ पड़ा था। वह बराबर विरोध करती रही।

अन्य मेहमानों ने कहा—“कितनी बड़ी गलती है ! लोलियस भद्र परिवार का है, सुन्दर और धनी है, फिर भी यह साधारण नर्तकी उससे घृणा कर रही है !”

लोलियस अकेले ही घर लौटा और रात भर प्रेम उसे खाता चुकाता रहा। सुबह वह पुनः ताया के द्वार पर गया और फूल लटका आया। उसका मुख पीला और आँखें लाल थीं। लेकिन ताया दुखी और भयभीत थी; वह उससे दूर ही रही। उसे कष्ट होता था; पर वह उस कष्ट का कारण नहीं जानती थी। वह स्वयं अपने से ही पूछती कि वह क्यों इतनी बदल गई है और उदास हो गई है। अपने समस्त प्रेमियों से वह दूर रहती थी, वे उसे भयानक लगते थे। प्रकाश तक उसे अच्छा नहीं लगता था, दिन भर अपने बिछावन पर पड़ी तकिये में मुँह छिपाये वह सिसकती रहती। लोलियस ने उसके यहाँ आने का एक उपाय निकाल लिया,

कई बार उस हठी ताया के यहाँ अनुनय-विनय करने और क्रोध दिखाने आया; किन्तु उसके सामने वह कुमारिका-सी भयभीत हो जाती और बार बार 'नहीं नहीं' ही करती रहती।

पन्द्रह दिन बाद उसे अनुभव हुआ कि वह लोलियस से प्रेम करती है। वह उसके घर गई और उसके साथ रहने लगी। उनका जीवन बहुत मधुर था। वे दिन भर एक दूसरे की आँखों में देखते रहते और बच्चों की तरह बातें करते रहते। संध्या को नदी के एकान्त तटों पर वे घूमते और लारेल गुल्मों के झाड़ों में विलीन हो जाते। कभी-कभी वे तड़के उठकर फूल एकत्र करने पहाड़ की ढालों पर चले जाते। एक ही पात्र से वे पानी पीते। जब ताया एक अंगूर उठाकर मुँह के पास ले आती, लोलियस उसके अधरों के बीच से उसे अपने ओठों से ले लेता।

मोथरो क्रोधित होकर लोलियस के यहाँ ताया को वापस माँगने आई। उसने कहा—“वह मेरी आँखों की पुतली, मेरे रक्त-मांस का अंग, मेरी लड़की है जिसे तुमने मुझसे छीन लिया है।”

लोलियस ने बहुत-सा धन देकर उसे बिदा किया। किन्तु वह फिर आई और और धन माँगने लगी। युवक ने उसे कैद करा दिया। मैजिस्ट्रेटों को उसके अन्य अपराधों का भी पता लगा और उन्होंने उसे मृत्युदण्ड दिया। वह जंगली जानवरों के आगे फेंक दी गई।

ताया लोलियस को सच्चा और निष्कपट प्रेम करती थी। वह हृदय से उससे कहती—‘मैं हमेशा से तुम्हारी ही हूँ।’

लोलियस उत्तर देता—‘तुम जैसी और कोई स्त्री नहीं है।’

यह मोह छः महीने तक रहा और एक दिन में टूट भी गया। ताया फिर एकान्त और शून्य का अनुभव करने लगी। लोलियस को अब वह पहचान न पाती। उसने सोचा—‘क्या हो गया, जो वह पलभर में ही

एकदम बदल गया ? वह भी औरों की तरह ही हो गया, अपना-सा नहीं रह गया ?”

उसने लोलियस को त्याग दिया । मन में यह गुप्त इच्छा दबी ही थी कि किसी अन्य प्राणी के रूप में वह अपने लोलियस को पा जाय, लोलियस में अब उसे अपनत्व नहीं रह गया था । उसने यह भी सोचा कि एक अनचाहे व्यक्ति के साथ रहना कहीं अच्छा है बनिस्वत इसके कि वह ऐसे व्यक्ति के साथ रहे जिसे अब वह प्यार नहीं करती । वह विलासी और आनन्दी जीवों के साथ फिर उन धार्मिक उत्सवों में जाने लगी जहाँ नंगी स्त्रियाँ मन्दिरों में नाचती थी और दल की दल वेश्यायें नदी में तैरा करती थी । उस विलासी और भड़कीले गहर के सभी राग-रंगों में वह भाग लेती । विशेषतः, वह थियेट्रों में जाने लगी जहाँ प्रत्येक देश के कुशल अभिनेता अपना अभिनय दिखाते थे और दर्शक वाह वाह करते थे ।

वह अभिनेताओं, नर्तकों, अभिनेत्रियों और विशेषतया दुःखान्त नाटकों में मानव से प्रेम करनेवाली देवियों अथवा देवताओं-द्वारा प्रेम किये जानेवाले चरित्रों का अभिनय करनेवालों को गौर से देखती थी । जब वह यह समझ गई कि वे दर्शकों को कैसे आकर्षित कर लेते हैं तब उसने सोचा, वह तो उन अभिनेत्रियों से अधिक सुन्दर है, वह और भी अच्छा अभिनय कर सकती है । वह उन अभिनेताओं के प्रधान के पास गई और उसके दल में शामिल होने की आज्ञा चाही । अपने सौन्दर्य और बूढ़ी मोयरो की सुशिक्षा के कारण वह दल में शामिल कर ली गई और रंगमंच पर उतरी ।

शुरू में उसे बहुत कम सफलता मिली क्योंकि उसे इस क्षेत्र का अनुभव नहीं था और उसकी प्रशंसा के विज्ञापनों में दर्शकों को लगातार उत्तेजित नहीं किया गया था । किन्तु कुछ महीने साधारण छोटे छोटे अभिनय

कर लेने के बाद उसकी सुन्दरता की शक्ति ने स्टेज पर ऐसा व्यापक प्रभाव डाला कि सारा नगर हिल उठा। समूचा एन्टियोक नगर थियेटर में टूट पड़ा। सभी न्यायाधीश और प्रमुख नागरिक लोकमत के प्रभाव से वहाँ जाने पर बाध्य हुए। कुली, मेहतर और मजदूर उपवास करके भी थियेटर देखने जाते। कवियों ने ताया की प्रशंसा के बारे में छोटे-छोटे गीत लिखे। गम्भीर दार्शनिक व्यक्ति स्नानगृहों और स्कूलों में, उसकी पालकी जाती देखकर, उसकी निन्दा करते। ईसाई पुरोहित घृणा से मुँह फेर लेते। उसके द्वार का चौखट जहाँ एक ओर फूलों से ढँका रहता वहाँ दूसरी ओर निराश प्रेमियों के हृदय-रक्त से भी रंजित रहता था। अपने प्रेमियों से उसे अनुल धन मिलता और नगर के चतुर वृद्धों की उपाजित समूची सम्पत्ति उसके पाँवों पर पानी की भाँति बहती रहती। जनता की प्रशंसा से उसे शान्तिमय आनन्द होता और क्योंकि अन्य लोग उसे इतना अधिक जानते थे, वह स्वयं भी अपने को प्यार करने लगी थी।

एन्टियोक के सुख और प्रशंसा का गौरव कुछ वर्ष भोग लेने के बाद उसकी इच्छा एक बार फिर अलेक्जेंड्रिया जाने और वहाँ अपने कान्तब दिखाने की हुई, जहाँ बचपन के दिनों में वह कष्ट और लज्जा में जीवन व्यतीत करती थी। जहाँ वह धूलभरी सड़कों पर थकी और दुर्बल, कीड़े की भाँति फिरती रहती थी। उस धनी नगर ने प्रसन्नता से उसका स्वागत किया और उसे धन प्रदान किया। खेलों में उसकी उपस्थिति धूम मचा देती थी। अगणित प्रशंसक और प्रेमी उसके पास आते। वह उनके साथ रूखा व्यवहार करती, क्योंकि अन्त में वह लोलियम जैसा कोई पाने से निराश हो गई थी।

उसके पास आने-जानेवालों में दार्शनिक निशियस भी था, यद्यपि वह विरागी रहने का दम भरता था। उसके पास सम्पत्ति थी फिर

भी वह बुद्धिमान् और भद्र स्वभाव का था। किन्तु अपनी आश्चर्यजनक बुद्धिमत्ता और भावों की गहराई के होते हुए भी वह ताया को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका। वह उसे प्यार नहीं कर सकी, कभी कभी तो उसकी सुकुमार उक्तियों से वह खीझ भी उठती थी। अपने सन्देही स्वभाव से वह ताया को सदैव चोट पहुँचाता रहता। वह किसी वस्तु पर विश्वास नहीं करता था, ताया सब पर विश्वास करती थी। ताया को ईश्वरीय शक्ति पर, दुरात्माओं की शक्ति पर, भाग्य, जादू-टोना और ईश्वरीय न्याय पर विश्वास था। प्रभु मसीह और सीरियनों की देवी पर भी उसका विश्वास था। वह यह भी मानती थी कि काले प्रेतों के रास्ते में जाने के वक्त्र कुत्ते भूँकते हैं। उसका यह भी विश्वास था कि भेड़ के रक्त-सने ऊन से भरे पात्र में वशीकरण मंत्र फूँक देने से कोई स्त्री अपने प्रति-प्रेम भी जगा सकती है। किसी अज्ञात वस्तु के लिए वह हाय हाय करती रहती, सज्ञाविहीन जीवों की उपासना करती और आशा का पल्ला सदैव पकड़े रहती। भविष्य से उसे डर लगता था और वह उसे जान लेना चाहती थी। वह ओझों, टोनेवालों, तांत्रिकों और जादूगरों से सदैव घिरी रहने लगी, जो उसे नित्य ही छला करते, फिर भी उसका पिण्ड नहीं छोड़ते थे। उसे मृत्यु से भय लगता था और वह सर्वत्र ही उसकी छाया देखती थी। आनन्द उपभोगों के समय भी उसे ऐसा लगता जैसे कोई ठण्डा हाथ उसके नग्न कंधों की ओर बढ़ रहा है। वह पीली पड़ जाती और चीख उठती।

निशियस कहता,--“ताया, चाहे हम बूढ़े होकर, श्वेत केश और पीले गालों को लिये महारात्रि की गोद में सो जायें या आज इस प्रकाशित आकाश के नीचे हँसते हुए जीवन बितायें, बात तो एक ही है। आओ, जीवन का मधु हम पान करें। अगर हम आनन्द में रहें तो हम अधिक

जियेंगे। इन्द्रियगत ज्ञान ही सबसे बड़ा ज्ञान है, प्रेम ही सबसे बड़ी विद्या है। जो हम नहीं जानते, जिससे हम अनजान हैं, वह व्यर्थ है। व्यर्थ और नगण्य वस्तुओं के लिए अपने को कष्ट देने में क्या लाभ है ?”

ताया रोष से उत्तर देती—“मुझे उन लोगों से नफ़रत है जो तुम्हारी तरह ही न तो किसी चीज़ की आशा रखते हैं, न जिन्हें किसी का भय है। मुझे ज्ञान की आवश्यकता है, मुझे प्रकाश चाहिए।”

जीवन के रहस्यों से परिचित होने के लिए उसने दर्शन की पुस्तकें पढ़नी आरम्भ कीं पर उन्हें वह समझ नहीं सकी। ज्यों-ज्यों उसकी बाल्या-वस्था उससे दूर होती जाती थी त्यों-त्यों वह उसे बरबस याद करती। उसे नकली वेश में उन गलियों, नदी के तटों और आम जगहों पर घूमना अच्छा लगता था जहाँ कष्ट में वह पली थी। माता-पिता की मृत्यु का उसे दुःख था, विशेषकर इसलिए कि उसने उन्हें कभी प्यार नहीं किया। ईसाई पुरोहितों के सामने पड़ने पर उसे अपना बप्तिस्मा याद आ जाता और वह अस्थिर हो उठती। एक दिन रात को एक लम्बा लबादा ओढ़े, केशराशि को काली टोपी में छिपाये जब वह शहर के निकटवर्ती स्थानों में नित्य की तरह घूम रही थी, अनजान में ही वह सेन्टजॉन के साधारण गिरजाघर के सामने जा पड़ी। भीतर गाने की आवाज़ उसे सुन पड़ी और दरवाज़े की संधियों से उसने प्रकाश भी देखा। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी। लगभग बीस वर्षों से ईसाई लोग मैक्सेन्सस सम्राट की छत्रच्छाया में खुले रूप से अपने उत्सव मनाते थे।

इन भजनों में हृदय की शान्ति निहित थी। ताया ने हाथ से द्वार खोला और उत्सव के अतिथि की तरह भीतर चली गई। वहाँ बहुत-से लोग जमा थे। दीवाल के पास बने हुए एक समाधि पर स्त्रियाँ, बच्चे और वृद्ध व्यक्ति झुके हुए सिज्जदा कर रहे थे। समाधि और कुछ नहीं, पत्थर

का एक ताबूत था जिस पर अंगूर और लतायें बनी हुई थीं। लोग इसका बड़ा सम्मान करते थे, हरे खजूर और गुलाब के लाल फूल इस पर चढ़े हुए थे। अँधेरे में वारों ओर अगणित दीपक जल रहे थे जिसके प्रकाश में धूप आदि का धुआँ देवदूतों के वस्त्रों-सा लगता था। दीवाल पर स्वर्गीय दृश्यों के-से चित्र थे। ताबूत के तले श्वेत वस्त्र पहने पादरी पेट के बल लेटे हुए थे। ये पादरी और एकत्रित व्यक्ति जो भजन गा रहे थे उनसे दुःख का सुख प्रकट होता था। वे अपने शोकोल्लास में इतना अधिक आनन्द और उदामी भर रहे थे कि उसे सुनते समय ताया को जीवन का आनन्द और मृत्यु का भय साथ ही साथ अनुभव होने लगा।

भजन समाप्त करने के बाद सब लोग उठे और समाधि के पार्श्व को चूमने लगे। वे मजदूरी करके जीविका उपार्जन करनेवाले साधारण प्राणी थे। वे भारी कदम रखते, स्थिर आँख और कुम्हलाये मुख लिये, निष्कपटभाव से आगे बढ़े। बारी बारी से वे ताबूत के आगे झुके और उसे चूमा। स्त्रियाँ अपने बच्चों को गोद में उठाकर ताबूत के पत्थर से उनके ओंठ छुआ देती थीं। विस्मित और परेशान ताया ने एक पादरी से इसका कारण पूछा।

पादरी ने उत्तर दिया—“युवती! क्या तुम नहीं जानती कि हम आज हबशी महात्मा थियोडोर की जयन्ती मना रहे हैं जिसने सम्राट् डायोक्लेशियन के राज्य में धर्म के लिए कष्ट सहा? उन्होंने पवित्र जीवन व्यतीत किया और शहीदों की तरह मरे, तभी हम श्वेत वस्त्र पहने उनकी समाधि पर लाल गुलाब चढ़ा रहे हैं।”

ताया यह सुनकर घुटनों के बल बैठ गई और रोने लगी। एम्स की अर्द्ध-विस्मृत याद उसके मन में ताज़ी हो आई। उस भद्र और कष्टदायक

अंधकारमय स्मृति में मोमबत्तियाँ आज जलती हैं, सुगंध उड़ाई जाती है, धूप जलाई जाती है, भजन होते हैं और भक्त जनता भक्ति करती है। ताया ने सोचा—

“वह पुण्यात्मा था और यहाँ वह महान् और पूजित हो गया है। वह मनुष्यों से कितना ऊँचा उठ गया है? आखिर वह क्या अज्ञात वस्तु है जो सम्पत्ति और आनन्द से भी अधिक मूल्यवान् है?”

वह धीरे से उठी और उस महात्मा की समाधि की ओर घूमी जिसने कभी उसकी आँखों को प्यार किया था। उसकी आँखों में झलकते बिन्दु मोमबत्ती के प्रकाश में चमक रहे थे। तब सिर झुकाये, सवये अन्त में, वह दीनभाव से धीरे से उठी और उस गुलाम महात्मा की समाधि को अपने अधरों से चूम लिया। उन अधरों से, जो कभी तृष्णा और लालसा से फूले रहते थे।

घर लौटने पर निशियस को उसने प्रतीक्षा करते पाया। वह केशों में सुगन्धित तेल लगाये हुए था और उसके लबादे का बन्द खुला हुआ था। वह बैठा हुआ एक नीति-सम्बन्धी निबन्ध पढ़ रहा था। वह उसकी ओर बाहें फैलाकर बढ़ा और हँसते हुए बोला—“अन्हड़ ताया, तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठे बैठे मैं इस महागम्भीर विरागी के लिखे हुए निबन्ध में क्या पढ़ रहा था, जानती हो? नीति के उपदेश या अच्छे आचरणों का महत्त्व? ना, ना, इस महान् ग्रन्थ के पन्नों पर मैंने हजारों ताया देखीं। प्रत्येक ताया जँगली बराबर ही ढड़ी थी पर उसका सौंदर्य अनन्त था। वे सब एक ताया की ही छाया थीं। कुछ के पीछे उनका बैंगनी और सुनहरा वस्त्र लहरा रहा था, कुछ का गोरा शरीर पारदर्शक वस्त्रों में झिलमिला रहा था। सब अचल थीं। उनकी नग्नता में भी सौंदर्य था जिससे वासना उत्तेजित होती थी। उनमें मे दो, जो

हाथ में हाथ डाले हुए थीं, इतनी समरूप थीं कि एक दूसरे में भेद करना कठिन था। दोनों मुस्करा रही थीं, पहली ने कहा— 'मैं प्रेम की मूर्ति हूँ'। दूसरी ने कहा— 'मैं मृत्यु हूँ'।

यह कहते हुए उसने ताया को गोद में भर लिया। यह उसने नहीं देखा कि ताया की नीचे झुकी हुई आँखों में कितनी आग भरी हुई है, और वह बराबर अपनी बात कहता रहा। यह वह नहीं जानता था कि ताया पर उन बातों का कोई असर नहीं हो रहा है। वह कहता गया— 'जब मैं यह पढ़ रहा था कि अपने आत्म-शिक्षण के मार्ग में कोई बाधा न आने दो, उसी जगह यह भी पढ़ा कि ताया के चुम्बन आग से भी अधिक जलते हुए और शहद से अधिक मीठे हैं।' तुम्हारे कारण ही आज एक दार्शनिक दर्शन के ग्रन्थ का यह मतलब लगा रहा है। यह सच है कि हम सब अपने विचारों की झलक दूसरों के विचारों में खोज निकालते हैं और इसी तरह पुस्तकें पढ़ते हैं जैसे मैं अभी पढ़ रहा था, थोड़ा सा .....

वह कुछ मुन नहीं रही थी और उसका ध्यान अभी उसी समाधि पर लगा हुआ था। उसे उसीस लेते हुए सुनकर निशियस ने उसे चूम लिया और कहा— "उदास न हो प्रिये ! दुनिया को एकदम भूल जाने पर ही वास्तविक सुख मिलता है। उसके उपाय हैं। आओ, हम जीवन से छल करें, यह छलने के ही योग्य है। आओ, हम दोनों प्यार करें।"

किन्तु ताया ने उसे अलग करते हुए कहा— "प्यार ! तुमने कभी किसी को प्यार नहीं किया। मैं तुम्हें प्यार नहीं करती, नहीं करती। मैं तुमसे घृणा करती हूँ। चले जाओ, मुझे तुमसे घृणा है। मैं सभी आनन्द-प्रेमियों और धनियों से घृणा करती हूँ। जाओ, चले जाओ !.... इस दुनिया में अच्छे केवल वही हैं जो अभाग्य हैं। जब मैं बच्ची थी,

तब मैं एक हब्शी गुलाम को मानती थी। उसे क्राँस पर चढ़ा दिया गया। वह भलामानस था, उसमें प्यार कूट-कूट कर भरा था, वह जीवन के रहस्यों से परिचित था ! तुम तो उसके चरण धोने योग्य भी नहीं हो सकते ! चले जाओ। मैं तुम्हें फिर नहीं देखना चाहती।”

उसने पृथ्वी पर औंधे मुँह पड़े हुए रो-रोकर रात बिता दी। उसने भविष्य में संत थियोडोर की भाँति ही दरिद्र और सादा जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया।

दूसरे दिन फिर वह उन्हीं आनन्दों में लीन हो गई जिनकी उसे बान थी। वह जानती थी कि उसका वर्तमान सौंदर्य स्थायी न होगा, तब भी वह उसका समूचा आनन्द और उपयोग प्राप्त कर लेना चाहती थी। थियेटर में वह और भी मनोयोग से अभिनय करने लगी और शिल्पियों, चित्रकारों और कवियों की कल्पनाओं को सजीव रूप देने लगी। अभिनेत्री ताया के रूप, अंग-विन्यास और गतियों में विद्वानों और दार्शनिकों को उस स्वर्गीय संगीत की छाया मिली जो संसार में व्याप्त है और जिसकी पवित्रता में एक शोभा है। वे कहते हैं—‘ताया की प्रत्येक गति में गणित की सत्यता है।’ अशिक्षित, दीन-दरिद्रों को वह अपना दर्शन देती और वे उसकी स्वर्गीय उदारता के लिए उसकी प्रशंसा करते। फिर भी, इन तमाम प्रशंसाओं के होने पर वह दुःखी रहती और मृत्यु से पहले से अधिक भयभीत रहती। उसकी परेशानी किसी वस्तु से दूर न होती थी। उसका मन अपने घर और बागों में भी न लगता था, जो अपनी सुन्दरता के लिए नगर भर में विख्यात थे।

काफ़ी धन व्यय करके फ़ारस और भारत से पेड़ लाकर अपने बाग में उसने लगाये थे। एक जल-धारा से वे सींचे जाते थे और एक कुशल शिल्पी के बनाये हुए खम्भों की क़तार और क़त्रिम पहाड़ियाँ भील के पानी

में झलमलाती रहती थीं। उस झील में तटवर्ती मूर्तियों का प्रतिबिम्ब भी दीख पड़ता था। बाग के बीच में परियों का कुंज था। यह नाम उन तीन स्त्रियों की प्रतिमाओं के कारण पड़ा था जो कुंज की ड्योड़ी पर बनी हुई थीं। स्त्रियाँ नहाने के लिए अपने वस्त्र उतारती-मी लगती थीं। वे सजीव लगती थीं मानों मुँह फिराकर देख रही हों कि कहीं कोई उन्हें वस्त्र उतारते देख तो नहीं रहा है। कुंज में आनेवाला प्रकाश पानी की सतह से होकर आता था जिससे कम और रंगीन हो जाता था। चारों ओर दीवारों पर पवित्र कुंज की भाँति ही पुष्पविनान, मालायें और प्रतिज्ञापूर्ति के लिए समर्पित चित्र लटके हुए थे। इन सबमें ताया का सौंदर्य मूर्तिमान् था। वही कृष्णोत्पादक और हास्यजनक रंगीन चेहरे भी थे; थियेटर के दृश्यों के चित्र, विचित्र मूर्तियाँ और पौराणिक जीवों के चित्र भी टँगे थे। बीच में एक खम्भे पर हाथीदाँत की एक मूर्ति रक्खी थी जो प्राचीन कारीगरी का आश्चर्यजनक प्रमाण थी। यह भेंट निशियस ने दी थी। एक खाली जगह में काली बकरी की संगमूसा की मूर्ति रक्खी हुई थी जहाँ से उसकी चमकती हुई छोटी आँखें दीख पड़ रही थी। उसके थनों के पास स्फटिक के बने छः बच्चे खड़े थे, पर वह अपने उतावले पाँवों से पहाड़ियों पर उचक जाना चाहती थी। फ़र्श पर ईरानी कालीनों और बेल बूटे कढ़े तकिए तथा शेर की खालें पड़ी हुई थी। अप्रत्यक्षरूप से धूप जल रहा था। सबके पीछे बैंगनी छाया में, एक बड़े कछुए के मुनहरे नख चमक रहे थे जिसे उलटा कर देने पर ताया का बिछावन बन जाता था। वहाँ प्रतिदिन, जलधारा के कलकल और धूप और फूलों के बीच ताया विश्राम करती थी। भोजन की प्रतीक्षा करती हुई वहीं अपने मित्रों से बातचीत करती या थियेटर अथवा बीते दिनों की बात सोचती रहती।

आज थियेटर के बाद वह परियों के कुंज में विश्राम कर रही थी। आइने में वह अपने सौंदर्य की अवतति के प्रथम चिह्न देख रही थी और उसे भय हो रहा था कि सफेद बालों और भुर्रियों का काल अब आने ही वाला है। उसने अपने को यह कहकर बहलाने की व्यर्थ कोशिश की कि एक मंत्रविशेष के साथ कुछ जड़ी-बूटियों के हवन से मेरी तरौताजगी फिर लौट आयेगी। बाहर से जैसे एक निर्दय आवाज आई—“ताया, तू बुढ़िया हो जायगी, तू वृद्ध हो जायगी।”

उसके माथे पर भय के कारण पसीना आ गया। तब उसने पुनः धीरे से आइने में अपने को देखा और अभी तक अपने को सुन्दरी और प्रेम के योग्य देखकर, हँसकर मन ही मन कहा—“अलेक्जेंड्रिया में एक भी ऐसी स्त्री नहीं है जो शरीर की कोमलता, लचक और बाहों की सुघराई में मेरे बराबर हो! अरे आइने, बाँहें ही तो प्यार की जंजीरें हैं!”

वह यह सोच ही रही थी कि उसने एक अजनबी को अपने सामने खड़े देखा। उसकी आँखें जल रही थीं, दाढ़ी बिखरी हुई थी और वह कसीदे कढ़ा कपड़ा पहने हुए था। ताया के हाथ से आइना छूट पड़ा और वह डर से चीख उठी।

पैफनागस स्थिर खड़ा रहा और उसके सौंदर्य को देखकर अन्तःकरण से प्रार्थना की—“भगवान्, ऐसी शक्ति दो कि इस नारी के मुख-दर्शन से मेरे मन में वासना न जागे वरन् तुम्हारा यह दाम अपने काम में और भी दृढ़ हो।”

फिर ताया से कहा—“मैं दूर देश का रहनेवाला हूँ और तुम्हारे सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर तुम्हारे पाम आया हूँ। लोगों का कहना है कि तुम बहुत कुशल अभिनेत्री हो और तुमसे बढ़कर आकर्षक दूसरी स्त्री नहीं है।

तुम्हारी सम्पत्ति और प्रेम रहस्यों की अजब अजब कथायें कही जाती हैं। ये कहानियाँ उस प्राचीन 'रोडोप' की याद दिलाती हैं जिसकी आश्चर्यजनक गाथा नील नदी के सभी मल्लाह जानते हैं। इसी लिए मुझे तुम्हें जान लेने की इच्छा हुई। मैं देख रहा हूँ कि जो कुछ सुना था, तुम उससे भी अधिक हो। तुम्हें जितना चतुर और सुन्दर कहा जाता है, तुम तो उससे हजारगुना ज्यादा हो। अब तो तुम्हें देखकर मैं समझ रहा हूँ कि तुम्हारे पास बिना शराबियों की तरह मतवाला इने पहुँच पाना असम्भव ही है।"

यद्यपि ये शब्द व्यंग्यसने थे, पर साधु ने पवित्र उत्साह से भरकर इन्हें मन्त्रों के हृदय से कहा। ताया ने खुश होकर इस विचित्र व्यक्ति की ओर देखा कि जिससे पहले उसे डर लगा था। पैफनाशस के नीरस और असभ्य रूप और मलिन तीव्र दृष्टियों से उसे आश्चर्य हुआ। अपने जाने सुने सभी व्यक्तियों से सर्वथा भिन्न इस व्यक्ति के जीवन के बारे में जानने की वह उत्सुक हो उठी। उसने नम्रता से उसका उपहास करने हुए कहा—“अपरिचित, आप प्रशंसा करने में बड़े चतुर मालूम होते हैं। ज़रा सावधान रहिएगा, कहीं मेरी चितवनें आपके आरुपाय न हो जायें। मुझे प्रेम करने में होशियार रहें!”

पैफनाशस ने कहा—“ताया, मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ। अपने जीवन और अपनी आत्मा से भी अधिक मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम्हारे ही लिए मैंने अपना वन-जीवन त्यागा, तुम्हारे ही कारण मेरे मौनव्रती अधरो से सांसारिक और अधार्मिक शब्द निकले हैं, तुम्हारे ही कारण मुझे वह सब देखना पड़ा जो नहीं देखना था, वह सब सुनना पड़ा, जिसे सुनने की हमें मनाही है। तुम्हारे लिए मेरी आत्मा चिन्तित है, मेरा हृदय उन्मुक्त है और जलधारा की भाँति मेरी विचारधारायें उसम

मे निकल रही हूँ। तुम्हारे ही लिए मैंने कीड़े-मकोड़े और भूतों से भरे जंगल की रात और दिन यात्रा की है, तुम्हारी ही वजह से मुझे जहरीले साँप बिच्छुओं के वनों में नंगे पाँव चलना पड़ा है। हाँ, मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ, पर उन व्यक्तियों की तरह नहीं, जो पाशव वासनाओं से ग्रसित होकर भूखे भेड़िये या उत्तेजित साँड़ों जैसे तुम्हारे पास आते हैं। तुम उनके लिए ऐसी ही हो जैसे मृग सिंह के लिए होता है। ताया, उनका पाशविक प्रेम तुम्हारी आत्मा को खा रहा है। मैं तुम्हें हृदय से सत्य के नाम पर, ईश्वर के नाम पर हमेशा मे प्रेम करता हूँ। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए जो भाव हैं वे सच्चे और स्वर्गीय उदारता से ओत-प्रोत हैं। मैं तुम्हें शराब की मादकता और अल्पकालीन रात के सुख-स्वप्नों से बड़ी चीज़ देने आया हूँ। मैं तुम्हें पवित्र प्रेमोत्सवों और अनन्त सम्मिलन का सुख देने आया हूँ। मैं जो परममुख तुम्हें दे रहा हूँ, वह अनन्त है, कल्पना से परे है, वर्णनातीत है। यदि इस दुनिया के भाग्यवान् कोई उसकी छाया तक देख लें तो आश्चर्य से मर जायँ।”

ताया ने अविश्वासियों की भाँति हँसकर कहा—“मित्र, मुझे यह अदभुत प्रेम दिखाओ। जल्दी करो, लम्बी चौड़ी बातों से मेरे सौंदर्य को चोट लगती है, एक पल भी देर न करो। तुम्हारी कही हुई सुख-शान्ति जानने को मैं अधीर हूँ। सच कहूँ, मुझे भय है कि मैं वह कभी न पा सकूँगी और तुम्हारे वचन शब्दजाल-नाथ ही रह जायँगे। सुख का वादा कर देना आसान है, देना महाकठिन है। हर व्यक्ति में कोई न कोई गुण होता है। मेरा विश्वास है, तुमने कोई कल्पित खोज की है। तुम एक अज्ञात प्रेम की बात कर रहे हो। इतने दिनों से चुम्बन आलिंगन का अनुभव करते करते मैं प्रेम को समझ गई हूँ। अभी प्रेम

का कोई रहस्य रह गया हो, तो यह आश्चर्य ही है। इस बारे में प्रेमी लोग दार्शनिक जादूगरों से ज्यादा जानते हैं।”

“ताया, मन्नाक न उड़ाओ। मैं सचमुच ही वह अज्ञात प्रेम तुम्हें दे रहा हूँ।”

“मित्र, तुमने देर कर दी। मैं प्रेम को पूरी तरह जान गई, सब प्रेम पहचान गई।”

“जो प्रेम मैं तुम्हें दे रहा हूँ वह गौरवमय है। जो प्रेम तुम जानती हो वह लज्जाजनक और घृणित है।”

ताया ने क्रोध से पैकनाशस की ओर देखा, उसके माथे पर बल पड़ गये। उसने कहा—“अपमर्शित, गृध्र-स्वामिनी का अपमान तुम कैसे कर रहे हो? मेरी ओर देखो, बोलो, क्या मैं लज्जित और घृणित जीव-जैसी लगती हूँ? नहीं, मुझे अपने जीवन पर घृणा नहीं है। मेरी तरह और भी स्त्रियाँ रहती हैं, वे भी अपने जीवन पर लज्जित नहीं हैं, भले ही वे मुझसे कम धनी और सुन्दरी हों। सुख मेरे पाँवों पर लोटता है, सारी दुनिया यह बात जानती है। मेरी शक्ति दुनिया के सम्राटों से भी अधिक है। उन्हें मैंने अपने पाँवों पर लोटते देखा है। मेरी ओर देखो, मेरे इन नन्हें पाँवों को देखो, इन्हें चूम पाने के सौभाग्य के लिए हजारों व्यक्ति अपना रुधिर बहा देंगे। मैं महान् नहीं हूँ और दुनिया में मेरा बहुत बड़ा स्थान नहीं है। देवमन्दिर के शिखर पर बैठकर मुझे सड़कों पर चलते जो लोग देखते हैं, उनके लिए मैं एक कण-मात्र हूँ, पर इसी कण ने लोगों में जितनी निराशा, रुदन, घृणा और अपराध कराये हैं उनसे पहाड़ भी दब जायगा। जब मेरे चारों ओर यश और कीर्ति का गान हो रहा है उस समय मैं लज्जा और घृणा की बात करूँ, क्या यह मेरा पागलपन न कहा जायगा?”

“मनुष्य जिसे यश और गौरव कहते हैं भगवान् के लिए वह ‘पाप’ है। ताया हम बिल्कुल भिन्न देशों में जन्मे और पले हैं। हमारी भाषा और हमारे विचार एक नहीं हैं, यह आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन ईश्वर गवाह है, मैं तुमसे सहमत होना चाहता हूँ और तब तक तुम्हें न छोड़ूंगा जब तक हमारी भावनायें एक न हो जायें। मुझे अपनी जलनी हुई वाणी से कौन उत्साहित करेगा जो तुम्हें मोम की तरह पिघला देगी और मेरी इच्छा की उँगलियाँ तुम्हें मन मुताबिक गढ़ लेंगी? प्राणों से प्यारी ताया, कौन-सी शक्ति तुम्हें मुझे समर्पित कर देगी जिससे मेरी प्रेरणा तुम्हें नया रूप दे सके? तुम्हें नया मौंदर्य प्रदान कर सके और तुम आनन्द से पुकार उठो—‘आज, आज ही मेरा पुनर्जन्म हुआ है।’ मेरे हृदय से वह निर्मल स्त्रोत कौन निकालेगा जिसमें स्नान करके तुम अपनी मूल पवित्रता प्राप्त कर सको? कौन मुझे वह जलधारा बना देगा, जो भारी लहरों में लोटकर तुम्हें अनन्त जीवन प्रदान करेगी?”

ताया का क्रोध चला गया था। उसने सोचा—“यह व्यक्ति अनन्त जीवन की बात करता है और इसकी वही हुई बातें तिलिस्म-सी लगती हैं। यह निस्सन्देह जादूगर है और वृद्धावस्था और मृत्यु के निराकरण का उपाय जानता है।”

उसने अपने को पैफनाशस को समर्पित कर देने का निश्चय किया इसलिए भय त्याग वह कुछ कदम पीछे हट गई और कुंज के पीछे जाकर बिछावन के कोने पर बैठ गई। अपनी छाती पर उसने पुनः कुशलता से कपड़ा ठीक कर लिया, तब स्थिर और मौन होकर, आँखें भुकाये प्रतीक्षा करने लगी। उसके कपोलों पर अलकों की मधुर छाया पड़ रही थी। मुद्राओं से लज्जा टपक रही थी; उसके खुले पाँव नीचे लटक रहे थे और वह नदी के किनारे बैठी हुई बालिका-सी जान पड़ती थी।

पैफनाशस उसकी ओर देखता रहा, हिला नहीं। उसके घटने काँप रहे थे, मुंह में जीभ सूख गई थी। मस्तिष्क में डरावना भन-भन शब्द होने लगा था। आँखों के आगे अँधेरा छा गया था। सर्वत्र बदल-सा दीख पड़ने लगा था। उसने सोचा, इस तरह उसकी आँखों के आगे अँधेरा करके स्वयं प्रभु मसीह इस स्त्री को उससे छिपा रहे हैं। प्रभु मसीह के इस सहायता से आश्वस्त और दृढ़ होकर उसने साधुसुलभ स्वर में कहा—“यदि तुम अपने को मुझे सौंप दोगी तो क्या परमात्मा से दूर हो जाओगी?”

ताया ने सिर हिलाया। कहा—“परमात्मा! कौन उससे कहता है कि वह परियों के इस कुंज पर सदैव दृष्टि रखे? यदि हम उसे कष्ट पहुँचाने हैं तो वह यहाँ से चला क्यों नहीं जाता? लेकिन हम क्यों उसे दुःख पहुँचायें? उसने हमें बनाया है, फिर हमारे आचरण से वह विस्मित और क्रुद्ध क्यों होता है? हम वैसा ही तो आचरण करते हैं जैसा स्वभाव उसने हमें दिया है! उसके बारे में अकसर बहुत कुछ कहा जाता है। उसके ऐसे विचार बताये जाते हैं जो कभी उसके मन में नहीं थे। तुम उसे पूरी तरह जानते हो? उसकी ओर से मुझे उपदेश देनेवाले तुम कौन होते हो?”

पैफनाशम ने उत्तर में अपना मँगनी का वस्त्र आधा खोलकर अपना लबादा दिखाते हुए कहा—“मैं एण्टिनोय का साधु पैफनाशस हूँ और पवित्र वन से आ रहा हूँ। उस परमपिता ने मुझे संसार से अलग कर रखा है। संसार के मनुष्यों के लिए मैं नहीं समान हूँ। तुम्हारी छाया मेरे शान्त आश्रम में मेरे सामने प्रकट हुई। मैंने देखा कि तुम पाप और दुराचार में निमग्न हो और तुम्हारी मृत्यु नजदीक है। इसी लिए मैं तुम्हें समाधि से जगाने आया हूँ, पुकारकर कह रहा हूँ ‘ताया, उठो, जागो।’

पैफनाशस का नाम और साधु और पुरोहित शब्द सुनकर ताया डर से पीली पड़ गई। उसके बाल बिखर गये, हाथ जोड़कर रोती हुई वह पैफनाशस के चरणों पर गिर पड़ी। कहा—“मुझे क्षमा करें। आप क्यों आये हैं, क्या चाहते हैं? मैं जानती हूँ, वनसेवी पवित्रात्मायें मुझ जैसी स्त्रियों से घृणा करती हैं, जो लोगों के मनोरंजन की सामग्री हैं। मुझे भय है, आप मुझसे घृणा करते हैं और मेरा अनिष्ट करना चाहते हैं। आप जाइए, मुझे आपकी शक्ति पर अविश्वास नहीं है, किन्तु पैफनाशस आप न तो मुझे नीच समझें, न मुझसे घृणा करें। औरों की तरह मैं कभी आप लोगों की स्वेच्छा से ग्रहण की हुई दरिद्रता पर हँसती नहीं। आप भी मेरी सम्पत्ति को पाप और अपराधजनित न समझें। मैं सुन्दरी हूँ और एक कुशल अभिनेत्री हूँ। मैंने अपने स्वभाव के अनुकूल ही काम किया है। जो मैं आज हूँ उसी के लिए बनी थी। लोगों के रिझाने के ही लिए मेरा जन्म हुआ है। किन्तु आपने अभी कहा है कि आप मुझे प्रेम करते हैं। अपनी सिद्धियों से मेरा अहित न करें। मेरे ऊपर ऐसे मंत्र न प्रयोग करें जिससे मेरी सुन्दरता नष्ट हो जाय या मैं पत्थर की मूर्ति बन जाऊँ। मुझे भयभीत न करें, मैं स्वयं बहुत डरी हुई हूँ। मुझे मरने न दीजिए, मुझे मौत से बहुत डर लगना है।”

पैफनाशस ने उसे उठाने का संकेत किया और कहा—“अच्छी, अपने को संभालो। मैं तुमसे घृणा नहीं करूँगा। मैं तो परमात्मा की ओर से तुम्हारे पास आया हूँ। उस परमात्मा की ओर से जो पवित्र स्त्रियों के हाथ का पानी पीता था और उनके घर में भोजन करता था। मैं स्वयं पाप से मुक्त नहीं हूँ कि तुम पर पत्थर फेंकूँ। मैंने स्वयं ईश्वरप्रदत्त कृपाओं का बहुधा दुरुपयोग किया है। क्रोध के कारण नहीं, बल्कि

दया के कारण ही मैं तुम्हारे पास आया हूँ । मैंने निष्कपटभाव से तुमसे प्रेम की बातें कही हैं; क्योंकि हृदय के पवित्र उत्साह से ही मैं तुम्हारे पास आया हूँ । दया की ज्वाला मेरे मन में जल रही है और यदि तुम्हारी आँखें, जो अभी तक केवल मानव-शरीर के गन्दे दृश्य देखने की ही आदी रही हैं, वस्तुओं को उनके आध्यात्मिक रूप में देख सकतीं तो तुम देखतीं कि मैं उस जलती हुई भाड़ी की एक डाल हूँ जो ईश्वर ने मूसा को पहाड़ पर दिखाई थी; ताकि वह सच्चे प्रेम को जान सके । सच्चा प्रेम, जो हमें खा नहीं जाता वरन् हमें जलाकर राख की ढेरी कर देने के बदले जहाँ पड़ता है वहाँ सदा के लिए शीतल और सुगन्धित कर देता है ।”

“साधु, मैं आप पर भरोसा करती हूँ । अब आपसे घृणा या छल का भय नहीं रह गया । मैंने तपोभूमि के साधुओं की बहुत कथायें सुनी हैं । एन्टानी और पाल की जो कहानियाँ मैंने सुनी हैं, वे अद्भुत हैं । आपका नाम भी मुझे अज्ञात नहीं था और मैंने सुना है कि छोटे होते हुए भी आप गुणों में पुराने साधुओं से भी बढ़कर हैं । आपसे परिचय न होने पर भी मैं आपको देखते ही समझ गई कि आप कोई साधारण आदमी नहीं हैं । बतलाइए, क्या आप मेरे लिए वह काम कर सकते हैं जो संसार भर के सिद्ध, महात्मा, ओम्मे, तांत्रिक और जादूगर नहीं कर सकते ? साधु, यदि आप मुझे प्रेम करते हैं तो क्या मृत्यु से मुझे बचा सकते हैं ?”

“ताया, जीने की इच्छा रखनेवाले अवश्य जीते हैं । घृणित आनन्दों को त्याग दो, जिनमें मृत्यु निहित है । शैतानों के पंजे से अपने शरीर को मुक्त कर लो जो भगवान् ने अपने पवित्र श्वास से बनाया है, नहीं तो वे उसे निर्दयता से जलाते रहेंगे । तुम्हारी जीवनी शक्ति

समाप्त हो गई है, आओ और एकान्त के पवित्र सोतों से फिर शक्ति प्राप्त करो, बन में छिपे हुए, स्वर्गीय सोतों का जल पान करो। चिन्तित आत्मा, आओ और अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त करो। आनन्द की भूखी ताया, आओ, सच्चा आनन्द प्राप्त करो और दरिद्रता, विराग, आत्मविस्मृति और त्याग का सुख भोगो। आज की मसीह की विरोधी, कल तू उनकी प्रेयसी होगी, उनके पास चल। तू स्वयं पुकारकर कहेगी—‘मुझे आज ही प्रेम मिला।’

ताया दूर की बातें सोच रही थी। उसने पूछा—‘साधु, अगर मैं अपना आनन्द त्यागकर तपस्या करूँ, तो क्या यह सच है कि स्वर्ग में मेरा पुनः जन्म होगा और मेरा सौंदर्य ज्यों का त्यों रहेगा?’

‘ताया, मैं तुम्हारे लिए अनन्त जीवन लाया हूँ। मेरा विश्वास करो, मैं जो कहता हूँ, वह सत्य है।’

‘यह सच है, इसका प्रमाण क्या है?’

‘नबी इसकी साक्षी देंगे, और धर्मपुस्तक और अलौकिक दृश्य इसके प्रमाण होंगे।’

‘साधु, मैं आपका विश्वास करती हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ कि मुझे इस दुनिया में सुख नहीं मिला। रानियों से बढ़कर मेरा भाग्य था; फिर भी जीवन में मुझे बहुत दुःख और कष्ट मिले, और मैं अब जीवन से ऊब गई हूँ। सभी स्त्रियाँ मेरे भाग्य से ईर्ष्या करती हैं, और मुझे उस दँतटूटी बुढ़िया के भाग्य पर ईर्ष्या होती है जो मेरे बचपन में, शहर के द्वार पर बैठी मिठाइयाँ बेचा करती थी! कितनी ही बार मेरे मन में यह खयाल उठता है कि केवल दरिद्र व्यक्ति ही सुखी, प्रसन्न और पवित्र होते हैं। दीन-हीन और विनम्र जीवन में बड़ी शान्ति है। साधु, आपने मेरे हृदय की सोई हुई लहरें तह से उठाकर

ऊपर कर दी हैं। आह ! मैं क्या विश्वास करूँ ? मैं क्या होनेवाली हूँ ? ज़िन्दगी क्या है ?

ताया जब यह कह रही थी, पैकनाशस ज्योतिदीप्त हो गया, उसके मुख पर अनन्त आनन्द की झलक व्याप्त हो गई। उसने कहा—“सुनो, मैं तुम्हारे यहाँ अकेले नहीं आया हूँ। कोई और मेरे साथ आया है, जो यहाँ मेरे बगल में खड़ा है। उसे तुम देख नहीं सकतीं; क्योंकि अभी तुम्हारी आँखों में उसे देख पाने की शक्ति नहीं है। किन्तु जल्दी ही तुम उसका तेजोमय रूप देखोगी और कह उठोगी—‘यही एकमात्र प्रेम के योग्य है। अभी यदि उसने मेरी आँखों पर अपना कोमल करन रख दिया होता, ताया, तो मैं अब तक शायद तुम्हारे साथ ‘पाप’ कर चुका होता, मैं स्वयं बहुत कमजोर और दुरात्मा हूँ। उसने हम दोनों को बचाया। जितना वह शक्तिशाली है उतना ही दयालु भी है और उसका नाम है रक्षक। दाऊद और सिबिल जैसे महात्माओं ने संसार में उसके आगमन की सूचना दी थी, चरवाहों और सिद्धों ने पालने में ही उसकी पूजा की थी, फ़रीसियों ने उसे त्रास पर चढ़ाया, पवित्र स्त्रियों ने उसे दफ़नाया, नबियों ने उसका रहस्य दुनिया पर प्रकट किया, शहीद उसके साक्षी हैं। यह जानकर कि तुम मृत्यु से डरती हो, मैं तुम्हारे यहाँ, तुम्हें मृत्यु से बचाने आया हूँ। प्रभु मसीह, क्या तुम उस समय मेरे सामने उसी रूप में नहीं अवतरित हुए जिस रूप में उन दिनों गैलिली निवासियों के सामने प्रकट हुए थे ? जब तुम्हारे साथ ही स्वर्ग से उतरनेवाले तारे पृथ्वी के इतने समीप आ गये थे कि बेथेलहेम की छतों पर, माँ की गोद में खेलते हुए भोले बालक, उन्हें हाथों में पकड़ लेते थे। क्या इस समय भी, प्रभु मसीह, तुम हमारे साथ नहीं हो और अपने अमूल्य शरीर को नहीं दिखा रहे हो ?

क्या तुम्हारा मुख यहाँ प्रकट नहीं है और तुम्हारे गालों पर बहने-वाले आँसू सच्चे आँसू नहीं हैं? हाँ, इन अश्रुमुक्ताओं को लेने के लिए अनन्त न्याय का देवदूत खड़ा है, और ताया की आत्मा की मुक्ति इन्हीं से होगी। मसीह, क्या तुम यहाँ नहीं हो? तुम्हारे पूजनीय अघर कुछ कहने के लिए खुले हुए हैं; तुम बोल नहीं पा रहे हो। बोलो, मैं सुन रहा हूँ। और ताया, तुम.....तुम उस मुक्तिदाता की बात सुनो जो वह खुद तुमसे कह रहा है। वही बोल रहा है, मैं नहीं। वह कह रहा है—‘ओ मेरी मेष सुन्दरी, मैं बहुत दिनों से तुम्हें खोज रहा था। अन्त में पा ही गया। अब मुझसे दूर न भागो, मेरा हाथ पकड़ो और मैं तुम्हें कन्धे पर बिठाकर स्वर्गलोक में ले चलूँगा।’ आओ ताया, मेरी प्रिय, आओ और मेरे साथ रोओ।”

पैफनाशस ध्यानमग्न हो घुटनों के बल बैठ गया।

ताया ने उसके मुख पर मसीह का सजीव रूप देखा।

उसने सिसकते हुए कहा—‘ओ मेरे बचपन, ओ मेरे दयालु पिता एम्स, सन्त थियोडोर! मैं उस समय ही क्यों नहीं मर गई जब तुम मुझे प्रातःकाल के समय अपने वस्त्रों में छिपाये, बप्तिस्मा के बाद लिये जा रहे थे?’

पैफनाशस यह कहते हुए उसकी ओर बढ़ा—“तुम्हारा बप्तिस्मा हो चुका है? हे भगवान्, हे परमपिता! मैं अब उस शक्ति को समझा जो मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित कर खींच लाई। अब मैंने समझा कि तुम क्यों मेरी आँखों को इतनी प्रिय और सुन्दर लग रही थीं। उस बप्तिस्मा के जल का ही यह प्रभाव था जो मैं अपना वन छोड़ तुम्हें संसार के विषमय वातावरण में ढूँढ़ने निकला। निःसन्देह, तुम्हारे शरीर को पावन करनेवाले बप्तिस्मा के उस जल की एक

बूंद मेरे माथे पर भी पड़ी थी। आओ बहन, अपने भाई का शान्तिमय चुम्बन स्वीकार करो।”

साधु ने उस वेश्या ताया के माथे को चूम लिया।

पैफनाशस चुप हो रहा, जिससे भगवान् स्वयं बोलें। परियों के कुंज में जलधारा और ताया की सिसकियों के शब्द के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं हो रहा था।

वह रो रही थी। आँसू लगातार बह रहे थे। उसी समय उसका हबशी नौकर वस्त्र, सुगन्ध और मालायें आदि लेकर आया।

हँसने की चेष्टा करते हुए ताया ने कहा—“रोना ठीक नहीं है। आँसू से आँखें गीली हो जाती हैं और उनका स्वाभाविक रंग नष्ट हो जाता है। आज मैं मित्रों के साथ भोजन करूँगी। मैं चाहती हूँ कि उस समय मैं सुन्दर लगूँ; क्योंकि वहाँ स्त्रियाँ भी होंगी जो मेरा कुम्हलाया मुख ताड़ जायँगी। ये नौकर मुझे वस्त्र पहनाने आये हैं। आप जायँ पिता, इन्हें वस्त्र पहनाने दें। ये बहुत कुशल और कार्यपटु हैं, मुझे काफ़ी धन इन पर व्यय करना पड़ा है। यह जो अँगूठियाँ पहने हैं और जिसके मोती-से दाँत चमक रहे हैं, इसे मैंने प्रधान मंत्री की पत्नी से खरीदा है।

पैफनाशस ने पहले तो सोचा कि अपनी शक्ति भर ताया को भोजन-उत्सव में जाने से रोके। किन्तु उसने तुरन्त अपने को संभाल लिया और पूछा कि वहाँ किससे-किससे भेंट होगी?

ताया ने बताया कि वहाँ मेज़बान कोटा से भेंट होगी जो जलसेना के सेनापति हैं, निशियस और अन्य दार्शनिक भी होंगे, कवि कैलि-न्रेट्स, सेरापिस के प्रधान पुरोहित भी होंगे। धनी युवक भी होंगे जो घोड़े निकालने के शौकीन हैं, और स्त्रियाँ भी होंगी जिनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। जिनका एक-मात्र गुण उनका सौंदर्य है।

पैकनाशस ने जैसे ईश्वरीय प्रेरणा से कहा—‘ताया, इन सबके बीच ज़रूर जाओ। किन्तु मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे साथ इस भोज में चलूँगा और तुम्हारी बगल में चुपचाप बैठा रहूँगा।’

वह हँस पड़ी। दोनों दासियाँ उसे वस्त्र पहना रही थीं, तभी उसने कहा—‘तपोभूमि के एक तपस्वी को मेरे प्रेमी के रूप में देखकर लोग क्या कहेंगे?’

\*

\*

\*

पैकनाशस के साथ ताया ने भोजशाला में प्रवेश किया। अधिकतर अतिथि अर्द्धचन्द्राकार टेबुल के सामने, गद्देदार कुर्सियों पर, उढ़के हुए थे। टेबुल पर चमकती हुई तश्तरियाँ सजी थीं। टेबुल के बीच में चाँदी का एक जलपात्र रक्खा था, जिस पर चमड़े की बोटलें लिये चार मूर्तियाँ बनी हुई थीं। उन बोटलों से तली हुई मछलियों पर सिरका गिर रहा था, जिसमें मछलियाँ तैरती, सी लग रही थीं। ताया को देखकर चारों ओर से आवाजे आने लगीं:—

‘उदारता की देवी को अभिवादन!’

‘अपनी दृष्टि से ही सब भावनायें व्यक्त करनेवाली देवी को अभिवादन!’

‘देवता और मनुष्यों की दुलारी को अभिवादन!’

‘सबकी प्रेयसी को अभिवादन!’

‘उसको अभिवादन, जो दर्द भी है और दर्द की दवा भी है।’

‘स्वर्ग के मोती को अभिवादन!’

‘एलेक्जेंड्रिया के गुलाब को अभिवादन!’

इस प्रशंसा-प्रवाह के रुकने की वह अधीरता से प्रतीक्षा करती रही और तब उसने गृहस्वामी कोटा से कहा—‘लूशियस, मैं वनभूमि के

एक तपस्वी, एन्टिनोय के पुरोहित पैफ़नाशस को तुम्हारे पास लाई हूँ । यह एक महात्मा हैं और इनकी वाणी अग्नि की तरह ज्वलनशील है ।’

जलसेना के सेनापति लूसियस औरेलियस कोटा ने उठकर अभिवादन करते हुए कहा—‘ईसाईधर्म के अनुयायी पैफ़नाशस, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ । मैं इस साम्राज्यव्यापी धर्म का आदर करता हूँ । सम्राट् कान्स-टैन्टाइन ने तुम्हारे सहर्षामियों को राज्य के हितेच्छुओं में प्रथम स्थान दिया है । वास्तव में, लैटिन बुद्धिमानों को चाहिए कि तुम्हारे प्रभु मसीह को अपने देव-मन्दिरों में स्थापित करें । हमारे पूर्वजों की एक कहावत है जिसका अर्थ यह है कि प्रत्येक देवता में ईश्वरीय अंश होता है । लेकिन इन बातों को छोड़ो । अभी समय है । आओ, खायें-पीयें और आनन्द करें ।’

वृद्ध कोटा ने ये बातें बड़ी गम्भीरता से कहीं । अभी वे एक नई किस्म की नाव का नमूना सोचकर उठे थे और आज ही उन्होंने ‘कार्थेजना जाति के इतिहास’ का छठा भाग लिखकर समाप्त किया था । उनका दिन आज व्यर्थ नहीं गया, अतः वे स्वयं और देवताओं की ओर से इस समय निश्चित थे । उन्होंने फिर कहा—‘पैफ़नाशस, तुम्हें यहाँ कई लोग दिखलाई पड़ रहे हैं । ये सब सत्संग करने योग्य हैं । हरमोडोरस, सेरागिस के प्रधान पुरोहित, दार्शनिक डोरियन, निसियस जेनोथेमिस, कवि कैलिक्रेट्स और मेरे जवानी के सखा के दो पुत्र चीरिस और अरिस्तोबुलस हैं, और उनके पास ही फिलिना और ड्रोसिया हैं, जिनका सौन्दर्य प्रशंसा के योग्य है ।’

निसियस ने पैफ़नाशस का आलिंगन किया और कान में कहा—‘मित्र, मैंने तुमसे कहा था कि विलास की देवी वीनस अतीव शक्तिशालिनी है । तुम्हारे न चाहने पर भी वह अपनी शक्ति से तुम्हें यहाँ खींच लाई है ।

सुनो, तुम बहुत पवित्र व्यक्ति हो; किन्तु यदि उसे तुम देवताओं की माता जानकर न पूजोगे तो तुम्हारा पतन निश्चित है। गणित का प्राचीन विद्वान् मेलान्थस कहा करता था—‘बिना बीनस की सहायता के मैं त्रिभुज की व्याख्या भी नहीं कर सकता था।’

डोरियन, जो कुछ मिनटों से इस आगन्तुक को देख रहा था, एकाएक ताली पीटकर प्रशंसा में भर, कह उठा—‘मित्रो, ये वे ही हैं। इनकी दृष्टि, इनकी दाढ़ी, इनका लबादा, सब कुछ वही है। थियेटर में मैं इनसे मिला था जब ताया अपना नृत्य कर रही थी। ये एकदम विचलित हो उठे थे और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इनके मुख से क्रोध-सने शब्द निकले थे। ये एक बहुत बड़े आदमी हैं, ये हमें शाप देंगे, इनकी वाक्शक्ति अद्भुत है। अगर मार्क्स\* ईसाइयों का प्लेटो† है तो पैफ़नाशस डेमास्थेनीज़‡ हैं। एपिक्यूरस ने इन जैसों के बारे में सुना भी न होगा।

उधर फ़िलिना और ड्रोसिया अपनी आँखों से ताया को खाये जा रही थीं। वह अपने केशों पर फूलों का मुकुट पहने हुए थी। प्रत्येक फूल से उसकी आँखों का रंग प्रकट होता था। फूल उसकी चितवनें जान पड़ते थे और उसकी आँखें चमकते हुए फूल। ताया की यह विशेषता थी, उसके शरीर पर सभी कुछ खिल उठता था। प्रत्येक वस्तु प्राणमय और संगीतमय हो जाती। उसका बैंगनी रंग का लबादा, जिस पर चाँदी के तार टँके थे, अतीव शोभामय था; किन्तु उसमें एक ऐसी उदासीनता भी थी

\*मार्क्स—एक नीतिज्ञ और मानव-चरित्र का ज्ञाता।

†प्लेटो—यूनान का सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक।

‡डेमास्थेनीज़—यूनान का बहुत बड़ा वक्ता।

जिसे ताया के कंगन और गले के हार भी दूर नहीं कर सकते थे। वस्त्रों का समस्त सौन्दर्य ताया के खुले गले और हाथों में केन्द्रीभूत होगया था। इच्छा न होते हुए भी फिलिना और ड्रोसिया को ताया के वस्त्रों की प्रशंसा करनी ही पड़ी, यद्यपि ताया से उन्होंने इस विषय में बात नहीं की।

फिलिना ने कहा—‘तुम कितनी सुन्दर हो? एलेक्जेंड्रिया आने के समय भी तुम इससे अधिक सुन्दरी नहीं रही होगी। लेकिन मेरी माँ, जिसने तुम्हें उस समय देखा था, कहती है कि तब भी तुम्हारा मुकाबला थोड़ी ही स्त्रियाँ कर सकती थीं।’

ड्रोसिया ने पूछा—‘तुम्हारा यह नया प्रेमी कौन है? जंगली जैसा लगता है। अगर हाथियों के भी चरवाहे हुआ करते तो वे ऐसे ही होते। ताया, तुम्हें यह भयंकर मित्र कहाँ मिल गया? यह खोहनिवासी जीवों में से तो नहीं है, जो पृथ्वी के नीचे रहते हैं और यमलोक के घुएँ से काले हो जाते हैं?’

लेकिन फिलिना ने ड्रोसिया के मुँह पर उँगली रखते हुए कहा—‘चुप रहो। प्रेम के रहस्य गुप्त रहते हैं और उनकी खोदविनोद करना मना है। रही मेरी बात, तो मैं तो इस व्यक्ति के अधरों से चुम्बित होने की बजाय एटना\* के जलते हुए मुख द्वारा चूमी जाना ज्यादा पसन्द करूँगी। किन्तु हमारी प्रिय ताया को, जो देवियों की तरह सुन्दरी और पूजनीय है, देवी की ही तरह सबकी याचनायें स्वीकार करनी चाहिए। हमारी तरह नहीं कि केवल सुन्दर व्यक्तियों की ही बात सुनें!’

---

\* एटना—सिसिली का पूर्ववर्ती एक ज्वालामुखी।

ताया ने उत्तर दिया—‘तुम दोनों ज़बान संभाल कर बातें करो। ये एक सिद्ध और जादूगर व्यक्ति हैं। ये धीरे कही हुई बातें और मनोगत भाव भी समझ लेते हैं। तुम्हारे सोते समय ये तुम्हारा हृदय निकाल लेंगे और उसके स्थान पर ‘स्पंज’ रख देंगे। दूसरे दिन पानी पीने के बाद दम घुटकर तुम लोग मर जाओगी।’

‘मित्रो ! अपनी-अपनी जगह बैठ जाइए। गुलामो, मधुवर्णी शराब ढालो।’

अपना प्याला उठाकर गृहस्वामी ने कहा—‘पहले सम्राट् और साम्राज्य की शुभेच्छा के लिए पियो। देश पहले है, देवताओं के भी पहले; क्योंकि देवता भी उसमें निहित रहते हैं।’

सभी अतिथियों ने भरे हुए प्याले अपने ओठों से लगाये। पैफ़नाशस ने ही नहीं पिया; क्योंकि कान्सटैन्स ने धर्म पर कष्ट ढाये थे और ईसाई अपना देश इस संसार में नहीं मानते।

डोरियन ने शराब पीकर धीरे से कहा—‘देश क्या वस्तु है? एक बहती हुई नदी ही तो है! इसके किनारे बदलते रहने हैं और हमेशा इसमें लहरें उठती रहती हैं!’

कोटा ने उत्तर दिया—‘डोरियन, मैं जानता हूँ कि तुम नागरिक बातों की अधिक परवाह नहीं करते और तुम्हारा खयाल है कि साधु को कार्यों से दूर रहना चाहिए, इसके विपरीत मेरा खयाल है कि एक महान् व्यक्ति को यही इच्छा सबसे बलवती होनी चाहिए कि वह राज्य में किसी ऊँचे पद पर अधिष्ठित हो। साम्राज्य भी कितनी सुन्दर वस्तु होती है!’ सेरागिस के प्रधान पुरोहित हर्मोडोरस बोले—“डोरियन ने अभी पूछा है, देश क्या है? मैं जवाब देता हूँ—‘देवताओं की बेदी और पूर्वजों के समाधि-स्तूपों का ही नाम स्वदेश है। स्मृतिचिह्नों

और आशाओं के सम्मिश्रण द्वारा एक व्यक्ति दूसरे का सहनागरिक होता है।”

युवक अरिस्तोबुलस ने हर्मोडोरस की बात काटी—‘सच कहता हूँ, मैंने आज एक बड़ा सुन्दर घोड़ा देखा, वह डेमोफ़न का है। पतला मस्तक है और सुन्दर कन्धे। मुर्गे की तरह गर्व से सिर उठाये हुए चलता है।’

लेकिन युवक चेरियस ने सिर हिलाकर कहा—‘अरिस्तोबुलस, जैसा तुम कहते हो, वैसा अच्छा तो वह नहीं है। सुम पतले-पतले हैं। टेवना ज़मीन छूता है। जल्दी ही वह लँगड़ा हो जायगा।’

उनका भगड़ा चल ही रहा था कि ड्रोसिया जोर से चीख पड़ी—‘ओह, अभी मैं कटार से भी बड़ा और तेज़ यह मछली का काँटा खाते-खाते बची ! भाग्य से, मैंने मौक़े पर इसे गले से निकाल लिया। देवताओं की मुझ पर कृपा है। वे मुझे प्यार करते हैं।’

निशियस ने हँसते हुए पूछा—‘क्या कहा ? देवता तुम्हें प्यार करते हैं ? अगर ऐसा है तब तो वे भी मनुष्यों की असमर्थता के भागीदार हैं। प्रेम को अनन्त कष्टों की भावना माननेवाले अवश्य उसके शिकार होते हैं। इससे मनुष्यों की दुर्बलता व्यक्त होती है। ड्रोसिया के प्रति देवताओं का प्रेम उनकी अपूर्णता का बहुत बड़ा सबूत है।’

ड्रोसिया इन बातों पर बहुत क्रोधित हो गई। कहा—‘निशियस, तुम्हारी बातें बेवकूफी से भरी हैं, जिनका कोई जवाब नहीं। यह तो तुम्हारा स्वभाव है। बातों को समझोगे नहीं और निरर्थक उत्तर दोगे।’

निशियस फिर हँसा—‘कहे जाओ, कहे जाओ ड्रोसिया ! चाहे जो कुछ कहो, हर बार तुम्हारा मुख खुलने पर हमें धन्यवाद देना ही होगा। तुम्हारे दाँत बहुत सुन्दर हैं।’

इसी समय एक गम्भीर वृद्ध व्यक्ति, जो वस्त्र भी ठीक से नहीं पहने था, मन्दगति और गर्वभरी मुद्रा से कमरे में आया और अतिथियों की ओर बढ़ा। कोटा ने उसे अपने ही कोच पर बगल में बिठा लिया। कहा—‘आओ यूक्राइटस, आओ ! क्या इस महीने में कोई नया निबन्ध लिखा ? अगर मेरा हिसाब सही है तो यह तुम्हारी कलम से निकला हुआ ‘बानबेवाँ निबन्ध’ है।’

यूक्राइटस ने अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उत्तर दिया—‘बुलबुल गाने के लिए बनी है और मैं देवताओं की स्तुतिगान के लिए।’

डोरियन—‘विरागियों के अन्तिम चिह्न यूक्राइटस को हम श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हैं। वे गम्भीर और वृद्ध हमारे बीच किसी प्राचीन प्रतिमा-सी लगते हैं। भारी भीड़ में भी वे अकेले रहते हैं और उनके मुख से कड़े हुए शब्द समझे नहीं जा सकते।’

यूक्राइटस—‘डोरियन, यह तुम्हारी भूल है। सत्य का दर्शन संसार से अभी लुप्त नहीं हुआ है। अलेक्जेंड्रिया, रोम और कुस्तुन्तुनिया में मेरे अगणित शिष्य हैं। बहुत-से गुलाम और सीज़र के कई भतीजे अभी जानते हैं कि कैसे अपने को नियन्त्रित किया जाय, स्वच्छन्द रहा जाय और विराग-द्वारा असीम सुख उठाया जाय। कइयों ने अपने को एपिकटेटस और मार्कस-सा बना लिया है। किन्तु अगर यह मान लिया जाय कि संसार से सत्कर्म सदा के लिए लुप्त हो गये, तब भी उससे मेरे आनन्द से क्या सम्बन्ध है ? उसके रहने या मिट जाने में मेरा क्या हाथ है ? डोरियन, अपनी शक्ति के बाहर के आनन्द की बात सोचना मूर्खों का काम है। भगवान् जो नहीं चाहते, मैं भी उसकी कामना नहीं करता। जो वे चाहते हैं, मैं उन सबकी इच्छा रखता हूँ। इसके अर्थ यही हैं कि मैं भी उन-सा हो जाता हूँ और उनके अमोघ सन्तोष में भाग लेता हूँ।

यदि सत्य नष्ट होता है तो हो, मैं भी यही चाहता हूँ। मेरी यह इच्छा मुझे आनन्द देती है। मेरे तर्क और साहस की यह परम साधना है। मेरी बुद्धि हर बात में दैवी बुद्धि का अनुसरण करती है। यह नक़ल असल से अधिक मूल्यवान् होती है, इसमें अधिक साधना और परिश्रम होता है।'

निशियस—'समझ गया। आप अपने को दैवी इच्छा के अधीन बतलाते हैं। किन्तु यूक्राइटस, यदि सत्कर्म चेष्टा तक ही सीमित हैं, और उस लगन तक ही सीमित हैं जिससे जेनो के शिष्य अपने को देव-समान समझने लगे तो बैल की तरह अपने को फुला लेने की चेष्टा करनेवाला मेढक विराग का सबसे ज्वलंत प्रमाण है।'

यूक्राइटस—'निशियस, तुम व्यंग्य कर रहे हो और सदा की तरह इस समय भी मसखरापन दिखा रहे हो। लेकिन, अगर वह बैल, जिसका जिक्र तुम कर रहे हो, एपिस\* की तरह ही कोई देवता है या भूगर्भस्थ बैल-सदृश है, और उस मेढक ने अपनी शुद्ध प्रेरणा से अपने को उसके बराबर कर लिया, तो क्या वह बैल से अधिक वास्तव में सत्कर्मी नहीं हो गया? उस छोटे जीव की प्रशंसा करने से कौन बाज़ आ सकता है?'

चार नौकरों ने टेबुल पर एक जंगली सुअर लाकर रक्खा, जिसके बाल भी अभी अलग नहीं किये गये थे। उसके चारों ओर मैदे के बने छोटे-छोटे सूअर थे जिससे जाहिर होता था कि वह शूकरी है।

जेनोथेमिस ने पैफनाशस की ओर घूमकर कहा—'आज एक अतिथि स्वेच्छा से हमारे यहाँ शरीक हुए हैं। निर्जन में अद्भुत जीवन व्यतीत

---

\* एक गाय की मूर्ति जो प्राचीन मिस्र में पूजी जाती थी।

करनेवाले विख्यात पैफ़नाशस ही हमारे मिहमान हैं, जो संयोग से ही यहाँ आ गये हैं ।’

कोटा—‘और बताओ ज़ेनोथेमिस ! पहला स्थान उन्हीं को मिलना चाहिए; क्योंकि वे बिना बुलाये आये हैं ।’

ज़ेनोथेमिस—‘प्रिय लूसियस, हमें विशेष उदारता से उनका सत्कार करना चाहिए। उन्हें क्या प्रिय है, यह जानना चाहिए। यह तय है कि ऐसा व्यक्ति विचारों की पवित्र गन्ध को मसालों की गन्ध की अपेक्षा अधिक पसन्द करता है। हमें निःसन्देह उनके धर्म की, क्रूस पर चढ़ाये गये मसीह की बातें करनी चाहिए, जिससे उन्हें प्रसन्नता हो। मुझे तो अपने तई वह धर्म बहुत प्रिय है; क्योंकि इसमें अगणित और भिन्न-भिन्न रूपक हैं। मैं खुशी से इस धार्मिक विवेचना में भाग लूँगा। अगर शब्दों का भाव समझा जा सके, तो सत्य इस धर्म में कूट-कूटकर भरा है, और ईसाइयों का धर्म-ग्रन्थ स्वर्गीय रहस्यों से परिपूर्ण है। किन्तु पैफ़नाशस, मैं यहूदी ग्रन्थों को इतना सम्मान नहीं दे सकता। जैसा कहा जाता है, उनकी रचना ईश्वरीय प्रेरणा से नहीं; बल्कि एक शैतान की प्रेरणा से हुई है। जेहोवा, जिसने ग्रन्थ लिखवाया, उन पिशाचों में से एक था जो नीचे स्तर पर रहते हैं और हमारे समस्त दुःख-कष्टों के मूल कारण हैं; किन्तु वह स्वयं अज्ञान और क्रूरता में सबसे बढ़कर था। दूसरी ओर, ज्ञान-वृक्ष के चारों ओर कुंडल मारकर लिपटा रहनेवाला सुनहरे पंखोंवाला सर्प प्रकाश और प्रेम से निर्मित हुआ था। इन दो शक्तियों का, प्रकाश और अन्धकार का, संघर्ष तो अनिवार्य ही था। सृष्टि के आरम्भ में यह संघर्ष आरम्भ हुआ। भगवान् अभी विश्राम भी नहीं ले पाये थे, आदम और हौआ, सृष्टि के प्रथम पुरुष और स्त्री, अदन के बाग़ में नंगे रहते थे और खुश थे। उनके दुर्भाग्य से, जेहोवा ने उन पर तथा हौआ के गर्भस्थ आगेवाली पीढ़ियों पर शासन

करने का विचार किया। न तो उसके पास गणित का ज्ञान था और न संगीत की शक्ति थी। विज्ञान से भी वह अनभिज्ञ था जो शासन करता है और कला से भी अपरिचित था जो हमें बल प्रदान करती है। उसने इन दो निरीह जीवों को पिशाच लीलाओं से, नीच अवरोधों से तथा मेघ-गर्जनों से भयभीत कर दिया। उसकी छाया अपने ऊपर देखकर आदम और हौआ एक दूसरे से चिपट गये और भय ने उनके प्रेम को दुगुना कर दिया। सर्प को उन पर दया आई और उसने उन्हें ज्ञान से आलोकित करने का निश्चय किया; ताकि ज्ञान के कारण वे मिथ्या-भय से मुक्त हो सकें। इस सत्कार्य के लिए कठिन साधना की आवश्यकता थी और उस पूर्व दम्पत्ति की दुर्बलता ने इसे और भी कठिन कर दिया। उस पवित्राशय सर्प ने फिर भी चेष्टा की। जेहोवा से छिपकर, जो सब कुछ देखने का बहाना करता था; पर जिसकी दृष्टि वास्तव में बहुत साफ न थी, वह उन दोनों के पास पहुँचा और अपनी छाती के सौन्दर्य और पंखों की शोभा से उनकी आँखें चकाचौंध कर दीं। तब उनके सामने अपने शरीर से वे सब आकृतियाँ बनाईं जो ग्रीकवासियों में अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं। आदम ने, हौआ की अपेक्षा इन आकृतियों का अधिक मनन किया। किन्तु जब सर्प ने बोलना और महान् सत्त्यों का निरूपण आरम्भ किया जो प्रत्यक्ष नहीं हो सकते, तो उसने देखा—लाल मिट्टी से निर्मित आदम अपनी कुन्द बुद्धि के कारण ज्ञान के ये सूक्ष्म विवेचन नहीं ग्रहण कर पाता है। इसके विपरीत हौआ, कोमल और विवेकशील होने के कारण, उन्हें सहज ही समझ लेती है। सर्प इसलिए उसके पति की अनुपस्थिति में उससे बातें करता, ताकि अपनी प्रथम.....'

डोरियन—'जेनोथेमिस, यहाँ बात काटता हूँ। पहले तो मैं तुम्हारी इस कथा में देव और दानव के संघर्ष की बात पाने की चेष्टा कर रहा

था। जेहोवा 'टाइफ़न' दानव जैसा लगता है और वह सर्प देवता जैसा। किन्तु तुम्हारी अभी की कही हुई बात से उस सर्प के ज्ञान या सदाशयता पर मुझे सन्देह होने लगा है। उसके पास यदि वास्तव में ज्ञान था तो क्या वह उसे एक स्त्री के मस्तिष्क में घँसाने की चेष्टा करता, जो उसे ग्रहण ही नहीं कर सकती? मैं समझता हूँ, वह भी जेहोवा की तरह अज्ञान और भूठा था। होआ सहज ही बहकाई जा सकती थी। इसलिए, उसने उसे चुना। आदम को वह अधिक बुद्धिमान् और समझदार समझता था।'

जेनोथेमिस—'डोरियन, समझने की कोशिश करो। चरम और पवित्र सत्यों की प्राप्ति चतुरता और बुद्धि से नहीं बल्कि आत्म-अनुभव से होती है। इसी लिए स्त्रियाँ, जो पुरुषों से कम चतुर; किन्तु अधिक सचेत होती हैं, ईश्वरसम्बन्धी ज्ञान को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। उनमें भविष्य वर्णन का गुण होता है। देवताओं को भी कभी-कभी स्त्रीरूप में, लम्बे लबादे पहने, व्यक्त किया जाता है, यह व्यर्थ नहीं है। तुम चाहे जो कहो डोरियन; पर अपने सत्य-ज्ञान की दीक्षा के लिए उस सर्प ने भदे और मूर्ख आदम की बजाय दूध और नक्षत्रों से भी उज्ज्वल होआ को चुनकर बुद्धिमानी ही दिखाई थी। उसने विनय से सर्प के उपदेश सुने और उस ज्ञान-वृक्ष तक जाने को प्रस्तुत हो गई, जिसकी शाखायें आकाश तक फैली हुई थीं और जिस पर ओस की तरह भगवान् की कृपा रहती थी। इस वृक्ष की पत्तियों से संसार की सभी आगन्तुक जातियों की भाषायें निकली थीं और सबका सम्मिलित स्वर सुन्दर संगीत की सृष्टि करता था। इस वृक्ष का फल खानेवाले प्रत्येक दीक्षित व्यक्ति को समस्त धातुओं का, हीरा मोतियों और वनस्पतियों का, और शारीरिक और नैतिक नियमों का ज्ञान हो जाता था; किन्तु वे फल

आग के थे और जो लोग कष्ट और मृत्यु से डरते थे वे उन्हें नहीं खा सकते थे। सर्प की शिक्षा के बाद हीआ व्यर्थ के भयों से मुक्त हो गई थी और उसने भगवद्ज्ञान देनेवाले उन फलों को चखना चाहा। आदम को वह प्यार करती थी; ऐसा न हो कि वह उससे हीन रह जाय। वह उसका हाथ पकड़कर इस अद्भुत वृक्ष के पास लाई। एक जलता हुआ सेब तोड़कर उसे काटा और आदम को दे दिया। दुर्भाग्य से जेहोवा भी उस समय उसी वाग में घूम रहा था। उसने उन्हें डराने की कोशिश की; किन्तु जब देखा कि वे बुद्धिमान् हो गये हैं, तब उसे बड़ा क्रोध आया। ईर्ष्यालु होने पर वह अधिक भयानक हो जाता है। अपनी तमाम सेना बटोरकर उसने इतना उत्पात मचाया कि ये दोनों कमजोर जीव एकदम डर गये। आदम के हाथ से फल गिर गया और हीआ ने उसके गले से लगकर कहा—‘मैं भी तुम्हारे साथ अनजान बनी रहूँगी और कष्ट उठाऊँगी।’ जेहोवा विजयी हो गया और आदम और हीआ को तथा उनके भविष्य की सन्तानों को सदा मूर्ख और भयभीत रखने लगा। उसकी कला को, जो अब केवल भारी उत्क्रान्ति पैदा करने तक ही सीमित हो गई थी, वह ज्ञानी सर्प ने समझ सका, यद्यपि वह भी संगीतज्ञ और गणितज्ञ था। जेहोवा ने मनुष्यों को अन्याय, अज्ञान और निर्दयता सिखाई और पृथ्वी पर बुराईयों का शासन बैठा दिया। उसने केन और उसकी सन्तानों का पीछा किया; क्योंकि वे उद्यमी थे। फिलिस्तीनवालों को उसने एकदम नष्ट कर दिया। क्योंकि उन्होंने सैद्धान्तिक कवितायें तथा ईसप की शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखीं। वह ज्ञान और सौन्दर्य का कट्टर दुश्मन था और मनुष्यजाति युगों तक उस पंखवाले सर्प की हार का इस तरह रो-रोकर प्रायश्चित्त करती रही। भाग्य से, ग्रीस-देशवासियों में भी विद्वान्जन थे, पाइथागोरस और प्लेटो जैसे, और उन्होंने अपनी प्रतिभा से उन विचारों

को पुनरुज्जीवित किया, जो जेहोवा के शत्रु, उस सर्प ने हीआ को सिखाने की चेष्टा की थी। उनमें भी सर्प की आत्मा थी और इसी कारण वह सर्प अथीनियानिवासियों द्वारा आदरित होता है। अन्त में पिछले दिनों, मानवरूप में तीन स्वर्गीय आत्मायें, गैलिली का मसीह, बेसिलाइड्स और वेलेंटाइन, पृथ्वी पर उतरीं। इन्होंने ज्ञानवृक्ष के मुन्दरतम फल तोड़े, जिसकी जड़ पृथ्वी में धँसी है और जो आकाशचुम्बी है। ईसाइयों की ओर से यही मेरा कहना है, जिन पर यहूदियों की भूलों की ज़िम्मेदारी डाली जाती है।'

डोरियन—'अगर तुम्हारी बातों को मैं ठीक-ठीक समझा हूँ जेनोथेमिस, तो वह यही है कि तीन प्रशंसनीय व्यक्तियों ने, मसीह, बेसिलाइड्स और वेलेंटाइन ने उन रहस्यों को ढूँढ़ निकाला, जो पाइथागोरस, प्लेटो, ग्रीस के समस्त दार्शनिकों से, यहाँ तक कि उस महात्मा एपिक्थोरस से भी अज्ञात थे, जिन्होंने मानव-जाति को व्यर्थ के भय से मुक्त किया। कृपया हमें यह बताओ कि इन तीनों को वह ज्ञान कैसे मिल गया जो उन महात्माओं को न मिल सका?'

जेनोथेमिस—'क्या तुम्हें फिर यह बतलाना होगा डोरियन, कि तर्क और चिन्तन ज्ञानप्राप्ति की प्रथम श्रेणियाँ हैं? अनन्त सत्यों की प्राप्ति केवल भावविभोर हो जाने पर ही होती है?'

हर्मोडोरस—'जेनोथेमिस, तुम्हारा यह कहना सच है कि आत्मा उल्लास के बल पर ही पलती है, जैसे घास का कीड़ा ओस से। लेकिन आगे बढ़कर देखें तो कह सकते हैं कि परम-आनन्द केवल आत्मा ही उठा सकती है। मनुष्य तीन वस्तुओं से निर्मित है, भौतिक शरीर, सूक्ष्म किन्तु फिर भी भौतिक आत्मा और अक्षय बुद्धि से उसका सृजन हुआ है। जब शरीररूपी भवन से, जो शान्त और एकान्त हो गया है, निकलकर बुद्धि

आत्मा के उद्यानों पर उड़ती हुई भगवान् में लीन हो जाती है तब उसे एक वांछित और प्रत्याशित मृत्यु या पुनर्जन्म का आस्वादन होता है । मृत्यु ही जीवन है । इस दशा में, जिसमें स्वर्गीय पवित्रता निहित है, उसे अक्षय आनन्द और परम ज्ञान प्राप्त होता है । वह एकात्मता में परिणत हो जाती है जो एकमात्र सत्य है । वह पूर्ण हो जाती है ।'

निशियस—'कितनी सुन्दर बात है; पर सच कहूँ हमोंडोरस, मुझे 'अस्ति' और 'नास्ति' में विशेष अन्तर नहीं दीखता । वाणी उस भेद को व्यक्त नहीं कर सकती । 'अनन्तता' 'शून्यता' से बिल्कुल मिलती-जुलती चीज़ है, दोनों समझी नहीं जा सकतीं । मेरी राय में, 'पूर्णता' बहुत महँगी चीज़ है, मनुष्य को इसे पाने के लिए अपने को समाप्त कर देना होता है, इसकी सिद्धि के लिए मर मिटना होता है । इस अपमान से भगवान् भी मुक्त नहीं; क्योंकि दार्शनिक लोग उसे 'पूर्ण' बनाने पर तुल गये हैं । फिर, यदि हम 'नास्ति' की जानकारी नहीं रखते तो 'अस्ति' से भी हम अनभिज्ञ ही हैं । सच तो यह है कि हम कुछ भी नहीं जानते । लोग कहते हैं, एक दूसरे को समझ पाना मनुष्यों के लिए कठिन है । इसके विपरीत, मैं समझता हूँ कि हमारी मतभिन्नता के होते हुए भी, मनुष्यों के लिए एकमत न हो जाना असम्भव है, विरोधों की बहुलता के नीचे वे बगल-बगल में दफ़न कर दिये जाते हैं ।'

कोटा—'मुझे दर्शन से बहुत प्रेम है, अवकाश के समय मैंने उसका गम्भीर अध्ययन किया है । मैं केवल उसे पूरी तरह सिसरो\* के ग्रन्थों द्वारा ही समझ पाता हूँ । गुलामो, शराब ढालो !'

---

\* सिसरो—इटली का प्रसिद्ध राजनीति का विद्वान् ।

कॅलिफ्रेटस—‘यह विचित्र बात है । जब मैं गम्भीर होता हूँ तब मुझे उन दिनों की याद आती है जब कविगण सम्राटों के साथ भोज में शामिल होते थे और मेरे मुँह में पानी भर आता है । किन्तु उदार लुशियस, जब तुम्हारी शराब पीकर मैं तृप्त हो जाता हूँ तब मुझे नागरिक संघर्ष और वीरतामय युद्धों का दृश्य दिखाई पड़ने लगता है । आज के पतित युग में रहने में मुझे लज्जा आती है, मैं स्वाधीनता का आवाहन करता हूँ और कल्पना द्वारा ही फिलिपी के मैदान में अन्तिम रोमन वीरों के साथ अपना रक्त बहाता हूँ ।’

कोटा—‘प्रजातन्त्र के पतन के समय मेरे सजातीयों ने ब्रूटस के साथ स्वाधीनता-युद्ध में प्राण दिये थे । यह बहस की बात हो सकती है कि जिसे वे ‘रोमनों’ की स्वाधीनता’ कहते थे, वह वास्तव में स्वाधीनता ही थी अथवा अपना शासन स्वयं करने की सुविधा-मात्र । स्वाधीनता एक राष्ट्र की सबसे बड़ी निधि है, इसे मैं अस्वीकार नहीं करता । पर ज्यों ज्यों मैं बढ़ता जाता हूँ, मेरा यह विश्वास पक्का होता जाता है कि एक दृढ़ शासन ही प्रजा की सुरक्षा कर सकता है । चालीस बरस तक मैं राज्य का प्रधान पदाधिकारी रहा और मेरा सुदीर्घ अनुभव यही बतलाता है कि शासन दुर्बल होने पर प्रजा भी पीड़ित रहती है । ऐसे लोग, जो वाणीकुशल होते हैं, जो शासनव्यवस्था को कमजोर और निर्बल करने की चेष्टा करते हैं, भारी निन्दनीय अपराध करते हैं । यदि एक व्यक्ति की स्वेच्छा विनाशकरूप में प्रयोग की जाती है तो जनसाधारण के मत से चलकर तो और भी कुछ नहीं किया जा सकता । संसार पर रोमन-शान्ति का प्रताप छाने के पहले वे ही लोग सुखी थे जो कुशल स्वेच्छाचारी शासकों के अधीन थे ।’

हर्मोडोरस—‘मेरा खयाल है लूशियस, कि न तो शासन का कोई सुन्दर रूप है और न हो सकेगा। कुशल और चतुर ग्रीसनिवासी भी, जिन्होंने कई सुन्दर रूप सोचे, कोई निर्दोष प्रणाली न पा सके। हमारी आशाएँ इस विषय में व्यर्थ ही हैं। कुछ लक्षण ऐसे हैं जिनसे पता चलता है कि जगत् शीघ्र ही अज्ञान और बर्बरता के गर्न में डूबनेवाला है। लूशियस, सभ्यता के इस संकट का भागीदार होना हमारे भाग्य में था। बुद्धि, विज्ञान और सत्कर्मों-द्वारा जो कुछ संतोष मिला था उनमें से यही शेष रह गया है कि हम अपनी मृत्यु का निर्दय आनन्द स्वयं ही देखें।’

कोटा—‘जनता की भूख और बर्बरों की क्रूरता ऐसी वस्तुएँ हैं जिनसे डरना ही चाहिए। किन्तु अच्छी जल-सेना, अच्छी फ़ौज और प्रचुर धनबल से.....’

हर्मोडोरस—अपने को बहलाने से क्या लाभ ? पतनोन्मुख साम्राज्य बर्बरों का आसानी से शिकार हो जायगा। वह नगर, जो यूनानी प्रतिभा और धैर्य के कारण उन्नत थे, शीघ्र ही मतवाले राक्षसों द्वारा लूटे जायेंगे। पृथ्वी पर कला या दर्शन का नाम तक न रह जायगा। मन्दिरों और मानव-हृदयों में परमात्मा की मूर्ति नष्ट हो जायगी। बुद्धि पर कालिमा छा जायगी और संसार समाप्त हो जायगा। यह कैसे विश्वास किया जाय कि वे बर्बरबुद्धि प्रदर्शन के कार्य करेंगे, वे पशु अमर देवताओं की उपासना करेंगे। नहीं, सब कुछ डगमगा रहा है, डूब रहा है। यह प्राचीन मिस्र, जो संसार की संस्कृति का केन्द्र था, अपनी ही समाधि बन जायगा, मृत्यु का देवता सेरापिस ही समस्त मानवजाति का पूजनीय होगा और में अन्तिम देवता का अन्तिम पुजारी हूँगा।’

इसी समय एक विचित्र व्यक्ति ने कमरे का पर्दा उठाया। अतिथियों ने देखा—वह एक कुबड़ा व्यक्ति है जिसकी गंजी चाँद बीच में ज़रा उठ

गई है । एशियानिवासियों की भाँति वह लाल लबादा और जंगलियों की तरह लाल पाजामा पहने हुए था जिसमें सुनहरे सितारे टँके थे । उसे देखते ही पैफ़नाशस पहचान गया कि वह आर्य मार्कस है । उसे ऐसा भय हुआ जैसे वज्र गिर पड़ेगा, उसने सर के ऊपर हाथ कर लिया और भय से पीला पड़ गया । इस पाखण्डी की उपस्थिति-मात्र से उसका साहस कुंठित हो रहा, यद्यपि उस भोज में धर्मविरोधियों की ईश्वरनिन्दा और दार्शनिकों की भयंकर भूलों ने भी उसका साहस विचलित न किया था । उसने भाग जाना चाहा; किन्तु नभी उसकी दृष्टि ताया की दृष्टि से मिली और वह स्थिर हो गया । ताया के हृदय को पढ़ पाने में वह समर्थ हुआ था और समझता था कि शीघ्र ही तपस्विनी बननेवाली ताया उसकी रक्षा कर रही है । उसने उसके लहराते हुए लबादे का एक कोना पकड़ लिया और मन ही मन उस रक्षक मसीह की प्रार्थना करने लगा ।

ईसाइयों का प्लेटो कहे जानेवाले उस व्यक्ति के आने पर प्रशंसा-सूचक ध्वनियाँ होने लगीं । हर्मोडोरस उससे सबसे पहले बोला—‘श्रद्धेय मार्कस, आपको अपने बीच में देखकर हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है । आपका आना शुभ है । ईसाईधर्म का हमें उतना ही ज्ञान है जितना हमें बताया गया है । यह स्पष्ट है कि आप जैसे दार्शनिक साधारण व्यक्ति की तरह ही नहीं सोचते विचारते, और हम धर्म के मुख्य रहस्यों पर आपकी राय जानना चाहते हैं । हमारे प्रिय मित्र जेनोथेमिस को प्रतीकों की बहुत चिन्ता रहती है और वे अभी पैफ़नाशस से यहूदियों के ग्रंथों के बारे में पूछ रहे थे । किन्तु पैफ़नाशस ने उन्हें उत्तर नहीं दिया, और हमें इस पर आश्चर्य भी नहीं होना चाहिए । हमारे इस अतिथि ने मोनव्रत धारण किया है और भगवान् ने उनकी जीभ वन में ही बन्द कर रखी है । लेकिन मार्कस, आपने ईसाई-धर्म-सभाओं में व्याख्यान दिये हैं, सम्राट्

कान्सटैन्टाइन की सभाओं में भी वक्तृताये दी हैं; अगर आप चाहें तो ईसाई-कथाओं में निहित दार्शनिक सत्यों का निरूपण कर हमारी उत्सुकता दूर कर सकते हैं। ईसाइयों का मुख्य सत्य क्या एक परमात्मा के अस्तित्व को मानना नहीं है, जिस पर मैं तो पूरी तरह विश्वास करता हूँ।'

मार्कस—'हाँ, माननीय मित्रो, मैं परमात्मा की अद्वैतता पर विश्वास करता हूँ। उस परमात्मा पर जो अजन्मा है, अनादि है और समस्त वस्तुओं का जनक है।'

निशियस—'मार्कस, हम जानते हैं कि तुम्हारे भगवान् ने दुनिया की रचना की। उसके अस्तित्व के लिए यह वास्तव में एक संकट का समय रहा होगा। रचना करने का निश्चय करने के पहले से ही वह अनादि रूप में मौजूद था। मगर मैं स्वीकार करता हूँ कि उसकी अवस्था बड़ी विचित्र थी। अपनी पूर्णता बनाये रखने के लिए उसे अक्रिय रहना ही था और अपने अस्तित्व के प्रमाण के लिए उसे कर्म करना पड़ता। आप मुझे बतलाते हैं कि उसने कर्म करने का ही निश्चय किया। मार्कस, मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ, यद्यपि एक 'पूर्ण' परमात्मा के लिए यह एक अक्षम्य यश-लोलुपता है। लेकिन यह तो बतलाओ मार्कस, उसने सृष्टि की रचना कैसे की?'

मार्कस—'ईसाई न होने पर भी जो लोग, हर्मोडोरस और जेनोथेमिस की तरह ज्ञान के सिद्धान्तों से परिचित हैं, वे जानते हैं कि भगवान् ने स्वयं ही, अकेले सृष्टि की रचना नहीं की। उसने अपने एकमात्र पुत्र को जन्म दिया जिसने सब वस्तुओं का निर्माण किया।'

हर्मोडोरस—'मार्कस, आप ठीक कहते हैं। और इस पुत्र की पूजा भिन्न-भिन्न नामों से की जाती है, जैसे—हर्मस, मिथ्रा, एडोनिश, अपोलो और मसीह।'

मार्कस—‘प्रभु मसीह या मुक्तिदाता के सिवाय यदि उसे और किसी नाम से मैं पुकारूँ तो मैं सच्चा ईसाई नहीं हूँगा। परमात्मा का वही वास्तविक पुत्र है। किन्तु वह अनादि नहीं; क्योंकि उसने जन्म लिया था। जन्म लेने से पहले भी उसका अस्तित्व था, यह सोचना मूर्खों का काम है।’

यह सुनकर पैफ़नाशस ने, जो पहले से ही भयभीत था और जिसके माथे पर कष्ट के कारण पसीना चुहचुहा आया था, पवित्र ‘क्रास’ का चिह्न बनाया और दृढ़तापूर्वक मौन बना रहा।

मार्कस कहता गया—

‘यह स्पष्ट है कि निशिया लोगों के धर्म का ग़लत प्रतीक एकमात्र ईश्वर के अभिन्न गुणों और कार्यों से उससे ही उत्पन्न उसको अलग करना चाहता है जिसने सब वस्तुओं का निर्माण किया है। निशियस, ईसाइयों के सच्चे ईश्वर का मज़ाक उड़ाना छोड़ दो, समझो कि उसका काम उतना ही है जितना उपवन के पुष्पों का। वह निर्माता नहीं था, यीशु ने, मसीह ने ही सृष्टि की रचना की और बाद में अपने काम के सुधार के लिए संसार में आया। क्योंकि रचना पूर्ण नहीं हो सकती थी और उसमें भलाई के साथ बुराई भी अनिवार्य रूप से मिली हुई थी।’

निशियस—‘भलाई क्या है और बुराई क्या है?’

एक क्षण वहाँ शान्ति रही। इस बीच हमोंडोरस ने टेबुल पर हाथ फैलाकर एक धातु के बने हुए गधे को दिखलाया जिस पर दो टोकरियाँ लदी हुई थीं, एक में सफ़ेद जैतून के फूल थे, दूसरे में काले। उसने कहा—‘इन जैतून के फूलों को देखो। इनके रंगों के भेद से हमारी दृष्टि चकित रह जाती है, हम समझ लेते हैं कि ये सफ़ेद हैं, वे काले। किन्तु यदि उनके पास विचार और ज्ञान की शक्ति होती तो सफ़ेद फूल कहते—जैतून

के फूल के लिए सफ़ेद होना ही अच्छा है, काला होना बुरा। इसी तरह काले फूल सफ़ेद फूलों से घृणा करते। हम उनसे अच्छी परख कर सकते हैं; क्योंकि हम उनसे उतने ही ऊँचे हैं जितने देवतागण हमसे। मनुष्य के लिए, जो प्रत्येक वस्तु का एक अंश ही देख पाता है, बुराई वरदान है। निःसन्देह कुरूपता कुरूपता ही रहेगी, सुन्दर नहीं हो सकती; किन्तु यदि सब वस्तुएँ सुन्दर हो जायँ तो सुन्दरता कहीं रह ही न जायगी। तब, यही अच्छा है कि बुराई का समूल नाश न हो।'

यूक्राइटस—'हमें इस पर धार्मिक दृष्टिकोण से बातें करनी चाहिए। यदि बुराई से संसार का अविनश्वर तारतम्य नष्ट नहीं होता तो उसके लिए वह बुराई नहीं है। बुराई उसी अपराधी के लिए है जो बुरा करता है, बिना किये रह नहीं सकता।'

कोटा—'भगवान् साक्षी है, यह खूब कहा !'

यूक्राइटस—'एक महान् कवि के अनुसार संसार एक नाटक है। इसके निर्माता ईश्वर ने हम सबके लिए इसमें एक-एक पार्ट चुन रक्खा है। यदि वह तुम्हें भिखारी, राजा या पंगु बनाना चाहता है तो अपना पार्ट खूबी से अदा करो।'

निशियस—'ज़रूर, ज़रूर। यही अच्छा होगा कि पंगु व्यक्ति लंगड़ाता जाय, पागल उत्पात मचाये, दुराचारिणी स्त्री अपराध पर अपराध करती जाय, बागी धोखा देता जाय, झूठा झूठ बोलता जाय, हत्यारा हत्यायें करे और इस अभिनय के बाद सभी अभिनेता, राजा, न्यायी, हत्यारे, स्वेच्छाचारी, पवित्र कुमारियाँ, कलंकिनी पत्नियाँ, सज्जन नागरिक और कायर गुप्तघाती, सभी कवि द्वारा समान सम्मान प्राप्त करें।'

यूक्राइटस—'निशियस, तुमने मेरे विचारों को विकृत कर दिया और एक युवती कुमारी को बीभत्स भयंकर पिशाचिनी बना दिया।

देवता, न्याय और अनादि नियमों की अज्ञानता के लिए मुझे तुम्हारे लिए दुःख है ।’

जेनोथेमिस—‘मित्रो, भलाई और बुराई की वास्तविकता पर मैं विश्वास करता हूँ । लेकिन मैं यह भी मानने को बाध्य हूँ कि केवल मनुष्य के एक कार्य में ही मुक्ति का बीज निहित नहीं है, भले ही वह जूडस का चुम्बन ही क्यों न हो । मनुष्यों की मुक्ति में बुराई का भी हाथ रहता है, भलाई से ही उसका जन्म होता है और उसके परिणाम में भी उसका हाथ होता है । ईसाइयों ने अपनी उस कथा में इस बात पर अच्छा प्रकाश डाला है जिसमें ईसा के उस शिष्य ने उन्हें धोखा देने के लिए शान्ति-चुम्बन दिया जो मानव-जाति की रक्षा का सूचक है । मेरे विचार से, सेन्ट पाल के कुछ शिष्य मसीह के उस परम अभागे शिष्य के प्रति जो घृणा दिखलाते हैं, उससे बढ़कर अन्याय और निरर्थक वस्तु और कुछ नहीं हो सकती । यह नहीं सोचते कि मसीह द्वारा भविष्यवाणी किया हुआ वह चुम्बन, उनके मतानुसार ही, मानवजाति के उद्धार के लिए आवश्यक था और यदि जूडस ने तीस मुद्राओं की भेंट न ली होती तो ईश्वरीय नियम भूटा हो जाता, विधि को धोखा देना होता, उसके विधान टूट जाते और संसार बुराई, अज्ञान और मृत्यु के हाथ में चला जाता ।’

मार्कस—‘परमात्मा यह जानते थे कि जूडस वह कपट-चुम्बन अवश्य देगा, यद्यपि वह ऐसा नहीं भी कर सकता था । तभी, भगवान् ने उसके अपराध को मुक्ति के भव्य प्रासाद के एक पत्थर सा साधन बना दिया ।’

जेनोथेमिस—‘मार्कस, अभी मैंने तुमसे इस तरह बात की है जैसे मुझे यह विश्वास है कि क्रूस पर चढ़ाये गये मसीह द्वारा ही मानव-जाति

की मुक्ति हुई; क्योंकि मैं जानता हूँ, ईसाइयों का यही मत है। और मैं उनके विचारों द्वारा इसी लिए आगे बढ़ा कि मसीह को सदैव बुरा कहनेवालों की भूलों को पकड़ूँ। पर वास्तव में, मेरी दृष्टि में, मसीह केवल बैसिलाइ-इस और वेलेंटाइन का अग्रगामी है। रह गई मुक्ति के रहस्य की बात, तो मैं तुम्हें बताऊँगा मित्रो, कि वह पृथ्वी पर किस तरह वास्तव में पूर्ण हुई। यदि आप लोग जानने को उत्सुक हों तो मैं बताऊँ।

अतिथियों ने स्वीकार-सूचक ध्वनियाँ कीं। ठीक इसी समय बारह युवती लड़कियाँ, माथे पर अनार और सेब से भरी टोकरियाँ लिये, एक गुप्त बाँसुरी के स्वर पर पाँव रखती हुई, धीरे-धीरे कमरे में आईं। टोकरियाँ उन्होंने टेबुल पर रख दी, बाँसुरी का स्वर बन्द हो गया और जेनो-थेमिस ने कहा—

“जब परमात्मा की विचारशक्ति ने, जिसका नाम ‘योनिया’ है, संसार की रचना कर ली तो पृथ्वी का शासन देवदूतों के हाथ में दे दिया गया। किन्तु उनमें वह सौम्यता नहीं थी जो शासकों में होनी चाहिए। उन्होंने जब मनुष्यों की सुन्दरी कन्याओं को देखा, तब संध्या-समय जलाशयों के किनारे आकर उन्हें घेरने लगे और उनसे सम्भोग करने लगे। इन सम्भोगों से एक भयंकर जाति उत्पन्न हुई जिसने दुनिया में अन्याय और क्रूरता का बोलवाला कर दिया, सड़कों के किनारे की ज़मीन खून से सिंच उठी। योनिया को इससे दहृत कष्ट हुआ।

“उसने दुनिया की ओर देखते हुए, ठण्डी साँस लेकर कहा—‘यह मेरी करनी का फल है। मेरे ही कारण मेरे बच्चे विपत्तिसागर में डूब रहे हैं। उनका कष्ट मेरे ही अपराधों के कारण है और मैं इसका प्रायश्चित्त करना चाहती हूँ। भगवान् भी, जो मेरे ही द्वारा सोचते हैं, उन्हें उनकी मूल पवित्रता प्रदान नहीं कर सकता। जो हो गया वह हो गया,

सृष्टि सदा के लिए दूषित हो गई । कम से कम मैं अपने प्राणियों को नहीं त्यागूंगी । यदि मैं उन्हें अपने जैसा सुखी नहीं बना सकती तो अपने को ही उनके जैसा दुखी बना डालूंगी । मैंने ही उन्हें शरीर देकर गलती की है जिससे उनका अहित होता है, मैं भी उनके जैसा शरीर धारण करूंगी और उनके बीच जाकर रहूंगी ।’

“यह कहने के बाद योनिया पृथ्वी पर उतरी और यूनान की एक स्त्री के गर्भ में प्रविष्ट हुई । जन्म के बाद वह बहुत दुर्बल थी, और उसका नाम ‘हेलेन’ रक्खा गया । वह शीघ्र ही बहुत सुन्दरी और अनुपम स्त्री हुई । सब लोग उसे अत्यधिक चाहने लगे; क्योंकि उसने अपने नश्वर शरीर द्वारा भारी अपराध करने का निश्चय किया । वह लम्पट और कामुक मनुष्यों की निष्क्रिय शिकार बन गई और परस्त्रीगमन, बलात्कार और दुष्टता के दण्ड-स्वरूप उसने भी खूब पुरुषों को भ्रष्ट किया और हरण किया । अपने सौन्दर्य से जातियों को नष्ट कर डाला ताकि परमात्मा सृष्टि के अपराधों को क्षमा कर दे । एक स्त्री के रूप में उसने शूरवीरों और चरवाहों के साथ काम-सम्बन्ध जिस समय स्थापित किये थे, वैसी पूजनीय परमात्मा की विचार-शक्ति, वह योनिया, कभी न हुई थी । कवियों ने उसके स्वर्गीय चरित्र की महत्ता जान कर ही उसे इतना शान्त, महत् और इतना विनाशक चित्रित किया है और उसे सम्बोधित किया है—‘निश्चल सागर की तरह सौम्य आत्मा !’

“इस तरह योनिया ने दया और उदारता के कारण बुरे काम किये और कष्ट भोगा । वह मर गई और यूनान में अब तक उसकी समाधि बनी हुई है । आनन्दों के बाद उसे मृत्यु का अनुभव करना पड़ा और अपने बोये कड़ुए फल चखने पड़े । किन्तु हेलेन के विच्छिन्न शरीरत्याग के बाद वह दूसरी स्त्री के रूप में पैदा हुई और पुनः हर विपत्ति का सामना किया ।

इस तरह एक के बाद एक शरीर धारण करती हुई, हमारे मध्य बुराई के युगों को पार करती हुई, वह संसार के पापों का भार अपने ऊपर लेती चली आ रही है। उसका बलिदान व्यर्थ न जायगा। शरीर-द्वारा हमसे सम्बद्ध, वह हमारे साथ हँसती-रोती हुई अपनी और हमारी मुक्ति करेगी, और हमें अपनी उज्ज्वल छाती से लगाये हुए स्वर्ग की शान्ति प्रदान कर प्रसन्न करेगी।”

हर्मोडोरस—‘यह कथा मुझे मालूम थी। मुझे स्मरण है कि कहा जाता है, अपने किसी एक जन्म में यह स्वर्गीय हेलेन, सम्राट् टिबिरियस के काल में सिमन नामक जादूगर के साथ रही। तब भी मैंने यही समझा कि उसका यह पतन स्वेच्छा से नहीं हुआ और देवदूतों ने अपने पतन में उसे शामिल कर लिया।’

जेनोथेमिस—‘हर्मोडोरस, रहस्यों से अपरिचित लोग यही समझते हैं कि दुखी योनिया ने स्वयं ही अपना पतन स्वीकार नहीं किया, यह सच है। किन्तु यदि ऐसा ही होता जैसा वे कहते हैं, तो योनिया प्रायश्चित्त-निरत वेश्या न होती जिस पर कलंक का पहाड़ लदा था, हमारी लज्जा से सिंचित न होती, महान् बलिदान न करती, सुहावनी पूजा का प्रतीक न होती, हवन की वह सामग्री न होती जिसका धुँआँ परमात्मा तक पहुँचता है। यदि उसके पाप स्वेच्छा से न होते तो उनमें कोई सदाशयता न होती।’

कैलिक्रेटस—‘लेकिन जेनोथेमिस, क्या यह नहीं जाना जा सकता कि किस देश में, किस नाम से, किस रूप में यह नित्य-जन्मधारिणी हेलेन आज रहती है?’

जेनोथेमिस—‘ऐसे रहस्य का पता लगाने के लिए आदमी को अत्यन्त बुद्धिमान् होना आवश्यक है, और कैलिक्रेटस ! पतित रूप के संसार में बसने-

वाले और बच्चों की तरह शब्दों और मिथ्या मूर्तियों से मनोरंजन करने-वाले कवियों के बाँट में बुद्धि नहीं पड़ी है ।’

कैलिक्रेटस—‘पतित जेनोथेमिस, भगवान् को अप्रसन्न न करो, कविगण उनके प्यारे हैं। स्वयं अमरों ने छन्दों में ही प्रथम नियम बनाये और देवताओं की देववाणियाँ सब कविता में ही हैं। भजन के स्वर स्वर्गीय श्रवणों में प्रिय लगते हैं। कौन नहीं जानता कि कवि लोग आत्म-ज्ञानी होते हैं और उनसे कुछ छिपा नहीं है। स्वयं कवि होने के कारण तथा ‘अपोलो’\* की कीर्ति से मंडित होने के कारण मैं योनिया के अन्तिम जन्म की बात सबको बतला सकता हूँ। वह अनादि हेलेन तुम्हारे पास ही है। वह हमारी ओर देख रही है, हम उसे देख रहे हैं। अपनी कुर्सी के तकियों पर उठेंगी हुई उस अत्यन्त सुन्दर और गम्भीर स्त्री को देख रहे हो, जिसकी आँखों में आँसू और अधरों पर प्रेम के चुम्बन खेल रहे हैं? वह यही है। सदा की तरह आकर्षक, एशिया का गौरव, आज की ताया ही वह योनिया है।’

फ़िलिना—‘तुम कह क्या रहे हो कैलिक्रेटस ! तब तो हमारी प्रिय ताया पेरिस, मेनिलीस और एशियन्स को भी जानती होगी जो इलियम के आगे लड़े थे ! ताया, क्या द्रायवाला घोड़ा बहुत बड़ा था ?’

अरिस्तोबुलस—‘घोड़े की बात कौन करता है ?’

चेरियस ने टेबुल के नीचे लुढ़कते हुए कहा—‘मैं बहुत पी गया !’

कैलिक्रेटस ने अपना प्याला उठाते हुए कहा—‘अगर हम बुरी तरह पी लें तो बिना प्रतिहिंसाभाव के ही हम मरेंगे ।’

वृद्ध कोटा सो रहे थे, उनकी चँदुली खोपड़ी चीड़े कन्धों पर स्थिर थी ।

डोरियन अपने दार्शनिक आवरण के नीचे मन ही मन थोड़ी देर से बहुत व्यग्र हो रहे थे । वे ताया के गद्दे के पास आये ओर धीरे धीरे कहा— ‘ताया, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ । यद्यपि मेरे लिए एक स्त्री को प्यार करना शोभा नहीं देता ।’

ताया—‘तुमने पहले मुझसे प्रेम क्यों नहीं किया ?’

डोरियन—‘तब मैं व्रत कर रहा था ।’

ताया—‘मैंने तो दोस्त, केवल पानी ही पिया है, मैं तुमसे प्रेम न करूँ तो क्षमा करो ।’

डोरियन ने अधिक नहीं सुनना चाहा और ड्रेसिंगा की ओर गया । उसने आँख के इशारे से उसे अपने मित्र को उठाने की आज्ञा दी । जेनोथे-मिस ने खाली जगह पर कब्जा किया और ताया के अधरों पर चुम्बन अंकित कर दिया ।

ताया—‘मैं समझती थी, तुम अधिक सद्गुणी हो !’

जेनोथेमिस—‘मैं सिद्ध व्यक्ति हूँ और सिद्ध व्यक्तियों पर कोई नियम लागू नहीं होता ।’

ताया—‘किन्तु एक स्त्री के आलिंगन-द्वारा अपनी आत्मा के कलंकित होने का डर तुम्हें रहा है ?’

जेनोथेमिस—‘आत्मा पर बिना धब्बा लगे भी देह की भूख पूरी की जा सकती है ।’

ताया—‘यहाँ से चले जाओ । मैं तन मन दोनों का प्रेम चाहती हूँ । ये सभी दार्शनिक जानवर होते हैं ।’

एक एक कर चिराग बुझ गये। परदों की सेवों से छनकर ऊषा की पीली आभा, अतिथियों के रात्रि-जागरण के कारण नीले मुखों और फूली आँखों पर पड़ रही थी। अरिस्तोबुलस, जो चेरियस की बगल में गिरा पड़ा था, नींद में सपने देख रहा था। जेनोथेमिस पीली पड़ी फ़िलिना को आलिंगन किये पड़े थे। डोरियन ड्रोसिया के नंगे गले पर शराब की बूँदें टपका रहे थे, जो उसकी गोरी छाती पर मणियों-से लुढ़क रहे थे, और वह दार्शनिक अपने ओंठों से उसकी देह पर की वे बूँदें पीने की चेष्टा कर रहा था। यूक्राइटस उठा और निशियस के कन्वों पर हाथ रखकर उसे कमरे के पीछे लिवा गया। हँसकर कहा—‘दोस्त, अगर अब भी कुछ सोच विचार रहे हो तो बताओ, क्या सोच रहे हो?’

‘मैं सोच रहा हूँ, स्त्रियों का प्यार अडोनिस्\* के उपवनों के समान है।’

‘इसके क्या मतलब?’

‘यूक्राइटस, क्या तुम जानते नहीं कि स्त्रियाँ प्रतिवर्ष अपने मकानों के छज्जों पर, खजूर के छोटे छोटे पौधों के बाग, वीनस के प्रेमी के लिए लगाती हैं? ये खजूर थोड़े दिन हरे रहते हैं, फिर मुरझा जाया करते हैं।’

‘निशियस, इससे क्या होता है? नश्वर वस्तु से सम्बन्ध जोड़ना मूर्खता है।’

‘यदि सौन्दर्य छाया-मात्र है तो इच्छा भी क्षणिक चमक से अधिक कुछ नहीं है। सौन्दर्य की चाह करना मूर्खता है? क्या यह ठीक नहीं है

---

\* यूनानी विलास की देवी ‘वीनस’ का प्रेमी।

कि मिट जानेवाली वस्तु नश्वरता में ही विलीन हो जाय, लुप्त होती हुई छाया को प्रकाश निगल जाय ?'

'निशियस, तुम मुझे खेलते हुए बच्चे-से जान पड़ने हो। मेरा विश्वास करो, मुक्त हो जाओ। मनुष्य बनने का यही मार्ग है।'

'यूक्राइटस, गरीर रहते हुए एक व्यक्ति मुक्त कैसे हो सकता है ?'

'मेरे बच्चे, अभी तुम्हें यह मालूम हो जायगा। पलभर में ही तुम कहोगे—यूक्राइटस मुक्त था।' स्फटिक-स्तम्भों से टिका हुआ वह वृद्ध व्यक्ति ये बातें कह रहा था और उसके मुख पर ऊषा की प्रथम किरणें खेल रही थीं। हमोंडोरस और मार्कस भी पास आकर उसके सामने निशियस की बगल में खड़े हो गये और चारों, उन शराबियों के हँसी और चीख-पुकारों से दूर हटकर, ईश्वरीय बातों पर वार्तालाप कर रहे थे। यूक्राइटस ने इतनी बुद्धिमानी से बातें कीं कि मार्कस ने कहा—

'तुम सच्चे परमात्मा को जानने योग्य हो।'

यूक्राइटस ने उत्तर दिया—

'सच्चा परमात्मा बुद्धिमान् व्यक्ति के हृदय में निवास करता है।'

तब वे मृत्यु की चर्चा करने लगे।

यूक्राइटस ने कहा—जब वह मेरे पास आये, मैं चाहता हूँ कि आत्मशुद्धि और अपने कर्तव्यों में लगा रहूँ, उसके सामने ही मैं अपने निष्कलंक हाथ नभ की ओर उठाकर देवताओं से कहूँगा—'पूज्य देवो, जो प्रतिमायें आपने मेरे मन में अधिष्ठित कर दी हैं उनका अपमान मैंने नहीं किया है। उन्हीं पर मैंने हार और मुकुटों के रूप में अपने विचारों की भेंट चढ़ाई है। तुम्हारे नियमों के अनुसार ही मैं जीवित रहा हूँ। अब बहुत दिन जी चुका।'

यह कहते हुए उसने आकाश की ओर हाथ उठा दिये और उसका मुख प्रभासित हो उठा । क्षण भर वह विचारमग्न रहा और फिर आनन्दित होकर बोला—‘यूक्राइटस, अपने को जीवन से अलग कर लो । जैतून के उम पके फल की तरह, जो अपने जनक वृक्ष को धन्यवाद देता हुआ और पाद-पोषण करनेवाली पृथ्वी को धन्यवाद देता हुआ भ्रमर जाता है ।’

यह कहकर उसने अपने लवादे के नीचे से एक नंगी कटार निकाली और अपनी छाती में घुसेड़ ली ।

इसके पहले कि सामने खड़े लोग उसका हाथ पकड़ें, कटार की नाक उस बुद्धिमान् व्यक्ति के कलेजे में घुस चुकी थी । यूक्राइटस निर्वाण प्राप्त कर चुका था । स्त्रियों की तीव्र चीख, नींद में व्याघात पाये हुए अतिथियों की बड़बड़ाहट और परदों की छाया से छनकर आती हुई आनन्द की दबी हुई प्रतिध्वनियों के बीच, हर्मोडोरस और निशियस ने रक्त ग्रहती हुई देह को एक गद्दे पर लाकर लिटा दिया । वृद्ध कोटा, जो अपनी तन्द्रा से, सैनिक की फुर्ती से, उठ पड़ा था, लाश की बगल में आ खड़ा हुआ था और घाव की परीक्षा कर रहा था । उसने कहा—‘मेरे डाक्टर को बुलाओ, अरिस्टूस ।’

निशियस ने सिर हिलाकर कहा—‘यूक्राइटस समाप्त हो गया । जैसे और लोग प्यार की कामना करते हैं, वह मृत्यु की कामना करता था । हम सबकी तरह इसने भी उस महती इच्छा के आगे माथा झुका दिया । अब वह देवताओं के समान हो गया है, जो इच्छा के परे हैं ।’

कोटा ने माथा ठोंककर कहा—‘मृत्यु ! मौत की चाह ! अभी राज्य की सेवा करने की शक्ति होते हुए भी मौत ! कितनी

पैफनाशस और ताया एक दूसरे के नमीय शान्त ओर स्थिर बंठे रहे । उनके हृदयों में घृणा, भय और आशा विश्वास का सागर लहरा रहा था ।

सहमा ही पैफनाशस ने अभिनेत्री ताया का हाथ पकड़ा और पृथ्वी पर पड़े हुए शरावियों को लाँघता हुआ, आलिंगन-निरत स्त्री-पुरुषों से बचता हुआ, मदिरा और रक्त के बीच से उसे बाहर खींच लाया ।

नगर पर दिन का प्रकाश फैल रहा था । सुनसान सड़क के दोनों ओर मकानों के खम्भे दूर-दूर तक फैले हुए थे और दूर, सड़क के सिरे पर, सिकन्दर की समाधि का चमकता कँगूरा दीख रहा था । रास्तों पर यत्र तत्र पत्रविहीन मुकुट और बुझी हुई मशालें बिखरी पड़ी थीं । वायु में सागर की ताज़ी गन्ध भरी हुई थी । पैफनाशस ने घृणा से अपना बहुमूल्य लबादा उतार फेंका और उसके टुकड़ों को अपने पाँवों में कुचल दिया ।

वह तीव्र स्वर से बोला—‘ताया, तुमने इनकी बातें सुनी ! वे दुनिया-भर की मूर्खता और अपमान की बातें कर रहे थे ! उन्होंने सृष्टि के कर्त्ता को नरक के शैतानों के साथ घसीटा, भले और बुरे की लज्जाजनक रीति से अवहेलना की, मसीह का अपमान किया और जूडस पर अभिमान किया ! और सबसे बड़ी पतित बात यह कि, वह अँधेरे का गीदड़, वह दुर्गन्धिमय पशु, वह दुश्चरित्र और नाशमान् मार्कस भी कब्र की तरह अपना मुँह खोल रहा था । प्रिय ताया, तुमने देखा कि वे गन्दे कीड़े तुम्हारी ओर बढ़ रहे थे और अपने पसीने के स्पर्श से तुम्हें अपवित्र कर रहे थे, गुलामों के पाँवों पर उन शैतानों को लोटते देखा है ? अपने क़ै से अपवित्र पृथ्वी पर ही उन्हें संभोग करते देखा है ? उस पागल खूंसट बुड्ढे को गन्दी मदिरा से भी दूषित रक्त बहाते देखा जिसने मुरावान के बाद अपने को मसीह पर चढ़ा दिया ? ईश्वर को धन्यवाद है ! तमने पाप को देख लिया और

समझ लिया कि वह घृणिता है। ताया, ताया, इन दार्शनिकों की भूलों को याद करो और मोचो कि क्या तुम भी उन्हीं के साथ भूल करोगी ? उनके साथी, उन कामुक और द्वेषी बैदरियों की याद करो। बोलो, क्या तुम भी वैसी ही बनी रहना चाहती हो ?'

उस गन के घृणिता दृश्य से ताया का हृदय विद्रोह कर उठा था। पुरुषों की उदामीनता और क्रूरता, स्त्रियों की कुटिलता का अनुभव कर और समय की प्रबलता का खयाल कर ताया ने ठंडी साँस ली, कहा—'पिता, मैं बहुत थक गई हूँ। शान्ति कहाँ मिल सकती है ? मेरा माथा जल रहा है, सर उड़ा जा रहा है, हाथ इतने थक गये हैं कि यदि आनन्द मेरे हाथों में आ जाय तब भी उमे पकड़ रखने की सामर्थ्य नहीं है।'

पैफनाशस ने उसकी ओर दयाभाव से देखा, उत्तर दिया—'बहन, हिम्मत रखो। शान्ति की घड़ी तुम्हारे समीप आ रही है। उन भीलों और उपवनों से ऊपर उठती भाफ की भाँति वह उज्ज्वल और पवित्र हो जायगी।'

वे ताया के घर पहुँचे जहाँ दीवालों के ऊपर से उठे हुए, 'परियों के कुंज' के चारों ओर के तारपीन आदि के वृक्ष सिर उठाये प्रातःकालीन वायु में काँप रहे थे। एक सुनसान मैदान सामने था जिसके चारों ओर खम्भे और श्वेत मूर्तियों की कतारें थीं और सिरों पर अर्द्ध-चन्द्राकार मंगमरमर की बेंचें बनी हुई थी। एक बेंच पर ताया ढह पड़ी। साधु पैफनाशस की ओर एक उत्सुकताभरी दृष्टि डालकर उसने पूछा—'मैं क्या कहूँ ?'

साधु ने उत्तर दिया—'तुम्हें उसके साथ जाना चाहिए जो तुम्हें लेने आया है। वह तुम्हें संसार से उसी तरह अलग कर रहा है जैसे अंगूरों

का माली उन अंगूर के गुच्छों को तोड़कर अलग कर देता है जो शाम पर ही सड़ जानेवाले हैं, उन्हें मशीन में पेरकर सुगंधित मदिग बना देता है। सुनो, पच्छिम ओर एलेक्जेंड्रिया से बारह घंटे की यात्रा पर, समुद्र के किनारे एक मठ है, जिसके नियम ज्ञान के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और गाने बनाकर सितार तम्बूरे पर गाने योग्य हैं। जो स्त्री उन नियमों का पालन करती है उसके विषय में आसानी से कहा जा सकता है कि उसके पाँव धरती पर रहते हैं, मस्तक आकाश पर। इस संसार में ही उसकी स्थिति देवदूतों-सी हो जाती है। वे गरीब बनी रहना चाहती हैं ताकि प्रभु मसीह उन्हें प्यार करें, विनम्र रहनी हैं ताकि वे उन पर कृपादृष्टि रखें, सती रहनी हैं ताकि वे उनसे लग्न रचाये। वह माली के वेष में, नंगेपाँव और खुले हाथों प्रतिदिन उनके पाम आता है। जैसे उन्होंने मरियम को समाधि से आने समय दर्शन दिये थे। यात्रा, आश में तुम्हें इस आश्रम में ले चलूँगा, और शीघ्र ही तुम्हें उन पवित्र स्त्रियों के संसर्ग से उनके पवित्र वचनों को सुनने का अवसर प्राप्त होगा। वे बहनों की तरह तुम्हारी राह देख रही हैं। आश्रम के द्वार पर ही उनकी माता, उनकी संरक्षिका पवित्र अल्बीना तुम्हें शान्ति चुम्बन देगी और कहेगी—आओ बेटा, आओ।’

ताया ने प्रशंसापूरक ध्वनि में कहा—‘अल्बीना, कैसर की पुत्री, सम्राट् केरस की पोती !’

‘हाँ, वही अल्बीना, जो विलास में उत्पन्न हुई, बहुमूल्य वस्त्र धारण करती रही पर जिसने स्वेच्छा से मोटे वस्त्र पहने, जो सम्राटों की कन्या थी पर प्रभु मसीह की सेविका बन गई।’

ताया ने उठकर कहा—‘मुझे अल्बीना के यहाँ ले चलो।’

पैफनाशस ने अपनी इस विजय को सम्पूर्ण करने के इरादे से कहा—  
 'मैं तुम्हें वहाँ जरूर ले चलूँगा और एक अलग कमरे में रखूँगा, जहाँ  
 अपने पापों के लिए तुम रो-रोकर प्रायश्चित्त करोगी। जब तक तुम्हारे  
 समस्त कलंक धुल न जायें तब तक अल्बीना की पुत्रियों से तुम्हारा मिलना-  
 जुलना उचित नहीं है। मैं द्वार पर ताला लगा दूँगा, और तुम्हें वहाँ एक  
 सुखी वन्दी की भाँति प्रतीक्षा करनी होगी, तब तक, जब तक कि स्वयं  
 प्रभु मसीह आकर, क्षमा-स्वरूप, मेरा ताला तोड़ न देंगे। ताया, क्या  
 तुम्हें उनके आने में मन्देह है? तुम्हारे आँसू पोंछने के लिए जब वे  
 अपनी प्रकाशमान उँगलियाँ तुम्हारी आँखों पर फेरेंगे, उस समय तुम्हारा  
 शरीर कितना पुलकित हो उठेगा !'

ताया ने दूसरी बार कहा—'पिता, मुझे अल्बीना के घर ले चलो।'

आनन्दमग्न पैफनाशस ने चारों ओर देखा और निःशंक होकर सृष्टि-  
 रचना पर विचार करने लगा, उसकी आँखें ईश्वरीय प्रकाश का सुख से  
 पान करने लगी, माथे पर अज्ञान वायु के हिलकोरे लग रहे थे। सहसा ही  
 मैदान के एक कोने में उसने ताया के घर का द्वार देखा। उसे याद आया  
 कि ये वृक्ष, जिनकी चोटियों की वह प्रशंसा कर रहा था, वेश्या ताया के  
 बाग पर छाँह किये हुए हैं और मन ही मन उसने उस अपावनता का  
 स्मरण किया जिसने आज की निर्मल और पवित्र वायु को दूषित कर  
 रक्खा है। वह इतना व्यथित हुआ कि आँखों से आँसू बह चले।

उसने कहा—'ताया, हम यहाँ से उलटे पाँवों भाग चलें। किन्तु  
 हम यहाँ तुम्हारे पिछले अपराधों के साधन, साक्षी और सहयोगियों को,  
 उन मोटे परदों को, पलंगों को, सुगन्धकुंडों को और उन लैम्पों को भी न  
 छोड़ेंगे जो तुम्हारे पापाचरण की कहानी कहेंगे। क्या तुम चाहती हो  
 कि तुम्हारे ये सामान, जिनमें शैतानों का निवास है, दुर्गत्मायें जिनमें खे-

रही हैं, वन तक तुम्हारा पीछा करें ? यह सर्वथा सत्य है कि पापाचरण की साथी टेबुल-कुर्सियाँ शैतानों का साधन हैं जो पृथ्वी पर डोलते, बोलते और कर्म करते हैं और हवा में फिरते रहते हैं। अपनी लज्जा के समस्त भागीदारों को नष्ट हो जाने दो ! जल्दी करो ताया, अभी समूचा नगर सो रहा है, अपने दासों से कहो कि मैदान के बीच एक लकड़ी की चिता तैयार करें जिस पर हम तुम्हारी घृणित सम्पत्ति, सब की सब जलाकर भस्म कर दें।

ताया ने यह स्वीकार कर लिया—उसने कहा—‘जैसा चाहिए वैसा कीजिए पिता ! मैं यह जानती हूँ कि कभी-कभी जड़ वस्तुओं में शैतान बसते हैं। रात को कुछ वस्तुएँ बोलती हैं, या तो थोड़ी-थोड़ी देर पर खटखट की आवाज करती हैं या मंकेतों की भाँति हलका प्रकाश करने हैं। फिर भी यह कुछ नहीं है। पिता, परियों के कुंज में घुसते समय, दाहिनी ओर, आपने एक स्त्री की नगी मूर्ति, नहाने जाने की मुद्रा में बनी नहीं देखी ? एक दिन मैंने उसे जीवित प्राणी की तरह सिर फिराते और फिर अपनी पूर्व स्थिति में हो जाते देखा। मैं भय से काँप गई। मैंने निशियस से यह विचित्र बात कही तो वह मेरे ऊपर हँस पड़ा। शायद मूर्ति में कुछ जादू है, क्योंकि उसने डल्लाशस नाम के एक व्यक्ति के मन में वामना भड़का दी, जो मेरे सौन्दर्य के प्रति भी उदासीन था। यह तय है कि मैं भी उन वशीकरणों में से एक थी, भारी से भारी विप-नियाँ मेरे सामने आईं; क्योंकि पुरुष तो पीतल की एक मूर्ति के आलिंगन से भी दम घुटकर मर गये हैं। फिर भी बहुमूल्य और महान् कला की वस्तुओं को नष्ट करना ठीक नहीं, और यदि मेरे परदों आदि को जला दिया गया तो भारी नुकसान होगा। उनमें से कुछ तो अपने रंगों के सौन्दर्य के कारण ही प्रशंसनीय हैं और जिन्होंने मुझे ये प्रदान किये हैं, उन्हें

उसके लिए काफ़ी धन व्यय करना पड़ा है। मेरे पास बहुमूल्य प्याले, मूर्तियाँ और चित्र हैं। मैं नहीं मानती कि इन्हें नष्ट कर देना ही आवश्यक है। किन्तु पिता, आप जो कुछ जरूरी समझें, करें।'

यह कहकर वह पैफ़नाशस के पीछे पीछे अपने द्वार की ओर बढ़ी जहाँ न जाने कितनी मालायें और छत्र भेंट चढ़ चुके थे। द्वार खोलकर उसने नौकर को, सब दासों को बुला लाने की आज्ञा दी। चार रसोइए आये जो पीले रंग के थे और सभी एक आँख के काने थे। एक ही जाति और वर्ण के और एक ही तरह के काने इन चार गुलामों को एकत्र करने में ताया को बहुत कष्ट और व्यय उठाना पड़ा था। जब वे टेबुलों पर भोजन लगाते, अतिथियों की उत्सुकता बढ़ जाती और ताया उनके उनकी जीवन-कथा कहलाती। वे चुपके से आकर खड़े हो गये। उनके बाद उनके सहकारी आये। उसके बाद साईस, शिकारी, हरकारे, दूत, दो माली, छः भयानक हबशी और तीन यूनानी दास आये, जिनमें एक वैयाकरण था, एक कवि और एक गायक। क्रम से वे मैदान में खड़े हो गये। तब उत्सुक ह्वशिनें आईं जिनकी आँखें विचित्र रूप से नाच रही थीं और जो अपने लम्बे मुख फाड़ रही थीं। सबके अन्त में, अपनी नक्राव ठीक करती और स्वर्ण-श्रृंखलाओं से बद्ध अपने पाँव धीरे-धीरे उठातीं छः गोरी सुन्दरी दासियाँ, उदासभाव से आकर खड़ी हो गईं। जब सब आगये तब ताया ने उन्हें पैफ़नाशस की ओर दिखाते हुए कहा—

‘जैसा ये कहें वैसा करो। इनमें परमात्मा का निवास है। यदि तुमने इनका कहा न माना तो तुम्हारी मृत्यु हो जायगी।’

वह इस पर विश्वास करती थी कि वनमेवी महात्माओं में यह शक्ति है कि वे दुष्टों को, जो उनका अपमान करते हैं, पृथ्वी के खुले और जलते मुख में डाल देते हैं।

पैफनाशस ने स्त्रियों और यूनानी दासों को, जो स्त्रीसमान लग रहे थे, वहाँ से हटा दिया और शेष लोगों से कहा—‘मैदान के बीच में लकड़ी एकत्र करो, आग बचकाओ और उसमें घर और कुंज की तमाम चीजें डाल दो।’

आश्चर्य से वे अचल खड़े रह गये और अपनी मालकिन की ओर प्रश्नमूचक दृष्टि से देखा। वह जड़ और शान्त खड़ी थी। वे एक स्थान पर कन्धे से कन्धा भिड़ाये जमा हो गये, गोया यह समझने की चेष्टा कर रहे हों कि कहीं यह मजाक तो नहीं है !

पैफनाशस ने कहा—‘जल्दी करो।’

दासों में कई ईसाई थे। वे इस आज्ञा को समझ गये और घर में लकड़ी और मशालें लेने चले गये। अन्योंने भी उनका अनुसरण प्रवृत्तना से किया, वे गरीब थे अतः धन से घृणा करते थे और स्वभावतः विनाश की ओर उनकी रुचि थी। वे लकड़ी का ढेर लगा रहे थे, तभी पैफनाशस ने ताया से कहा—

‘मैंने एक बार सोचा कि किसी यूनानी चर्च के खजानची को बुलाकर, (यदि ऐसा कोई चर्च हो और जो मार्क्स आर्थ-द्वारा अपवित्र न कर दिया गया हो) तुम्हारी सम्पत्ति उसे विधवाओं को बाँट देने को दे दूँ और इस तरह पाप के फल को न्याय का पुनीत धन बना दूँ। लेकिन यह ईश्वरीय प्रेरणा नहीं थी, इसलिए मैंने इस विचार को त्याग दिया। विलास की कमाई मसीह के प्रियजनों को देना भारी अपराध होगा। ताया, जिस-जिस वस्तु का तुमसे स्पर्श हुआ है उसका अग्नि में भस्म हो जाना ही ठीक है। ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम्हारे ये नक्काब और वस्त्र, जिन्होंने सागर की अगणित तरंगों की तरह अगणित चुम्बन पाये हैं, अब ज्वाला की लपटों से चुम्बित होंगे। गुलामो, जल्दी करो, और लकड़ियाँ लाओ, आग और

तेज करो। ताया, तुम भीतर जाओ, अपने घृणित वस्त्र उतार डालो, और अपनी सबसे गरीब दासी ने उसका वस्त्र माँगकर पहनो।'

ताया ने आज्ञापालन किया। उधर चारों रसोइये झुके हुए जलती लकड़ी फूँक रहे थे, इधर हबशियों ने चिता पर हाथीदाँत, आबनूस और सागौन के बने सन्दूक फेंकने शुरू किये, जो आग में पड़कर खुल जाते थे, और उनमें से रत्नजटित मुकुट, हार और मालायें बाहर निकल पड़ती थी। धुआँ गहरा काला होकर कनार में ऊपर उठ रहा था। जैसे प्राचीन समय में बलिदान की भेंट ऊपर को स्वीकृत होने को उठती थी। सुलगती हुई आग जोरों से धधक उठी, भयंकर पशु की भाँति गरज उठी और अलक्षित लपटों से आना बहुमूल्य ईंधन निगलने लगी। गुलामों का साहस बढ़ा, वे कीमती कालीन, चाँदी के काम की हुई नकाबें और फूलदार परदे जल्दी-जल्दी बाहर लाने लगे। भारी टेबुल, कुर्सियाँ, मोटे गद्दे और सोने की पिनोंवाले बिछौनों के भार से वे झुक-झुक जाने लगे। तीन हबशी गुलाम परियों की रंगीन मूर्तियाँ लिये आये—जिनमें एक तो जीवित स्त्री की तरह प्यार की जाती थी—और ऐसा लगता था मानो तीन भारी बन्दर एक स्त्री को उठाये लिये जा रहे हों। जब ये सुन्दर नग्न मूर्तियाँ उनके हाथों में गिरी और पत्थर पर चूर चूर हो गईं तो कराहने की आवाज़-सी सुन पड़ी।

इसी समय ताया आई। खुले केश लहरा रहे थे, पाँव नंगे थे और एक भद्दा और अजीब वस्त्र पहने हुए थी जो उसके शरीर के स्पर्शमात्र में स्वर्गीय विलास से भर उठा था। उसके पीछे एक माली आया जो अपनी लहराती दाढ़ी में एक हाथीदाँत की मूर्ति छिपाये हुए था।

ताया ने उसे रुक जाने को संकेत किया और पैकनाशस के पास जाकर उसे वह मूर्ति दिखाई।

उमने पूछा—‘पिता, क्या इसे भी आग में डाल देना होगा ? यह प्राचीन आश्चर्यजनक कारीगरी का नमूना है और मूल्य में सौगुने सोने के बराबर है । इस हानि की क्षति-पूर्ति नहीं हो सकेगी, संसार में कोई ऐसा कलाकार नहीं जो इतनी सुन्दर मूर्ति दूसरी बना सके । पिता, यह भी सोचिए कि ये प्रेमदेव हैं, और इनके साथ इतनी क्रूरता का व्यवहार नहीं करना चाहिए । विश्वास कीजिए, प्रेम एक सद्गुण है और यदि मैंने पाप किये हैं, तो इनके कारण नहीं बल्कि इनके विरुद्ध ! जो काम उन्होंने मुझसे कराये हैं उनके लिए मुझे कभी दुःख न होगा, मैं केवल उन्हीं कर्मों के लिए रोती हूँ जो मैंने उनकी आज्ञा के विपरीत किये हैं । वे नहीं चाहते कि स्त्रियाँ उन व्यक्तियों को अपना समर्पण करें जो उनसे प्रेम नहीं करते । इसके लिए उनकी प्रशंसा करनी चाहिए । देखिए पिता, यह छोटी मूर्ति कितनी सुन्दर है ! माली की दाढ़ी में कितनी गान्ति मे यह छिरी बैठी है ! एक दिन निशियस ने, जो उस समय मुझे प्यार करता था, इसे मेरे पास लाकर कहा—‘यह तुमसे मेरी बातें कहेगा । किन्तु इस नटखट मूर्ति ने निशियस की नहीं, बल्कि एक अन्य युवक की बात कही जिसे मैं एन्टियोक में रहते समय जानती थी । पिता, इस चिता पर काफ़ी धन भस्म हो चुका । इस मूर्ति को बचाइए और किसी मठ में रख दीजिए । इसे देखनेवाले लोग अपना मन भगवान् में लगायेंगे, क्योंकि प्रेम स्वभावतः ही सुन्दर और परिष्कृत विचार रखता है ।’

माली ने समझा कि अब मूर्ति बच गई और उस पर ऐसे प्रसन्न हो रहा था, जैसे छोटे बच्चे को देखकर प्रसन्न हो रहा हो । सहसा ही पैफनाशस ने उसके हाथ से मूर्ति छीन ली और लपटों में उछालते हुए कहा—‘निशियस ने इसे स्पर्श किया है, यही माबित करना है कि यह तमाम विष फैला-येगा ।’

तब वह भड़कीले वस्त्र, लाल आवरण, सुनहरी चप्पलें, कंधियाँ, आईनें, लैंप, सितार और बीणा, सब उठा-उठाकर उस अग्निकुंड में भोंकने लगा जो इस समय बहुत शानदार लग रहा था। विनाश की उत्तेजना से मस्त गुलाम नाच रहे थे और चिनगारी और अंगारों की बरसात में अट्टहास कर रहे थे !

शोर सुनकर पड़ोसी एक के बाद एक जाग गये और खिड़कियाँ खोल, आँखें मलते हुए इस घुएँ का कारण खोजने लगे। अर्द्धनग्न दशा में वे मैदान में आये और अग्निकुंड के पास गये, सोचा, यह क्या है !

इन पड़ोसियों में वे व्यापारी भी थे जिनसे ताया इत्र आदि और अन्य वस्तुएँ खरीदा करती थी। ये अपना सिर हिला-हिलाकर मामला समझने की चेष्टा कर रहे थे। लम्पट युवक, जो भोजन के बाद, अपने नौकरों के पीछे-पीछे घर लौट रहे थे, जिनके गले में पुष्प-मालायें थीं और जिनके वस्त्र ढीले-ढाले थे, ठिठककर खड़े हो गये और चीखने लगे। निरन्तर बढ़ती हुई उत्सुक भीड़ ने शीघ्र ही जान लिया कि ताया, एन्टिनोय के पुरोहित पैफनाशम के कथनानुसार, आश्रम में दीक्षित होने के पूर्व अपनी सम्पत्ति जलाकर भस्म कर रही है।

व्यापारियों ने सोचा—“ताया इस नगर को छोड़ रही है। यह खयाल तक भयानक है कि हम अब उसके हाथ कुछ न बेच पायेंगे ! उसके बिना हमारा क्या हाल होगा ? इस साधु ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। वह हमें बरवाद कर रहा है। उसे ऐसा क्यों करने दिया जाता है ? कानून किस दिन काम आयेंगे, एलेक्जैन्ड्रिया में क्या मैजिस्ट्रेट नहीं रह गये ? ताया ने हमारे स्त्री-वच्चों तक की परवाह नहीं की ! उसका यह काम सार्वजनिक अपराध है। उसे रोकना चाहिए, वह भले ही न चाहे, तब भी उसे नगर में रोक रखना होगा।”

युवकवृन्द सोच रहे थे—‘यदि ताया ने अभिनयों में भाग लेना छोड़ दिया और प्यार करने से मुख मोड़ लिया तो हमारे प्रिय मनोरंजन समाप्त हो जायेंगे। वह नाट्यशाला की गरिमा और सौन्दर्य थी। जो उसे पा नहीं सकते थे उनके लिए वह आनन्द का साधन थी। पुरुष स्त्रियों को उसी के नाम पर प्यार करते थे, प्रत्येक चुम्बन आलिंगनों पर उसकी छाप थी, वह समस्त आनन्दों से बढ़कर आनन्द थी। यह विचार-मात्र कि वह हमारे बीच उपस्थित है, हमें उत्तेजित कर देता था।’

युवक ऐसा ही सोचते थे। उनमें से एक, जिसका नाम सेरन्स था और जिसने ताया को कभी प्यार किया था, इस जबर्दस्ती के काम पर बिगड़ उठा और मसीह को खरी खोटी सुनाई। हर ओर ताया के इस कृत्य की कड़ी निन्दा हो रही थी।

‘इस तरह भागना कायरता है।’

‘यह लज्जाजनक विदा है।’

‘वह हमारे मुँह की रोटी छीने लिये जा रही है।’

‘वह हमारी कन्याओं का धन छीने लिये जा रही है।’

‘मैंने जो मुकुट उसे बेचे हैं, उनका दाम तो उसे देना ही होगा।’

‘और उन साठ वस्त्रों का भी, जो उसने मुझे आर्डर किये हैं।’

‘वह सबकी ऋणी है।’

‘उसके जाने के बाद नायिकाओं का अभिनय कौन करेगा?’

‘उसके घर का द्वार बन्द हो जाने पर जीवन नीरस हो जायगा।’

‘एलेक्जेंड्रिया के आकाश में वह चमकता सितारा, निर्मल चन्द्रमा थी।’

नगर के प्रधान भिखारी, अंधे, लूले और पंगु व्यक्ति मैदान में एकत्र हो गये थे और उस सम्पत्ति की ढेरी के पास आकर कराह उठे—

‘ताया के जाने के बाद हमें भोजन देकर कौन जिलायेगा ? उसके भोजन के टेबुल के बचे मांस आदि से दो सौ अभागों का रोज पेट भरता था और उसके प्रसन्न प्रेमीगण, उससे विदा होते समय, भर भर मुट्ठी रुपये हमें प्रदान कर देते थे ।’

भीड़ में चोर आदि भी थे जो बुरी तरह चीख रहे थे और पास खड़े व्यक्तियों को धकिया रहे थे ताकि वहाँ उपद्रव मच जाय और वे कुछ मूल्यवान् सामग्री उठा ले जायें ।

इस हंगामे के बीच केवल एक ही व्यक्ति ऐसा था जो शान्त और स्थिर खड़ा था । वह था वृद्ध थैडियस, जिसके बहुत-से रुपये ताया पर निकलते थे । वह दूर दूर से चीज लाकर उसके हाथ बेचा करता था । ठीक सामने देखते हुए और कानों को साफ़ करते हुए वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था और विचारमग्न-सा लगता था । अन्त में वह युवक सेरन्स के पास पहुँचा, उसकी आस्तीन पकड़कर धीरे से कहा—‘तुम्हें ताया मानती है । तुम उसे स साधु के साथ न जाने दो ।’

सेरन्स कह उठा—‘सच कहता हूँ, वह ऐसा नहीं कर सकेगा । मैं ताया से बातें करूँगा, मैं शेखी नहीं बघारता, पर मुझे विश्वास है, इस काले पादरी की बनिस्बत वह मेरी बात पर अधिक ध्यान देगी । इस उपद्रवी भीड़ को हटाओ ।’

घूसों से मर्दों को हटाया, बूढ़ी स्त्रियों को गिराना और वच्चों को कुचलता वह ताया के पास पहुँचा और उसे एक ओर खींच कर कहा—‘सुन्दरी, मेरी ओर देखो । अपनी बातों को याद करो और फिर कहो, क्या सचमुच ही तुम प्रेम करना त्याग दोगी ?’

पैफनाशस तुरन्त ताया और सेरन्स के बीच में आ गया और चीखकर बोला—‘नीच, यदि उसे छुआ तो तेरी मृत्यु निश्चित है। वह पवित्र हो गई है और भगवान् की वस्तु है।’

युवक क्रोध से चिल्ला उठा—‘ओ जड़बुद्धि साधु, यहाँ से चला जा। मुझे अपने मित्र से बातें करने दे, नहीं तो मैं दाढ़ी पकड़कर तेरा गन्दा शरीर आग के पास खींच ले चलूँगा और जिन्दा ही भून डालूँगा।’

ताया की ओर उसने अपने हाथ बढ़ा दिये। किन्तु, साधु पैफनाशस ने उसे एकाएक तेज़ी से पीछे ढकेल दिया। वह चार कदम दूर, कुण्ड के पाम, लकड़ियों के समीप गिर पड़ा।

बूढ़ा थैडियस सबके पास जा जाकर, गुलामों के कान खींचकर और स्वामियों के हाथ चूमकर, हर उपाय से सबको पैफनाशस के विरुद्ध भड़काता रहा और शीघ्र ही उसने एक दल तैयार कर लिया जो दृढ़तापूर्वक उस बलात्कारी साधु की ओर चला। सेरन्स उठा, उसका चेहरा काला हो गया था, बाल झुलस गये थे, धुएँ और क्रोध में उसका बुरा हाल हो रहा था। उसने देवताओं को गालियाँ दी और उन्नेजित भीड़ में घुसा जिसके पीछे भिखारी भी दुबके हुए अपनी बैसाखियाँ हिला रहे थे। पैफनाशस तुरन्त ही फैले हुए हाथों, उठे हुए डण्डों और दूर्वचनों से घिर गया।

‘इस साधु को कौओं से नुचवाओ।’

‘नहीं, आग में भोंक दो। जिन्दा ही भून डालो।’

पैफनाशस ने ताया को कसकर छाती से चिपटा लिया और मेघ की तरह गरजकर बोला—‘इस कबूतरी को परमात्मा के बाज़ के चंगुल से छीनने की चेष्टा न करो, बल्कि इसका अनुसरण करो और इसकी ही तरह अपने कलंक को भी दमकता स्वर्ण बना डालो। इसके आदर्शों पर चलकर, अपने धन-सम्पत्तिरूपी झूठे देवताओं को त्याग दो, जिन पर

तुम्हारा इतना विश्वास है । जल्दी करो, निर्णय का दिन दूर नहीं है, परमात्मा का धैर्य अब समाप्त हो रहा है । प्रायश्चित्त करो, अपने पाप स्वीकार करो, आँसू बहाओ और भगवान् से प्रार्थना करो । ताया के चरण-चिह्नों पर चलो । अपने अपराधों से घृणा करो, जो उसके पापों से कम घृणित नहीं हैं । तुममें से कौन, चाहे वह रंक हो या राजा, व्यापारी हो या सिपाही, गुलाम हो या भद्र नागरिक, भगवान् के सामने कह सकता है कि उसकी स्थिति यहाँ एक वेश्या से अधिक रही है ? तुम सब मूर्तिमान् अपवित्रता हो, और यह परमात्मा की कृपा का ही फल है जो तुमसे कलंक फूटकर बह नहीं निकलता ।'

वह बोल रहा था तो आँखों से लपटें निकल रही थीं, लगता था जैसे ओठों से अंगारे झर रहे हों । सुननेवाले, न चाहते हुए भी, मंत्रमुग्ध-से सुन रहे थे ।

बूढ़ा थैडियस स्थिर न बैठा । वह पत्थर के टुकड़े और घोंघे बटोरकर अपने वस्त्रों में छिपा रहा था । चूँकि स्वयं फेंकने की हिम्मत न पड़ती थी अतः उसने भिखारियों के हाथों में उन्हें पकड़ा दिया । तुरन्त ही पत्थर चलने लगे, और एक सधा हुआ निशाने का घोंघा पैफ़नाशस के माथे पर जाकर लगा । पैफ़नाशस के चेहरे से रक्त बह बहकर बप्तिस्मा के जल की भाँति उस पश्चात्तापिनी ताया पर गिरने लगा । ताया साधु के आलिंगन से पिस गई थी और उसका कोमल शरीर उसके खुरदुरे वस्त्रों से छिल गया था । उसकी नसों में आश्चर्य और भय का संचार हो रहा था ।

इसी समय, भड़कीले वस्त्र पहने एक कम आयु का व्यक्ति उस लहराती भीड़ में आकर खड़ा हो गया और बोला—'ठहरो, ठहरो । यह साधु मेरा भाई है ।'

यह व्यक्ति निशियस था जो दार्शनिक यूक्राइटस को दफ़नाने के बाद मैदान से होकर घर की ओर जा रहा था। उसने तनिक भी स्तम्भित हुए बिना जलती हुई चिता को देखा, (उसे कभी कोई वस्तु चकित नहीं करती थी), ताया को मोटे वस्त्र पहने देखा और पैफ़नाशस पर पत्थर पड़ते देखा। उसने फिर कहा—‘ठहरो, मैं कह रहा हूँ, मेरे साथी को छोड़ दो। पैफ़नाशस का सम्मान करो।’

किन्तु, नैयायिकों के साथ निरन्तर सूक्ष्म विवेचनों में लगे रहनेवाले निशियस के पास वह असाधारण शक्ति नहीं थी जो जनता पर प्रभाव डालती है। लोगों ने उसकी बात नहीं सुनी। पत्थरों और धोंधों की एक बौछार फिर पैफ़नाशस पर पड़ी जो ताया को अपने शरीर से छिपाये भगवान् की प्रार्थना कर रहा था; जिनकी कृपा से उसके घाव चुम्बनों से शीतल बनते जा रहे थे। अपनी बातें लोगों को सुना पाने से निराश होकर और मित्र को बचाने में अपने को असमर्थ जान, निशियस ने उसे भगवान् की कृपा पर छोड़ दिया था जिन पर वह कम ही विश्वास करता था। सहसा उसे एक कौशल सूझा। लोगों के प्रति उसकी जो घृणा थी उसने ही उसे यह सुझाया था। उसने कमर से अपनी थैली निकाली जो उसके उदार और धनी होने के कारण, स्वर्ण और रजत-मुद्राओं से भरी हुई थी, और पत्थर फेंकनेवाले लोगों के कानों के पास ले जाकर उसे खनकाने लगा। पहले तो लोगों ने कुछ खयाल नहीं किया, इतने उत्तेजित थे, किन्तु धीरे-धीरे उनकी आँखें खनकते हुए सोने की ओर घूमीं और हाथ पत्थर फेंकने से शिथिल पड़ने लगे। यह देखकर कि लोगों का ध्यान इधर आकर्षित हो गया है, निशियस ने थैली खोलकर भीड़ में मुद्राये लुटानी आरम्भ कीं। लालची लोग उन्हें उठाने को झुकने लगे। दार्शनिक निशियस अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर चतुराई से इधर-उधर दीनारें लुटाने लगा। पत्थरों

पर धातु के टुकड़ों की खनखन-ध्वनि से अत्याचारियों का दल पृथ्वी पर झुक गया । भिखमंगे, गुलाम और सीदागर, होड़ लगाये ज़मीन पर लोटने लगे और सेरन्स के चारों ओर एकत्र होकर भद्रवर्ग, यह दृश्य देखकर हँस-हँसकर लोटने लगा । सेरन्स स्वयं अपना क्रोध भूल गया । उसके मित्र पराजित प्रतिद्वन्द्वीगण को भड़काते थे, विजयी प्रतिद्वन्द्वीगण को छाँट रहे थे, उनके लिए बाज़ियाँ बदते थे और जब भगड़ा उठ खड़ा होता था तब उन्हें उत्तेजित करते थे; जैसे वे लड़नेवाले कुत्ते हों । एक पंगु के दीनार पा जाने पर भारी हल्ला मचा । अन्य युवकों ने भी रुपये लुटने शुरू किये, मैदान में केवल अगणित पीठें ही दीख रही थीं जो मुद्राओं की बौछार में, सागर की लहरों की भाँति, उठ गिर रही थीं । पंफ़नाशस का खयाल ही लोग भूल गये ।

निशियस उसके पास दौड़कर पहुँचा और उसे अपने वस्त्रों में छिपा लिया । ताया को और उसे बाहर गलियों में खींच ले गया जहाँ उनका पीछा करनेवाला कोई नहीं था । थोड़ी देर तक वे चुपचाप भागते रहे और तब अपने को सुरक्षित जान उन्होंने चाल धीमी की । निशियस ने व्यंग के स्वर में उदास होकर कहा—‘तमाशा हो गया । ताया हमसे दूर, मेरे मित्र के साथ चली जाना चाहती है !’

ताया ने उत्तर दिया—‘निशियस, यह सत्य है । मैं तुम जैसों के साथ रहते रहते उकता गई हूँ जो सदैव हँसते रहते हैं, सुगंध में नहाये रहते हैं और उदार आत्मसेवी होते हैं । जो कुछ मैं जानती हूँ, सबसे मुझे घृणा हो गई है और अब मैं अज्ञात को खोज रही हूँ । अनुभव ने मुझे बताया है कि सांसारिक सुख ही सच्चा सुख नहीं है, यह साधु मुझे बतलाता है कि सच्चा सुख दुःख में ही है । मुझे इन पर विश्वास है, क्योंकि ये सत्य-ज्ञानी हैं ।’

निशियस ने मुस्कराकर कहा—‘प्रिये, मुझे भी सत्यों का ज्ञान है। उसके पास केवल एक सत्य है, मेरे पास संसार के सभी सत्य हैं। मैं उससे धनी हूँ फिर भी, सच तो यह है कि, न गर्वित ही हूँ और न प्रसन्न ही।’

पैफनाशस को अपनी ओर क्रोध से देखते पाकर उसने कहा—‘प्रिय पैफनाशस, यह न समझो कि मैं तुम्हें एकदम उपहास के योग्य या मूर्ख समझता हूँ। मैं यदि अपने जीवन की तुलना तुम्हारे जीवन से करूँ तो कह सकता हूँ कि कौन अधिक महत्त्व का है। क्रोवाइल और मायरटेल\* ने पानी तैयार कर रक्खा होगा, मैं स्नान करने जा रहा हूँ। इसके बाद पक्षी के पंखों का भोजन करूँगा और तब शायद सवें बार एप्पूलियस की कोई कहानी पढ़ूँगा या पार्फिरियस का कोई नीति-ग्रन्थ पढ़ूँगा। तुम अपनी भोपड़ी में लौटकर, विनयी ऊँट की तरह झुककर, किसी बार बार के दुहराये मंत्र को लेकर माथा मारोगे और शाम को बिना छोँकी मूली खाकर पड़ रहोगे। प्रिय मित्र, इन सर्वथा विरोधी कार्यों में हम एक ही मनोभाव के अधीन हैं जो समस्त मानवीय कर्मों का एकमात्र कारण है। हम दोनों ही इस प्रकार अपना मुख ढूँढ़ रहे हैं; एक ही लक्ष्य हमारे सामने है, आनन्द ! असम्भव और अप्राप्य आनन्द ! यदि तुम्हें शलत रास्ते पर बताऊँ और अपने को सही रास्ते पर, तो मेरी अनुदारता होगी प्रिय मित्र !’

‘और ताया, धन और विलास की गोद में खेलते हुए तुम्हें जो सुख मिला, उससे अधिक यदि संयम और तपस्या में मिल सकता हो तो जाओ, खुशियाँ मनाओ, खूब सुखी हो। सब बातों को देखते हुए मैं

समझता हूँ, तुमसे लोगों को ईर्ष्या होनी चाहिए। अपनी अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार चलकर जीवन में मुझे और पैफनाशस को एक ही प्रकार का संतोष प्राप्त हुआ, पर ताया, तुम्हें तो इतने विरोधी और भिन्न आनन्द प्राप्त हो जायेंगे जो शायद ही किसी एक व्यक्ति को हो सकें। सच तो यह है, मैं एक घंटे के ही लिए वैसा महात्मा बनना चाहता हूँ जैसा हमारे मित्र पैफनाशस हैं। लेकिन यह मेरे भाग्य में नहीं। बिदा, ताया ! जहाँ तुम्हारी अन्तर्निहित शक्ति और भाग्य तुम्हें ले जाये, जाओ। निशियस की शुभेच्छायें लेती जाओ। मैं जानता हूँ, यह व्यर्थ है किन्तु जिन मादक भ्रमों के कारण मैंने तुमसे कभी प्यार किया था, उनका मूल्य शुभेच्छाओं और निष्फल पश्चात्तापों के अतिरिक्त मैं क्या दे सकता हूँ ? उस प्यार की स्मृति अब भी सुरक्षित है। बिदा, मेरी उपकारिणी देवी, अज्ञात गौरवशाली, रहस्यमय महत्ता, पुरुषों का सुख ! बिदा ! प्रकृति-द्वारा अज्ञात लक्ष्य साधन के लिए मायावी पृथ्वी पर गिराई हुई प्रतिमे !'

वह बोल रहा था, उधर पैफनाशस के हृदय का क्रोध बढ़ रहा था। अभिशापों के रूप में यह क्रोध फूट पड़ा।

'नीच, यहाँ से चला जा। मैं तुझे घृणा करता हूँ। ओ नारकीय प्राणी, तू उन अभागे गुनहगारों से भी बदतर है जो अभी मुझ पर गाली और पत्थरों की बौछार कर रहे थे। वे नहीं जानते थे कि क्या कर रहे हैं और परमात्मा का प्रकाश एक दिन उनके हृदयों को आलोकित करेगा, मैं इसके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। लेकिन ओ घृणित निशियस, तू केवल विश्वासघाती कपटी है, तीखा ज़हर है, तेरे मुख से निराशा और मृत्यु की ही ध्वनि निकलती है। सौ वर्षों में शैतान के जलते मुख से जो ईश्वर-निन्दा निकलती होगी, उससे कहीं अधिक तेरे एक कुटिल हास्य में भरी है !'

निशियस ने कोमल दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा—‘बन्धु, बिदा दो। घृणा और प्रेम, तुम्हारे धार्मिक विश्वास की ये दोनों अमूल्य निधियाँ अन्त तक तुम्हारे साथ रहें, यही कामना है। ताया, नमस्कार। मुझे भूलना तुम्हारे लिए वर्य्य होगा, क्योंकि मैं तुम्हें अपनी स्मृति में मर्जवा रक्खूँगा।’

उससे बिदा होने के बाद निशियस विचारमग्न हो, एलेक्जेंड्रिया के कन्निस्तान के पास की पेचीदी सड़कों से चला। यहाँ कुम्हार रहते थे जो दफनाने का सामान बनाते थे। उनकी दूकानें मिट्टी के खिलौनों से भरी हुई थी। चमकदार रंगों के देवी-देवता, स्त्रियाँ, अभिनय के दृश्य, छोटे छोटे पंखोंवाले दूत जो साधारणतया शव के साथ दफनाये जाते थे, सभी वहाँ रक्खे हुए थे। उसे लगा, कौन जाने इन मूर्तियों में से कुछ, जिन्हें वह देख रहा है, उसकी महानिद्रा में उसकी साथी हों ! उसे जान पड़ा, जैसे एक छोटी प्रेम-मूर्ति उसकी ओर देखकर व्यंग की हँसी हँस रही है। इस कल्पित मृत्यु की आशंका ने उसे कष्ट पहुँचाया। इस उदासी को दूर करने के लिए उसने तर्क करना आरम्भ किया, सोचा—

‘सच बात तो यह है कि काल में कुछ तथ्य नहीं है। यह केवल हमारे मस्तिष्क का भ्रम है। यदि इसका अस्तित्व ही नहीं है तो यह मेरी मृत्यु कैसे ला सकता है ? क्या इसके दह अर्थ हैं कि मैं अमर हूँ ? नहीं, इसका निष्कर्ष यह है कि मेरी मृत्यु इस समय भी वही है, जो थी, और आगे भी रहेगी। मुझे अभी उसका ज्ञान नहीं होता फिर भी वह है। मुझे उससे भयभीत नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो वस्तु आ चुकी है, उसके आगमन से डरना मूर्खता होगी। मृत्यु उसी तरह उपस्थित है जैसे किसी पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ, जिसे पढ़ तो मैं रहा हूँ पर समाप्त नहीं कर पाया हूँ।’

रास्ते भर वह इस तर्क में डूबा रहा पर उसे कुछ संतोष नहीं हुआ। जब घर पहुँचा तब भी उसका हृदय भारी था। क्रोबाइल और मायरटेल उसकी प्रतीक्षा में टेनिस खेल रही थीं और हँस रही थीं, यह उसने स्पष्ट सुना।

पैफ़नाशस और ताया नगर त्यागकर समुद्र के किनारे किनारे चले।

पैफ़नाशस ने कहा—‘ताया, यह विशाल नील सागर भी तेरी कालिमा धोने में असमर्थ है!’

वह क्रोध और घृणा से कह रहा था—‘कुतियों से भी बदतर स्त्री! तूने काफ़िरों के साथ वेश्या-वृत्ति की है; भगवान् ने जिस शरीर को पवित्र बनाया था उसे भ्रष्ट किया है! तेरी कलंक-कालिमा इतनी अधिक है कि सत्य का ज्ञान हो जाने पर भी, बिना हृदय में अपने प्रति घृणा का अनुभव किये, तू न तो भगवान् की प्रार्थना कर सकती है और न वन्दना ही!’

तपती धूप में ताया पथरीली सड़कों पर पैफ़नाशस के पीछे-पीछे चली जा रही थी। थकान से उसके घुटने झुकने लगे, प्यास से उसकी साँसों से आग निकलने लगी। पाखंडियों के मन को द्रवित करनेवाली झूठी करुणा का उदय पैफ़नाशस के मन में होना तो दूर रहा। वह ताया के अपराधी देह के प्रायश्चित्तपूर्ण कष्टों पर प्रसन्न हो रहा था। घर्मोत्साह में वह ताया की देह को लौह-शलाकाओं से छेदने में भी संकोच न करता, जो अब भी उसके पापों के प्रमाणस्वरूप सुन्दर लग रही थी। विचारों ने उसकी उग्रता को और भी बढ़ाया, उसे याद आया कि ताया निगियस के साथ एक शय्या पर सो चुकी है। इस अपराध की गुस्ता इतनी भयंकर हो उठी कि शरीर का समूचा रक्त उसके कलेजे में एकत्र

हो गया, लगता था, जैसे उसकी छाती फट जायगी। अभिशाप कंठ तक आकर रुक गये और वह दाँत पीसने लगा। उछलकर विकराल रूप धारण किये वह भगवान् का भक्त ताया के सामने खड़ा हो गया। अन्तर्भेदिनी दृष्टि से उसने ताया की ओर देखा और उसके मुख पर थूक दिया।

बिना रुके ताया ने मुँह पोंछ डाला। पैफ़नाशस उसके साथ-साथ चलता रहा, उसकी ओर ऐसे देख रहा था जैसे वह साक्षात् नरक हो। वह एक पवित्र उत्तेजना में डूबा हुआ चल रहा था। वह प्रभु मसीह का बदला लेने की सोच रहा था ताकि उन्हें स्वयं ताया से बदला लेने की चेष्टा न करनी पड़े। उसी समय उसने ताया के पाँव से निकला हुआ एक रक्त-बिन्दु बालू पर पड़ा देखा। तब उसे हृदय में एक अज्ञात निर्मलता का अनुभव हुआ, सिसकियाँ आने लगीं, वह रोने लगा। वह दौड़कर उसके सामने पड़ गया, उसे अपनी बहन कहा और उसके रक्तरंजित चरण चूम लिये। अनगिनत बार कहा—‘मेरी बहन, बहन, माता, परम पवित्र ताया !’

उसने प्रार्थना की—‘देवदूतों, इस मूल्यवान् रक्तबिन्दु को उस सर्व-शक्तिमान् के सिंहासन के पास ले जाओ। ताया के रक्त से मिंचित एक आश्चर्यकारी पुष्प-वृक्ष इस रेत पर उगे, ताकि जो लोग इसके फलों को देखें, उनके मन और मस्तिष्क पवित्र हो उठें ! ओ पवित्र, पावन, परमपूज्या ताया !’

वह इस तरह प्रार्थना और शुभेच्छा प्रकट कर रहा था, उसी समय गधे पर सवार एक लड़का उधर से निकला। पैफ़नाशस ने उसे गधे पर से उतर जाने को कहा और ताया को उस पर चढ़ाया, स्वयं रास पकड़ी और यात्रा पर चल दिया। संध्यासमय, मनहर वृक्षों से छायादार

एक नहर के पास पहुँचकर उसने गधा एक वृक्ष से बाँध दिया, स्वयं एक काई जमी हुई चट्टान पर बैठ गया और ताया के साथ नमक और बूटी विशेष के साथ रोटियाँ खाईं। चुल्लू से निर्मल जल पिया और भगवच्चर्चा करने लगा। ताया ने कहा—‘ऐसा निर्मल जल मैंने कभी नहीं पिया, न तो ऐसी सुखद वायु में साँस ली। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे भगवान इस समीरण में डोल रहे हों !’

पैफनाथस ने उत्तर दिया—‘देखो प्रिय बहन, संध्या का समय है। पहाड़ियों पर रात्रि की काली छाया छाई हुई है। किन्तु शीघ्र ही तुम उषा के प्रकाश में जीवन के आवास देखोगी, शीघ्र ही तुम अनन्त प्रभात की गुलाबी उषा के दर्शन कर पाओगी !’

रात भर वे चलते रहे। अर्द्धचन्द्र लहरों की रजत फेनों पर प्रकाश बिखेर रहा था और वे स्तुति और भजन गा रहे थे। सूर्योदय होने पर जान पड़ा, लीबिया की वह निर्जन भूमि उनके सामने एक विशाल सिंहचर्म की भाँति फैली पड़ी है। रेत की सीमा पर, उषा के श्वेत प्रकाश में छुहारे के वृक्षों के समीप कुछ सफ़ेद भोपड़ियाँ खड़ी दीख रही थी।

ताया ने पूछा—‘पिता, क्या वे ही जीवन के मन्दिर हैं?’

पैफनाथस ने उत्तर दिया—‘तुमने ठीक कहा प्रिय पुत्री, बहन ! वही मुक्ति-गृह है जहाँ मैं तुम्हें स्वयं रक्खूँगा।’

शीघ्र ही उन्हें स्त्रियाँ कुटियों के आसपास चारों ओर डोलती दिखाई दीं जैसे अपने छत्तों के चारों ओर मधुमक्खियाँ फिर रही हों ! कुछ रोटियाँ पका रही थीं, कुछ तरकारी बना रही थीं, कई ऊन कात रही थीं। ईश्वरीय मुस्कान की भाँति उन पर दैवी ज्योति बरस रही थी। अन्य स्त्रियाँ भाऊ के वृक्षों की छाया में प्रार्थना कर रही थीं, गोरे हाथ बगल से झूल रहे थे। ईश्वर-प्रेम में मग्न हो जाने

के कारण वे केवल प्रार्थना, चिन्तन और नपस्या ही करती थीं। उन्हें इसी कारण 'मरियम की पुत्रियाँ' कहा जाता था, वे श्वेत वस्त्र पहनती थीं। जो हाथों से भी काम लेती थी उन्हें 'मार्था की बेटियाँ' कहा जाता था, वे नीले वस्त्र धारण करती थीं। सभी सिर पर वस्त्र रखती थीं। पर कम आयुवाली माये पर लटें लटकाये रहती थीं। हो सकता है कि यह अनजान में रहा हो, क्योंकि ऐसा करना वहाँ के नियमों के विरुद्ध था। एक अत्यन्त वृद्धा, गोरी और लम्बी स्त्री कुटी के द्वार पर लकड़ी की जरीब पर झुकी हुई घूम रही थी। पैफ़नाशस आदरसहित उसके पास गया, उसके नक्काव की कोर चूमी और कहा—'पूजनीया अल्बीना, तुम्हें भगवान् शान्ति दें ! मैं उम छने के लिए, जिसकी रानी तुम हो, एक मधुमक्खी लाया हूँ जिसे मैंने पुष्पहीन पथ पर भटकते पाया है। मैं इसे अपनी हथेली पर उठाकर लाया हूँ और इसे अपनी श्वासों से नवजीवन दिया है। अब मैं इसे तुम्हें सौंपता हूँ।'।

उसने उँगली से ताया की ओर दिखाया, जो गीजर की पुत्री के सामने घुटने टेके बैठी थी।

अल्बीना ने पल भर के लिए ताया पर एक तीव्री दृष्टि डाली, उसे उठने को कहा, माया चूमा और तब पैफ़नाशस की ओर घूमकर कहा—'इसे हम मरियम की पुत्रियों में रखेंगे !'

पैफ़नाशस ने वृद्धा को बताया कि किस उपाय से ताया मुक्तिगृह में आई है। यह भी कहा कि पहले उसे अकेले एक कुटी में रक्खा जाय। महन्तिन ने इसे मान लिया और ताया को एक कुटी में ले गई, जिसमें कुमारी लीटा रही थी, और जो उसकी मृत्यु के बाद से खाली पड़ी हुई थी। उस तंग कमरे में केवल एक बिछावन, एक टेबुल और एक षड़ा था। ड्योढ़ी पर पाँव रखते ही ताया अत्यन्त आनन्दित हो उठी।

पैफनाशस ने कहा—‘मैं यह द्वार स्वयं बन्द करना चाहता हूँ। इस पर एक मुहर भी लगाना चाहता हूँ, जिसे प्रभु मसीह स्वयं आकर तोड़ेंगे।’

वह जलाशय के पास गया, मुट्ठीभर गीली मिट्टी वहाँ से ली, थूक से अपना एक बाल उस पर चिपकाया और तब उसे द्वार की एक सेंध पर लगा दिया। बाद में वह खिड़की के पास पहुँचा जहाँ ताया शान्त और संतुष्ट खड़ी थी, घुटनों के बल बैठ गया, तीन बार ईश्वर की वन्दना की और पुकार उठा—‘जीवन के सच्चे रास्तों पर चलनेवाली ताया कितनी प्रिय है ! कितने मधुर हैं उसके चरण और कितना दीप्तिमान् है उसका मुख !’

वह उठा, कंटोप आँखों पर खींच लिया और धीरे-धीरे चला गया।

अल्डीना ने एक कुमारिका को बुलाकर कहा—‘प्रिय बेटी, ताया की जरूरत की चीज़ें, रोटी, पानी और एक तीन छिद्रोंवाली बाँसुरी उसके पाग पहुँचा दो।’

पैफ़नाशस फिर अपने निर्जन वन की ओर चला जा रहा था । सिरा-पियन के मठ का सामान आदि ले जानेवाली नाव पर उसने यात्रा की थी । जब वह उतरा, उसके शिष्य महान् आनन्द प्रदर्शित करने हुए उससे मिलने को आये । कुछ ने भगवान् की ओर हाथ उठाये, कुछ ने पृथ्वी पर झुककर, पैफ़नाशस की चपलों को चूम लिया । उन्हें मालूम था, पैफ़नाशस ने एलेक्जेंड्रिया में क्या क्या किया है । इसी तरह, वहाँ के साधु शीघ्र और गुप्त रूप से धर्म की सुरक्षा और गौरव के समाचार पा जाया करते थे । उस निर्जन में पैफ़नाशस के आने का समाचार अन्धड़ की तेजी से फैल गया ।

पैफ़नाशस बालूभरी ज़मीन पर चल रहा था और शिष्य पीछे-पीछे आ रहे थे । वे भगवान् की प्रार्थना कर रहे थे । फ़्लेवियन पर, जो इन शिष्यों में सबसे बड़ा था, धार्मिक उन्माद छा गया और वह मस्त होकर एक स्तुति गाने लगा ।

गुरु के आश्रम के द्वार पर पहुँचकर वे झुक गये और कहा—‘पूज्य पिता, क्या आप हमें आशीर्वाद देंगे और हम सबको थोड़ा-थोड़ा तेल प्रदान करेंगे ताकि हम आपकी वापसी का भोज कर सकें ?’

भोलाभाला पाल ही अकेले खड़ा रहा और पैफ़नाशस को न पहचान कर पूछा—‘यह कौन आदमी है ?’ किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया । यद्यपि वह भक्तिपरायण है, फिर भी बुद्धि उसके पास नहीं है, यह सभी जानते थे ।

पैफनाशस ने अपनी कुटी में अकेले बैठकर सोचा—‘अन्त में मैं पुनः अपने शान्ति और आनन्द की जगह पहुँच गया । मैं अपने संतोष के गढ़ में पुनः लौट आया । पर यह बात क्या है, यह प्रिय घास-फूस की छतवाली कुटी मुझे इस समय मित्रभाव से नहीं देख रही है, दीवालें मुझे देखकर ‘स्वागत’ के स्वर नहीं निकालतीं । मेरे जाने के बाद, इस मेरी अपेक्षित कुटी में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है । यह रहा मेरा टेबुल और विछावन ! यह रही वह मूर्ति जिसने मुझे कितनी ही बार प्रार्थना के भावों से भर दिया है, और यह है वह पवित्र पुस्तक जिसमें मैंने प्रायः परमात्मा की छाया पाई है । फिर भी, मैं जो कुछ छोड़ गया था, उसका कुछ भी मुझे नहीं मिल रहा है । जान पड़ता है, इन सब वस्तुओं की स्वाभाविक शोभा नष्ट हो गई है और मैं इन्हें प्रथम बार ही देख रहा हूँ । अपने हाथों से बरसों पहले बनाये हुए इस टेबुल-कुर्सी को देखकर, उस काली और सूखी मूर्ति को देखकर, भगवच्चर्चा से भरे हुए इन भोजपत्रों के पुलिन्दों को देखकर, मुझे ऐसा लगता है, मैं किसी मृत व्यक्ति के शेष चिह्न देख रहा हूँ । इनसे इतनी अच्छी तरह परिचित होते हुए भी आज ये पहचान में नहीं आ रही हैं । आह, वास्तव में मेरे वारों ओर की वस्तुओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, बल्कि मैं ही वह नहीं रह गया हूँ जो पहले था । मैं दूसरा ही व्यक्ति हो गया हूँ । वह मृत व्यक्ति मैं ही था । भगवान्, उसका क्या हुआ ? वह अपने साथ क्या-क्या लेता गया ? मुझे वह क्या बनाकर छोड़ गया ? मैं ही कौन हूँ ?’

अपनी कुटी को छोटी पाकर उसे बड़ी परेशानी हुई, यद्यपि धार्मिक दृष्टि से देखने पर उसे, उसे अत्यन्त विशाल समझना चाहिए था । ईश्वर की अनन्तता का चिन्तन यहीं आरम्भ हुआ था ।

पृथ्वी पर माथा टेककर जब उसने प्रार्थना करनी शुरू की। उसका आनन्द लौट आया, अभी प्रार्थना करते घंटा भर भी नहीं हुआ था कि ताया की मूर्ति उसके सामने आ खड़ी हुई। उसने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए कहा—‘प्रभु मसीह, तुमने ही इसे मेरे पास भेजा है। मैं तुम्हारी महती कृपा पहचान गया हूँ, तुम चाहते हो कि जिसे मैंने तुम्हें समर्पित किया है उसके दर्शनों से मुझे आनन्द, सन्तोष और शान्ति प्राप्त हो। तुम मेरी आँखों के आगे उसकी निर्दोष हैंसी, उसकी निष्कपट शोभा, उसका सौन्दर्य रख रहे हो जिसका विष मैंने निकाल दिया है। ओ परमात्मा, तुम मेरे सामने उसे उसी रूप में दिखा रहे हो जो तुम्हारे नाम पर मैंने उसे प्रदान किया है, पूजनीय और पवित्र, जैसे एक मित्र प्रसन्नतापूर्वक दूसरे को अपने उपहारों की याद दिलाता है। इस कारण मैं आनन्दित होकर इस स्त्री को देख रहा हूँ, मुझे यह विश्वास है कि इसका दर्शन तुम्हारी ही प्रेरणा से हो रहा है। तुम यह नहीं चाहते कि मैंने ही इसे तुम्हें समर्पित किया है, इस बात को कभी भूलो। वह तुम्हें आनन्द देती है अतः उसे अपने ही पास रखो, अपने अतिरिक्त किसी और को उसके सौन्दर्य से चकित न होने दो।’

रात भर वह सो नहीं सका, ताया उससे भी अधिक स्पष्ट रूप में उसे दीख पड़ी, जैसी परियों के कुंज में दीखी थी। उसने अपने से ही कहा—‘मैंने जो कुछ किया, परमात्मा की यशोवृद्धि के ही लिए किया।’

किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि उसके हृदय में शान्ति नहीं थी। उसने ठंडी साँस लेकर कहा—‘मेरी आत्मा, तू क्यों इतनी उदास और भीतर ही भीतर अशान्त है?’

किन्तु उसकी आत्मा अशान्त ही रही। एक महीने वह इसी उदासी की अवस्था में रहा जो साधुओं के लिए तीव्र परीक्षा का पूर्व लक्षण है। ताया की मूर्ति ने अहर्निश उसका साथ न छोड़ा। वह भी उस मूर्ति को दूर करने की चेष्टा नहीं करता था, वह अभी समझता था कि यह किसी महात्मा की मूर्ति है और ईश्वर-द्वारा भेजी हुई है। किन्तु एक दिन प्रातःकाल ताया ने स्वप्न में उसे दर्शन दिया। केशों में फूलों का मुकुट था और सौन्दर्य इतना दुर्द्धर्ष था कि वह भय से चीख उठा और ठंडे पसीने से तर-बतर, जाग पड़ा। नींद से अभी उसकी आँखें मिचमिचा रही थी कि उसने अपने मुख पर गर्म साँसों का अनुभव किया। एक छोटा सियार चारपाई के सिरहाने अपने दोनों पंजे रक्खे, अपनी तेज़ साँस उम पर फेंक रहा था और दाँत निकालकर मानों हँस रहा था।

पैफनाशस को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसे लगा जैसे पाँवोंतले धरती धँसी जा रही है। वास्तव में वह अपने खोये विश्वास से गिर गया। कुछ देर तक तो वह कुछ सोच ही न सका, फिर जब सचेत हुआ तो मोच-विचार से उसकी परेशानी और बढ़ गई।

उसने सोचा—‘दो ही बातें हो सकती हैं। एक तो यह कि यह स्वप्न भी, पहले के स्वप्नों की तरह, ईश्वरप्रदत्त था और मेरी स्वाभाविक भ्रष्ट बुद्धि ने इसे नष्ट कर दिया, जैसे गन्धे गिलास में मदिरा खट्टी हो जाती है। अपनी मूर्खता से मैंने नैतिक उपदेश को कलंकित रूप दिया और शैतान-द्वारा भेजे गये गीदड़ ने तुरन्त ही मेरी इस स्थिति से लाभ उठाया। दूसरी बात यह हो सकती है कि यह स्वप्न परमात्मा का दिया हुआ नहीं था, शैतान का था और दुःस्वप्न था। ऐसी दशा में, मुझे सन्देह होता है कि पहले के स्वप्न भी, जिन्हें मैं ईश्वरीय समझता

था, ईश्वरीय नहीं थे। इस स्थिति में तो मैं, जान पड़ता है, तपस्वियों के लिए आवश्यक विवेक बुद्धि से शून्य हूँ। दोनों हालतों में, भगवान् ने मुझमें अपनी विमुखता ही प्रदर्शित की है। मैं कारण तो नहीं सोच पा रहा हूँ, पर इसका प्रभाव अनुभव कर रहा हूँ।'

इसी तरह वह तर्क-वितर्क करता रहा और कष्ट से भगवान् की प्रार्थना की—'ओ न्यार्या परमात्मा, अपने इस सेवक की क्या परीक्षाएँ लेना चाहता है? किसी स्पष्ट संकेत-द्वारा क्यों नहीं मुझे बतला देना कि तेरा दिया हुआ क्या है और क्या दूसरों का !'

भगवान् ने, जिसकी लीला अगम्य है, अपने इस सेवक को इस विषय में प्रकाश नहीं देना चाहा और भ्रान्तियुक्त पैफनाशस ने तय किया कि अब वह ताया के विषय में नहीं सोचेगा। किन्तु उसका निश्चय असफल रहा। ताया सदैव उसके विचारों में उपस्थित रही। चाहे वह पढ़ता हो, चिन्तन करता हो, प्रार्थना करता हो या भगवत्-चिन्तन करता हो, वह सदैव उसकी ओर देखती रहती। उसके आगमन के पहले एक हलकी ध्वनि होती, जैसी स्त्रियों के वस्त्रों से होती है, और इन स्वप्नों में वह स्थिरता होती जो सत्य दृश्यों में भी नहीं होती जो अस्थिर और अस्पष्ट होते हैं। एकान्त के छायादृश्य स्थिर स्वभाव के होते हैं। वह विभिन्न रूपों में अवतरित होती, कभी अपना अन्तिम पुष्प-मुकुट पहने, अलेक्जेंड्रिया के भोज-जैसा बैंगनी रंग का, चाँदी के सितारे टँके वस्त्र पहने, चिन्तित मुद्रा में, कभी हवादार पारदर्शक वस्त्रों में, परियों के कुंज की छाया में बैठी विषयासक्त मुद्रा में, कभी ईश्वरीय आनन्द में मग्न, मोटे वस्त्रों में पवित्र और दीप्तिमान् मुद्रा में और कभी मृत्यु की आशंका से त्रस्त, नंगी छाती पर अपने टूटे दिल का रक्त लपेटे वह दिखलाई पड़ती थी। इन स्वप्नों से सबसे अधिक अशान्ति

उसे तब होती जब वह पुष्प-मुकुट, वस्त्र और वे ही नक्काब पुनः देखता जिन्हें अपने हाथों से वह जला चुका था, उसे यह स्पष्ट लगता कि ये वस्तुएँ अमर हैं। वह पुकार उठा—‘ताया के पापों की अनगिनत मूर्तियाँ मुझ पर आक्रमण कर रही हैं !’

जब उसने सिर फिराया, उसे लगा कि ताया पीछे खड़ी है और वह और भी उद्विग्न हो उठा। उसे तीव्र कष्ट होने लगा। किन्तु चूँकि प्रलोभनों के बीच भी उसका मन और तन पवित्र रहा था, उसने भगवान् पर विश्वास रक्खा और करुणापूर्ण स्वर में प्रार्थना की—‘परमात्मा, यदि मैं उन काफ़िरो के मध्य इसे दूँदने गया तो यह भी अपने लिए नहीं, तेरे ही लिए। जो काम मैंने तेरे लिए किया, उसके लिए यदि मैं कष्ट उठाऊँ तो ठीक न होगा। ओ मेरे रक्षक, मुझे बचाओ ! प्रभु मसीह, मेरी रक्षा करो ! जो काम मेरी देह न कर सकी, वह दुःस्वप्नों द्वारा न पूरा होने दो। शरीर को मैं जीत चुका हूँ, अब उसकी छाया को विजयी न होने दो। मैं जानता हूँ, पहले की अपेक्षा कहीं अधिक विपत्तियाँ मुझ पर अब हैं। अनुभव-द्वारा मैं यह भी जानता हूँ कि यथार्थ की अपेक्षा स्वप्न में अधिक शक्ति है। कुछ और हो भी कैसे सकता है, स्वप्न स्वयं ही उच्च सत्य है ! यही आत्मा है। प्लेटो ने स्वयं, मूर्तिपूजक होते ए भी, विचारों के अस्तित्व को स्वीकार किया है। परमात्मा, दुष्टों के उस भोजोत्सव में, जहाँ तू मेरे साथ था, मैंने लोगों को—वे पापी थे अवश्य, पर बुद्धिहीन कदापि नहीं थे—यह स्वीकार करते पाया कि एकान्त, चिन्तन और तपस्या में देखी हुई वस्तुएँ सत्य होती हैं। तेरी नीति-पुस्तकों में भी तो स्वप्नों की सदाशयता और गुणों के कितने ही प्रमाण हैं, चाहे वह स्वप्न-शक्ति तेरी हो या तेरे विरोधी शक्तियों की।’

भगवान् से जब वह इस तरह तर्क कर रहा था उस समय उसमें एक नये व्यक्ति का आभास मिल रहा था पर भगवान् ने उसे प्रकाश नहीं प्रदान किया। उसकी रातें एक लम्बे स्वप्न-सी होतीं और दिन भी रातों जैसे ही होते। एक दिन सुबह जब वह उठा तब वैसे ही कराह रहा था जैसी कगहें चाँदनी रात में पापी लोगों की कब्रों में निकलती हैं। ताया अपने खून बहते पाँव लिये उपस्थित थी और जब वह रो रहा था उसी समय वह उसके बिछावन में घुस गई। अब उसे सन्देह नहीं रह गया, ताया की वह मूर्ति पापजन्य थी।

घृणा से उसका हृदय विद्रोह कर उठा। वह अपने भ्रष्ट बिछावन से उठा और दिन के प्रकाश से बचाने के लिए मुँह हाथों में ढाँक लिया। घड़ियाँ बीतने लगीं पर उसकी लज्जा दूर न हुई। उसकी कुटी में सर्वत्र शान्ति थी। बहुत दिनों के बाद आज पहली बार पैफनाशस वहाँ अकेला था। दुःस्वप्न बीत गया था पर उसकी अनुपस्थिति और भी भयानक थी। स्वप्न की स्मृति से अलग हो पाने का कोई साधन नहीं था। उसने भय से सोचा—‘मैंने क्यों इसे दूर नहीं कर दिया? मैंने क्यों अपने को उसके ठंडे बाहुओं और जलते हुए घुटनों से अलग नहीं कर लिया?’

उस घृणित पलँग के पास उसे भगवान् का नाम लेने का साहस भी नहीं हो रहा था, उसे भय था, उसकी कुटी अपवित्र हो जाने के कारण शैतानों का प्रवेश वहाँ जब चाहे नभी हो सकता है। उसका भय निर्मूल नहीं था। सात छोटे गीदड़, जो द्वार पर भी नहीं खड़े हो सकते थे, क्रतार बाँधकर आये और उसके बिछावन के नीचे दुबक गये। सांध्य-प्रार्थना के समय आठवाँ भी आया जिसकी दुर्गन्ध असह्य थी। दूसरे दिन नवाँ गीदड़ भी उनसे आ मिला और शीघ्र ही उनकी संख्या तीस, साठ और अस्सी तक पहुँच गई। ज्यों-ज्यों वे बढ़ते थे त्यों-त्यों छोटे

होते जाते थे, और यद्यपि अब वे चूहों के बराबर ही हो गये थे फिर भी वहाँ की समूची पृथ्वी, बिछावन और तिपाइयों में वे फैल गये। उनमें से एक पलंग के सिरहाने के ताख पर उछलकर चढ़ गया और अपने अगले पंजे उस काली मूर्ति पर टिका, जलते नेत्रों में पैफ़नाशस की ओर देखने लगा। रोज़ नये गीदड़ आने लगे।

अपने स्वप्न की घृणा का प्रायश्चित्त करने और अपवित्र विचारों से अपने को मुक्त करने के इरादे में पैफ़नाशस ने तय किया कि वह इस गन्दी कुटी को त्याग देगा। घोर जंगल में जाकर रहेगा। वहाँ आश्चर्यजनक तपस्यायें करेगा, कठोर परिश्रम करेगा और नये नये प्रायश्चित्त साधन करेगा। किन्तु ऐसा करने के पूर्व वह वृद्ध पेलमान से सलाह लेने गया।

पैफ़नाशस ने पेलमान को बाग़ में पौधों को सींचते पाया। संध्या का समय था। नीली नील नदी श्यामल पहाड़ियों के नीचे से बह रही थी। पेलमान के कंधों पर एक कबूतर आकर बैठ गया था, अतः वह धीरे-धीरे चल रहा था ताकि वह उड़ न जाय।

पेलमान ने कहा—‘भाई पैफ़नाशस, तुम पर परमात्मा की कृपा हो ! उसका यश-गान करो। अपने निर्मित पशुओं को वह मेरे पास भेजता है ताकि मैं उनके साथ उसकी बातें करूँ, वायु में डोलनेवाले पक्षियों के साथ उसका कीर्तिगान करूँ। इस कबूतर को देखो, इसके कंठ के बदलते रंगों को देखो, बताओ, क्या यह परमात्मा की एक सुन्दर कारीगरी नहीं है ? पर भाई, तुम्हें किसी पवित्र विचार पर मुझसे बातें करनी हैं न ? यदि ऐसा है तो मैं अपना डोल रख दूँगा और तुम्हारी बातें सुनूँगा !’

पैफ़नाशस ने वृद्ध से अपनी यात्रा, वापसी, दिन और रात के स्वप्नों की बात बताई और उस पापयुक्त स्वप्न और गीदड़ों के झुंड की बात भी

कही। फिर पूछा—‘पिता, क्या तुम यह सही नहीं समझते कि मैं जंगल में चला जाऊँ ताकि असाधारण परिश्रम कर सकूँ और अपनी तपस्या से शैतान को चकित कर दूँ ?’

पेलमान ने उत्तर दिया—‘मैं एक क्षुद्र, पापी व्यक्ति हूँ और अपना समूचा जीवन हिरनों, खरगोशों और कबूतरों के साथ इस वाश में व्यतीत कर देने के कारण मुझे मनुष्यों का ज्ञान कम है। किन्तु भाई, मुझे ऐसा जान पड़ता है, तुम्हारे दुःख का कारण है विश्व के कोलाहल से एकाएक निर्जन की शान्ति में आगमन ! ये आकस्मिक परिवर्तन आत्मा को अस्वस्थ ही बना सकते हैं। भाई, तुम उसी व्यक्ति की तरह हो जो थोड़े ही समय में भयंकर गर्मी और सर्दी का शिकार बन जाता है। एक तरह की खाँसी और बुखार से तुम पीड़ित हो रहे हो। बन्धु पैफनाशस, मैं यदि तुम्हारे स्थान पर होता तो तुरन्त ही किसी भयंकर जंगल में भाग जाने की अपेक्षा ऐसे काम करता जो तपस्वी और साधु के उपयुक्त ही हैं। मैं पास-पड़ोस के मठों में जाता। रिपोटों से पता चलता है कि उनमें कुछ वास्तव में प्रशंसा के योग्य हैं। सेरापियन के मठ में, मैंने सुना है, १४३२ कोठरियाँ हैं। साधु वहाँ इतने वर्गों में विभक्त हैं जितने यूनानी वर्णमाला में अक्षर हैं। मैंने यह भी सुना है कि अक्षरों के अनुरूप ही उनके स्वभावों का वर्गीकरण भी किया जाता है। यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता भाई, तो स्वयं जाकर देखता और जब तक इस आश्चर्यप्रद दृश्य को देख न लेता, चैन न लेता। नील नदी के तट पर बिखरे हुए विभिन्न संघों को मैं अवश्य देखता ताकि उनकी तुलना कर सकूँ। तुम्हारी तरह के तपस्वियों के लिए ये काम सर्वथा उचित हैं। तुमने सुना ही है, महात्मा इफ्रेम ने अत्यन्त सुन्दर धार्मिक नियमों का निर्माण किया

है। उनकी आज्ञा से, तुम उन नियमों की नक़ल कर सकते हो, तुम्हारी लिपि सुन्दर होती है। मैं नहीं कर सकता, क्योंकि फावड़ा चलाते-चलाते मेरी बाँहों में वह लचक नहीं रह गई है जो भोजपत्र पर कलम चलाने के लिए आवश्यक है। किन्तु भाई, तुम्हें अच्छा अक्षर-बोध है और तुम्हें इसके लिए भगवान् का ऋणी होना चाहिए। अच्छे आलेख की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। बुरे विचारों से रक्षा करने के लिए नक़ल करना और पढ़ना सर्वोत्तम साधन है। भाई पैफ़नाशस, पॉल और एण्टोनी के वचनों को लिपिबद्ध क्यों नहीं कर डालते? इन पवित्र कार्यों में धीरे-धीरे तुम्हें मन और मस्तिष्क की शान्ति पुनः प्राप्त हो जायगी, एकान्त फिर से सुखकर लगने लगेगा और तुम पुनः उन धार्मिक कार्यों के योग्य हो जाओगे जो यात्रा-द्वारा व्याघात पड़ने के पूर्व करते थे। जिन दिनों पिता एण्टोनी हमारे साथ रहते थे, कहा करते थे—‘व्रत के आधिक्य से दुर्बलता होती है और दुर्बलता तन्द्रा ले आती है। कुछ तपस्वी अविवेकपूर्ण लम्बे व्रत से अपने शरीरों को नष्ट कर डालते हैं। उनके बारे में कहा जा सकता है—‘अपनी छाती में छुरा घुसेड़ वे अपने को शैतान के हाथों में सौंप देते हैं।’ पवित्र एण्टोनी ऐसा ही कहा करते थे, मैं एक मूर्ख प्राणी हूँ पर परमात्मा की कृपा से पिता एण्टोनी के ये वचन मुझे याद हैं।

पैफ़नाशस ने पेल्लमान को धन्यवाद दिया और उसकी सलाह पर विचार करने का वचन दिया। जब वह बाग़ की घास की चहारदीवारी पारकर बाहर आया तब पीछे मुड़कर पेल्लमान को पौधों को सींचते देखा। कबूतर अब भी उसकी झुकी पीठ पर बैठा हुआ था। इस दृश्य पर उसे रौने की इच्छा हो आई।

कुटी में लौटने पर उसने एक विचित्र ही दृश्य देखा। लगता था, अंधड़ से उड़े हुए बालू के कण हों पर उसने पहचान लिया, यह छोटे

गीदड़ों की एक बड़ी संख्या थी। उस रात पैफनाशस ने स्वप्न में एक बृहत् पाषाणस्तंभ देखा जिस पर एक मनुष्य-आकृति खड़ी थी। पैफनाशस ने एक आवाज़ सुनी—‘इस स्तंभ पर चढ़ो।’

जागने पर उसे विश्वास हो गया कि यह स्वप्न ईश्वरप्रदत्त है। उसने अपने शिष्यों को एकत्र किया और उनसे कहा—‘प्रिय पुत्रो, भगवान् जहाँ मुझे भेजना चाहते हैं, वहाँ जाने के लिए मैं तुमसे बिदा होता हूँ। मेरी अनुपस्थिति में फ़लेवियन को मेरी ही तरह मानना, वैसे ही उसकी आज्ञापालन करना और बंधु पॉल की हिफाज़त करते रहना। तुम सबको मेरा आशीर्वाद। अच्छा बिदा !’

जब वह चला जा रहा था, उसके शिष्य भुके हुए उसे प्रणाम कर रहे थे। जब वे उठे तो उन्होंने पैफनाशस की काली विशाल आकृति बालुकामय धरित्री की सीमा पर देखी।

रात-दिन वह चलता रहा और मूर्ति-पूजकों-द्वारा निर्मित उस मन्दिर के ध्वंसावशेष के पास पहुँचा, जहाँ अपनी आश्चर्यजनक यात्रा के समय वह बिच्छुओं और परियों के बीच सोया था। जादू के संकेतोंवाली दीवारें अभी भी खड़ी थीं। तीस विशाल स्तंभ, जो मानव के सिरों अथवा कमल के फूलों सदृश थे अभी भी भारी पत्थर की छतें उठाये खड़े थे। मन्दिर के अन्त में एक खम्भा इस भार से मुक्त, अकेले खड़ा था। इस पर एक स्त्री की हँसती आकृति बनी थी, लम्बी आँखें, गोल गाल थे और सिर पर गाय जैसा सींग थे।

पैफनाशस इसे देखते ही पहचान गया, यह वही स्तंभ है जो उसे स्वप्न में दीखा था। यह भी अन्दाज़ किया कि इसकी उँचाई बत्तीस हाथ होगी। पास ही के गाँव में जाकर उसने उतनी ही ऊँची एक सीढ़ी बनवाई और उसे स्तंभ से टिकाकर वह उस पर चढ़ा। मस्तक

नवाया और भगवत्-प्रार्थना की—‘परमात्मा, यही वह स्थान है जो तुमने मेरे लिए चुना है। क्या मैं मृत्युपर्यंत यहाँ तेरी कृपा से रह सकता हूँ?’

भगवान् के भरोसे अपने को छोड़कर, उसने अपने साथ खाने-पीने का सामान नहीं लिया था। जीवन के लिए आवश्यक सामग्री उदार कृषक उसे दे देंगे, यह उसको विश्वास था। दूसरे दिन प्रार्थना के समय स्त्रियाँ और बच्चे छुहारा और निर्मल जल लेकर आये, जिन्हें उन छोटे बच्चों ने स्तंभ के ऊपर पहुँचा दिया।

स्तंभ के शिखर पर इतना स्थान नहीं था कि पैफनाशस हाथ-पाँव पसारकर सो सकता। अतः वह पाँव सिकोड़े, छाती में सिर गड़ाये ही सोया। इस तरह की नींद तो उसे जागरण से भी अधिक कष्टदायक लग रही थी। सुबह बाज़ पक्षी अपने पंखों से उम आघात पहुँचाते और वह कष्ट और भय लिये जाग उठता।

संयोग की ही बात थी कि सीढ़ी बनानेवाला वह बढ़ई भगवान् का भक्त था। उसे यह देखकर दुःख हुआ कि पैफनाशस को धूप और वर्षा से कष्ट हो रहा है, कहीं ऐसा न हो कि नींद में वह स्तंभ में नीचे आ रहे, उसने स्तंभ पर एक छाजन और रेलिंग बना दी।

इस असाधारण साधु की प्रशंसा गाँव-गाँव में फैलने लगी और रविवार के दिन घाटी के श्रमिकों का दल स्त्री-बच्चों समेत उसके दर्शनार्थ आने लगा। पैफनाशस के शिष्यों को जब उसके इस उच्च विश्राम-स्थल का पता लगा तब वे आये और उससे स्तंभ के नीचे कुटियाँ बनाने की आज्ञा ली। प्रतिदिन प्रातःकाल वे आकर अपने गुरुदेव के चारों ओर गोलाकार खड़े हो जाते और उसकी ज्ञान की बातें सुनते।

वह उनसे कहता—‘मेरे बच्चो, नन्हें शिशुओं की तरह ही बने रहो जिन्हें प्रभु मसीह प्यार करते थे; इसी से मुक्ति होगी।

सब पापों का मूल शारीरिक वासना है, पिता की तरह इससे ही तमाम बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं। गर्व, लोभ, आलस्य, क्रोध और ईर्ष्या वासना की प्रिय सन्तानें हैं। एलेक्जेंड्रिया में मैंने जो देखा वह तुम्हें बताता हूँ; मैंने धनिकों को विलास में भ्रष्ट हो जाते देखा, जो गन्दी धारा के समान उन्हें खारे समुद्र में बहा ले जाती थी।'

इफ्रेम और सेरापियन के प्रधान महन्तों ने जब इस नई तपस्या का समाचार पाया तब आकर अपनी आँखों से देखना चाहा। पैफनाशस ने जब दूर पर उनकी नौका अपनी ओर आते देखी तो सोचा, भगवान् ने उसे यहाँ साधुओं के लिए एक आदर्श बनाकर रक्खा है। उसे देखकर वे दोनों महन्त अपना आश्चर्य दबाने के लिए आपस में सलाह कर, एक स्वर से इस असाधारण तपस्या को अनुचित ठहराया और पैफनाशस से नीचे उतर आने को कहा। उन्होंने कहा—'तुम्हारा यह जीवन सब नियमों के विपरीत है; यह असाधारण है और धार्मिक रीतियों के विरुद्ध है।'

पैफनाशस ने उन्हें उत्तर दिया—'साधु का जीवन ही आश्चर्यों का जीवन है। साधु का कार्य भी उसके ही समान असाधारण होना चाहिए। ईश्वर के किसी संकेत से मैं ऊपर चढ़ा हूँ, उसके ही किसी संकेत पर मैं नीचे भी उतरूँगा।'

प्रतिदिन साधुगण पैफनाशस के पास आने और उस स्तंभ के चारों ओर अपनी कुटियाँ बनाने लगे। उनमें से कुछ पैफनाशस का अनुकरण कर उस खड्डहर के अन्य ध्वंस भागों पर चढ़ गये किन्तु जब उनके अन्य साथियों ने इसके लिए उनकी भर्त्सना की और वे स्वयं इस कष्ट से थक गये, तब नीचे उतर आये।

यात्री आ-आकर जुटने लगे। कुछ भूखे-प्यासे, दूर-दूर से आते थे। एक वृद्धा ने उनके हाथ पानी और फल आदि बेचने का विचार किया। खम्भे से टिककर वह अपने लाल मिट्टी के घड़े रखकर और अपने पीछे नील श्वेत धारियों के चँदोवे के नीचे मिट्टी के प्याले और फल आदि सजाये, वह पुकारती रहती—‘कौन जलयान करना चाहता है?’ उसका अनुसरण कर एक नानवाई ने ईंटें लाकर वहीं अपना चूल्हा बनाया, इरादा था, यात्रियों को रोटियाँ बनाकर बेचेगा। यात्रियों की भीड़ लगातार बढ़ती जा रही थी, मिस्र के बड़े नगरों के निवासी आने लगे थे। एक धन के लोभी व्यक्ति ने, लोगों के ठहराने के लिए और ऊँटों और खच्चरों को ठिकाने के लिए, वहाँ एक सराय बनवाई। जल्दी ही उस स्तंभ के सामने एक बाज़ार बन गया जहाँ नील नदी के मछुए मछलियाँ और मालीगण तरकारियाँ विक्रयार्थ लाने लगे। एक नाई भी वहाँ आकर लोगों की हजामत बनाने लगा और उनका मनोरंजन करने लगा। वह प्राचीन मन्दिर, जो अब तक शान्त और एकान्त था, अब फिर से गति और जीवन-चिह्नों से भर उठा। भठियारों ने खोहों को भूगर्भ-स्थित कमरों का रूप दे दिया और उनके खम्भों पर पैफनाशस की मूर्तिवाले नोटिस लगा दिये। उनके नीचे यूनानी और मिस्री भाषा में लिखा था—‘अनार की शराब, अंजीर की शराब और सिलिशिया की सच्ची जो की शराब यहाँ मिलती है।’ पवित्र और मुन्दर आकृतियों से अंकित दीवारों पर व्यापारियों ने प्याज की मालायें, तली हुई मछलियाँ, मृत खरहे और खाल उधेड़ी हुई भेड़ें लटका दीं। शाम को, मन्दिर के पूर्व अतिथि चूहे लम्बी कतार में नदी की ओर चल पड़ते और बगुले परेशान होकर गर्दन पसारें घनी कार्निशों पर जा चढ़ते जिधर रसोई का धुआँ, शराबियों की चीख-पुकार और गुलामों का शोर-गुल होता रहता था।

चारों ओर सरकारी निरीक्षकों ने पक्की सड़कें बनवा दीं और राजगीरों ने मठ, छोटे गिरजे और चर्च बना दिये । छः महीने बाद वहाँ एक नगर बस गया जहाँ एक रक्षक, न्यायालय, जेल और एक स्कूल भी था जिसे एक वृद्ध अंधे मुंशी चलाने थे ।

यात्रीगण अनगिनत थे । प्रशंसा से भरकर ब्रिषप और चर्च के अन्य उच्च अधिकारी भी वहाँ आने लगे । एण्टियोक का प्रधान भी अपने पादरियों सहित आया जो उस समय भिन्न में था । उसने इस असाधारण उपासना की उच्च प्रशंसा की, और लिब्रिया के चर्चों के अध्यक्षों ने उसकी बात पर सहमति प्रकट की । यह जानकर इफ्रेम और सेरापियन के महन्त अपने पूर्व-व्यवहार की क्षमा माँगने आये । पैफनाशस ने उन्हें उत्तर दिया—  
'भाइयो, यह समझ लो कि जो तपस्या में कर रहा हूँ वह उन प्रलोभनों के मुकाबिले कुछ नहीं है जिनकी संख्या और शक्ति से मैं चकित रह जाता हूँ । बाहर से देखने पर मनुष्य छोटा जान पड़ता है । इस स्तंभ पर से, जहाँ भगवान् ने मुझे बिठा दिया है, मैं मानवों को चुहियों के समान डोलते देखता हूँ । किन्तु भीतर से मनुष्य महान् है, वह संसार की भाँति महत् है क्योंकि विश्व उसमें निहित है । यह जो कुछ मेरे सामने है—ये मठ, ये अतिथिगृह, नदी वक्ष पर की नौकायें, ये ग्राम और ये मैदान, नहरें, सिक्तााराशि और पर्वत, जो दूर पर मैं देख रहा हूँ, वे सब मेरे मन में निहित वस्तु की तुलना में कुछ नहीं हैं । मेरे हृदय में अनगिनत नगर और असीम निर्जन समाये हुए हैं । इस विशाल सृष्टि पर बुराई और मौत फैली हुई है, उसी तरह इसे छाये हुए है जैसे रात्रि पृथ्वी पर घिर आती है । मैं स्वयं ही दुर्भावनाओं का एक संसार हूँ ।'

उसके इस तरह बोलने का कारण था स्त्रियों की चाह. जो अभी तक उसके मन में थी ।

सातवें महीने एलेक्जेंड्रिया से दो स्त्रियाँ, बुबास्तिस और साया उसके पास आईं। ये बहुत दिनों से बंध्या थीं पर उन्हें आशा थी पैफ़नाशस की सहायता और उस स्तंभ की कृपा में उन्हें सन्तानप्राप्ति होगी। उन्होंने अपने शरीर स्तंभ से रगड़े। उसी समय, जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी, वहाँ पर रथ और पालकियाँ आती दीख पड़ीं। ये पैफ़नाशस के नीचे आकर रुक गईं। उनमें से ऐमे बीमार बाहर निकले जिन्हें देखकर भय लगता था। माताओं ने ऐसे बच्चों को पैफ़नाशस के सामने किया जिनके अंग विकृत थे, आँखें अंधी थीं; मुँह से भाग निकल रहे थे और आवाज़ तीखी थी। पैफ़नाशस ने अपना वरदहस्त उन पर रक्खा। अन्धे टटोलते हुए उसके पास आये और अन्दाज़ से अपना मुख उसकी ओर उठा दिया, जिसमें आँखों के स्थान पर दो रक्तमय छिद्र बने हुए थे। पक्षाघातवाले व्यक्तियों ने अपनी गतिहीन, शुष्क और घृणित, संकुचित देह दिखाई, लँगड़ों ने अपने लकड़ी के पाँव, स्त्रियों ने अपनी धावभरी छातियाँ उसके सामने खोलकर दिखाई। इस तरह हर तरह के रोगियों ने और बीमारों ने पैफ़नाशस से मुक्ति चाही और उसने सबको आशीर्वाद दिया।

पैफ़नाशस के अद्भुत कार्यों की खबर दूर-दूर तक फैलने लगी। मृगी के अभागे रोगी मिस्र के सभी भागों से असंख्य संख्या में उसके पास आये। स्तंभ को देखते ही उन्हें ऐँठन होने लगी, वे धरती पर लुढ़कने लगे, उन्मत्त-से हो उठे और गेंद की तरह हो गये। उसके शिष्य भी, यद्यपि यह अविश्वास्य है, उन्मादग्रस्त होकर उन मृगी के रोगियों-जैसा ही व्यवहार करने लगे। साधु और यात्रीगण, पुरुष-स्त्री सब गड़गड़मगड़ड लोटने-पोटने लगे, मुँह से भाग निकालने लगे, मुट्ठी भर-भरकर मिट्टी उठाकर फाँकने लगे और बकवाद करने लगे। स्तंभ के ऊपर बैठे हुए

पैफ़नाशस के अंगों में यह देखकर सनसनी होने लगी और उसने परमात्मा से प्रार्थना की—‘मैं ही इनके पापों का उत्तरदायी हूँ, मैं अपने ऊपर ही इनके समस्त अपराध ओढ़ता हूँ । इसी लिए भगवान्, मेरा शरीर दुरात्माओं का निवासस्थल है ।’

जब कोई रोगी व्यक्ति अच्छा होकर जाता तो पैफ़नाशस के शिष्य उसे लेकर उत्सव मनाते और कहते—‘अभी हमने भगवान् का दूसरा अवतार देखा है ।’

इस आश्चर्यजनक स्तंभ से सैकड़ों बैसाखियाँ लटकी हुई थीं, सिद्ध-काम स्त्रियों ने फूलों के हार, मुकुट और प्रतिज्ञापूर्ति के फलस्वरूप चित्र लटका रखे थे । यूनानियों ने उस स्तंभ पर सरल दोहे लिख दिये । स्तंभ पर हर यात्री अपना नाम लिख देता था । इस तरह वह स्तंभ शीघ्र ही आदमी के हाथ की ऊँचाई तक लैटिन, ग्रीक, मिस्री, इब्रानी, हेब्रू, सीरिया प्रान्तीय और ज़न्दी भाषाओं की लिखावट से भर गया ।

ईस्टर के उत्सवों के दिनों में उस आश्चर्यनगरी में इतनी भीड़ हुई कि बूढ़ों ने समझा, पुराने अद्भुत दिवस पुनः लौट आये । एक विस्तृत मैदान में मिस्र-निवासियों के बूटेदार कपड़े, अरबों के कपड़े, हम्शियों के सफ़ेद कपड़े, यूनानियों के छोटे लबादे, रोमनों के चोगे और असभ्य बर्बरों के लाल वस्त्र दीख रहे थे । पर्दानशीन स्त्रियाँ गधों पर सवार आती-जाती थीं जिनके आगे खोजे अपनी लकड़ियों से राह बनाते चलते थे । रस्सों पर खेलनेवाले बाजीगर धरती पर दरी बिछाये अपने कर्तब दिखाते रहते और मोन दर्शकों के सामने उछलते-कूदते रहते । सँपेरे हाथों से जीवित साँप निकालते । यह विशाल भीड़ शानदार लगती थी, धूल उड़ती रहती थी, चीख-पुकार मचती रहती, गुनगुनाहट होती रहती । ऊँट हाँकने-

वालों की ऊँटों को मारते समय की गाली-गलौज, कोढ़ और अन्धता की ताबीजें बेचनेवाले व्यापारियों की चीख-पुकारें, साधुओं-द्वारा नीति-पुस्तकों में से गाये जानेवाले भजन, स्त्रियों की कराहें, भिखारियों की गाने की आवाजें, भेड़ों की मिमियाहट और गधों का रेंकना, आलसी यात्रियों को मल्लाहों-द्वारा पुकारे जाने का स्वर, ये सब मिलकर एक विचित्र कोलाहल मचाये हुए थे। इनमे बढ़कर उन नंगे हब्सी बालकों का स्वर था जो इधर-उधर दौड़कर छुहारे आदि बेच रहे थे।

ये समस्त विभिन्न वस्तुएँ मुक्त-आकाश के नीचे डोल रही थीं। उस घने वातावरण में स्त्रियों की सुगन्ध, हब्शियों की बदबू, रसोई का धुआँ और धूप की भाप भरी हुई थी जो पैफनाशस के आगे जलाने के लिए वे पवित्र यात्रीजन कृषकों से खरीदते थे।

रात को चारों ओर अग्नि, मशालें और लालटेनें जल उठी और सब कुछ लाल छाया और काली आकृतियों में परिवर्तित हो गया। एक ओर दुबके हुए श्रोताओं के बीच बैठा हुआ एक वृद्ध व्यक्ति कह रहा था कि किस तरह 'बिटिऊ' ने अपने हृदय पर एक बार जादू कर दिया था, छाती से हृदय निकालकर बबूल के पेड़ में रख दिया था और स्वयं वृक्ष बन गया था। उसका मुख एक धुँएँदार लैम्प के प्रकाश से प्रकाशित था। वह मुद्रायें बनाता जिसे उसकी छाया उपहासजनक रूप दे देती, और आश्चर्यचकित श्रोताजन प्रशंसासूचक ध्वनियाँ कर रहे थे। सरायों में शराबी, कुर्सियों पर उठेंगे हुए जो की शराब और अन्य मदिराओं के लिए पुकार मचा रहे थे। उनके सामने नर्तकियाँ रेंगी हुई आँखें और नंगी छातियाँ लिए धार्मिक और शृंगारपूर्ण नृत्य नाच रही थीं। दूर पर युवक शतरंज खेल रहे थे और बूढ़े वेश्याओं के पीछे पड़े हुए थे। इन गतिशील वस्तुओं के ऊपर वह स्तंभ अचल खड़ा था, उसका गोमुखी-शिखर छाया

में मुँह बाये दीखता था और इसके ऊपर पैफनाशस, धरती और आकाश के बीच जाग्रत बैठा हुआ था। शीघ्र ही नील नदी के ऊपर, किसी देवी के कंधे की भाँति, चाँद उठा। पहाड़ियों पर प्रकाश और रंग बिखर गया और पैफनाशस ने सोचा, उसने ताया की मूर्ति रात्रि की नीलिमा में जल के ऊपर पड़ते हुए प्रकाश में चमकती देखी है।

दिन बीतते गये और पैफनाशस उस स्तंभ पर ही स्थिर रहा। बरसात आई तो वर्षा का जल छत की संधों से छन-छनकर उसके शरीर को भिगोने लगा, उसके शक्तिहीन अवयव और भी हिलने-डुलने से अशक्त हो गये। धूप से जलकर और ओस से भीग कर उसका चर्म फटने लगा, बाँहों और पाँवों पर बड़े बड़े घाव हो गये। उधर ताया की इच्छा उसे भीतर ही भीतर खाये जा रही थी। वह पुकार उठता—‘ओ शक्तिशाली परमात्मा, यही काफ़ी नहीं है। ये प्रलोभन मुझे क्यों देते हो? और गन्दे विचार और पाशविक इच्छायें मुझमें जाग्रत क्यों करते हो? भगवान्, मनुष्यों की समस्त वासनायें मुझमें भर दो, ताकि मैं उन सबका प्रायश्चित्त कर सकूँ। एक यूनानी कुनिया ने समूचे संसार का पाप अपने ऊपर ले लिया था, यह मैंने कुछ धोखेबाज़ मिथ्यावादियों को कहते सुना था। यदि वह भूठ भी हो तब भी इसमें कुछ तथ्य निहित है जिसकी सत्यता मैं आज समझ रहा हूँ। यह सत्य है कि लोगों की बुराइयाँ महात्माओं के हृदयतल में जा बसती हैं और वहाँ पड़ी रहती हैं, जैसे किसी कूप में हों। इसी कारण धार्मिक पुरुषों के मन में जितना कलुष भरा होता है उतना अपराधियों के मन में नहीं हो सकता। मुझे तुमने समूचे विश्व का मलाशय बना दिया है, इसके लिए मैं तुम्हारा गुणगान करता हूँ।’

एक दिन उस धार्मिक नगर में बड़ी अफ़वाह उड़ी, जो पैफनाशस के कानों तक भी पहुँची, कि एक बड़ा आदमी, महान् व्यक्ति, एलेक्जेंड्रिया

की जलसेना का प्रधान लूशियस औरेलियस कोटा वहाँ आ रहा है, बल्कि समीप ही आगया है।

खबर सच्ची थी। वृद्ध कोटा नील नदी के पोतवाही और नहरों का निरीक्षण करने निकल रहा था और उसकी कई बार इच्छा हुई थी कि वह इस महात्मा और इस नये नगर को देखे जिसका नाम ही 'महात्मानगर' पड़ गया था। एक दिन सुबह नगर-निवासियों ने नदी में नौकायें ही नौकायें देखीं। कोटा एक सुनहरी नाव पर, जिस पर बैंगनी रंग के पाल थे, अपनी नाविक सेना के आगे-आगे चला आ रहा था। वह उतरा और अपने मंत्री और डाक्टर अरिस्टचूस के साथ आगे बढ़ा।

अनुचरों की एक बड़ी मंख्या उसके पीछे-पीछे चली और नदीतट शस्त्रों और सैनिक वर्दियों में चमक उठा। स्तम्भ से कुछ कदम पहले वह रुक गया और वस्त्र के दामन से मुख पोंछता हुआ पैफ़नाशस को देखने लगा। कुतूहली स्वभाव का होने के कारण उसने अपनी लम्बी यात्राओं में बहुत कुछ देखा था। उन्हें वह याद रखना चाहता था और अपना वर्तमान ग्रन्थ लिख चुकने के बाद उसका इरादा इन विचित्र वस्तुओं पर एक पुस्तक लिखने का था। उसे सामने के इस दृश्य में बहुत दिलचस्पी हो रही थी।

उसने मन ही मन कहा—'कैसी विचित्र बात है ! और आश्चर्य यह है कि यह व्यक्ति कभी मेरा अतिथि हुआ था ! ठीक है। साल भर पहले यह व्यक्ति मेरे साथ भोजन करने आया था। उसके बाद यह एक अभिनेत्री को लेकर भाग गया था।'

अपने मंत्री की ओर घूमकर वह बोला—'लड़के, मेरे कागज़ों में इसे नोट कर दो, खंभे की लम्बाई-चौड़ाई लिखना भी न भूलना। शिखर का स्वरूप भी लिख देना।'

एक बार फिर माथे का पसीना पोंछकर वह बोला—‘जानकार लोगों ने मुझे बताया है कि साल भर पहले जब यह माधु इस स्तम्भ पर चढ़ा था, तब से एक मिनट के लिए भी नीचे नहीं उतरा। अरिस्ट्यूस, क्या यह संभव हो सकता है?’

अरिस्ट्यूस ने उत्तर दिया—‘एक मूर्ख और रोगी व्यक्ति के लिए यह संभव है किन्तु एक स्वस्थ शरीर और मस्तिष्कवाले व्यक्ति के लिए ऐसा करना असंभव है। क्या तुम नहीं जानते लुशियस, मन और शरीर के रोग कभी-कभी इन रोगियों को ऐसी शक्ति प्रदान कर देते हैं जो स्वस्थ व्यक्तियों के पास नहीं होतीं। वास्तव में न तो अच्छा स्वास्थ्य कोई वस्तु है और न बुरा स्वास्थ्य; केवल अवयवों की भिन्न अवस्थाएँ ही होती हैं। रोगों के अध्ययन में मैंने यही समझा कि ये जीवन के लिए आवश्यक रूप हैं। उनकी चिकित्सा की अपेक्षा उनके अध्ययन में मुझे अधिक आनन्द आता है। कुछ की तो प्रशंसा करनी ही पड़ती है जिनकी प्रकट हानि के अन्दर महान् मंगल निहित है। और बुखार! वह तो एक अति सुन्दर वस्तु है! कभी-कभी कुछ शारीरिक रोग बद्धि की शक्तियों को तीव्र करते हैं। तुम क्रियोन को जानते हो। बचपन में वह मूर्ख था और तुतलाता था। किन्तु एक सीढ़ी से गिर पड़ने से उसके मस्तिष्क में चोट लगी, बाद में वह एक कुशल वकील हुआ। इस तपस्वी के भी किसी अंग में कोई दोष होगा। फिर, उसके जैसा रहना उतना असाधारण नहीं है जितना तुम समझते हो लुशियस! भारतवर्ष के योगियों की याद करो, जो केवल साल भर ही नहीं बल्कि बीस, तीस और चालीस बरसों तक इसी तरह अचल रह सकते हैं।’

कोटा ने उत्तर दिया—‘भगवान् जानता है, मुझे तो यह भारी भूल जान पड़ती है। मनुष्य कर्म करने के लिए पैदा हुआ है, जड़ता अक्षम्य अपराध है क्योंकि यह राज्य के प्रति द्वेष है। मैं नहीं समझता, किस धर्म

में यह घातक क्रिया प्रचलित है। हो सकता है कि कुछ एशियाई मत इसके लिए उत्तरदायी हों। जब मैं सीरिया का गवर्नर था तब मैंने हेरा नगर में ऊँचे चबूतरे बने देखे थे। एक व्यक्ति साल में दो बार उन पर चढ़ता था और सात दिन उन पर बना रहता था। लोगों का विश्वास है कि यह व्यक्ति भगवान् से प्रार्थना करके सीरिया को समृद्ध बनाये हुए है। यह प्रथा मुझे तर्कशून्य लगी, किन्तु मैंने इसे रहने दिया। मैं समझता हूँ, एक अधिकारी को जनता की प्रचलित प्रथाओं को मिटाना न चाहिए, प्रत्युत उनके प्रचलन में सहायता देनी चाहिए, सरकार का कर्तव्य नये मत लादना नहीं, बल्कि जो हैं, उनकी रक्षा है, जो भले या बुरे, काल, स्थान और जाति के प्रभाव से बन गये हैं। यदि सरकार इन्हें समाप्त करने पर तुल जाती है तो वह क्रांति की जनक, अत्याचारी है और लोग उससे घृणा करते हैं तो ठीक ही करते हैं। फिर एक बात और भी है; बेहूदे अन्धविश्वासों से ऊपर उठने का साधन इसके सिवाय और क्या हो सकता है कि उन्हें सहा जाय और समझने की चेष्टा की जाय? अरिस्ट्यूस, मेरी सलाह है कि इस सपना देखनेवाले को हवा में ही, पक्षियों के आक्रमण के लिए, छोड़ दिया जाय। उसके प्रति जोर-जुल्म दिखाकर मुझे लाभ न होगा किन्तु उसके विचारों और मत को समझकर मेरा लाभ होगा।'

वह हाँफने लगा। खाँसा और अपने मंत्री के कंधे पर हाथ रखकर बोला—'लड़के, लिख लो कि ईसाइयों के कुछ तबकों में वेश्याओं को लेकर भाग जाना और खम्भों पर रहना अच्छा समझा जाता है। यह भी जोड़ दो कि ये प्रथायें विलासी देवताओं के धर्म की प्रमाण हैं। किन्तु इस बारे में हमें इस आदमी से स्वयं पूछना चाहिए।'

तब मुख ऊपर उठाकर, हाथ से धूप आँखों पर पड़ने से बचाते हुए उसने पुकारकर कहा—‘पैफनाशस, यदि तुम यह नहीं भूले हो कि कभी तुम मेरे मेहमान रहे हो तो मेरी बातों का उत्तर दो । तुम वहाँ ऊपर बैठे क्या कर रहे हो ? तुम ऊपर क्यों चढ़े और अब वहाँ क्यों बैठे हो ? क्या तुम इस स्तम्भ को कल्याणकारी समझते हो ?’

पैफनाशस कोटा को मूर्तिपूजक समझता था, अतः उत्तर देना उचित न समझा । किन्तु उसके शिष्य फ्लेवियन ने पास आकर कहा—‘मान्यवर, यह पवित्रात्मा समस्त संसार के पाप अपने ऊपर ओढ़ लेता है और संसार के रोगों की शान्ति करता है ।’

कोटा ने कहा—‘सुनते हो अरिस्टघूस, यह सपने देखनेवाला तुम्हारी तरह दवा भी करता है । इस सहकर्मि डाक्टर के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?’

अरिस्टघूस ने सिर हिलाकर कहा—‘यह संभव है कि कुछ रोगों की यह मुझसे अच्छी दवा करता हो, जैसे मृगी, जिसे साधारणतया ‘देवरोग’ कहा जाता है, यद्यपि सभी रोग उसी तरह दैवी हैं क्योंकि वे सभी भगवान् के भेजे हैं । किन्तु अंशतः इस रोग का कारण कल्पना है और लूशियस, जितनी शक्ति के साथ यह साधु देवी के मस्तक पर बैठा हुआ रोगी की कल्पना पर प्रभाव डाल सकता है उतना मैं अपने दवाखाने में खरल और शीशियों के साथ जुटा रह कर भी नहीं डाल सकता । लूशियस, कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो तर्क और विज्ञान से भी अधिक प्रभावपूर्ण हैं ।’

कोटा ने पूछा—‘कौन-सी ?’

अरिस्टघूस ने उत्तर दिया—‘अज्ञान और मूर्खता !’

कोटा ने कहा—‘ऐसे आश्चर्यजनक दृश्य मैंने कम ही देखे हैं । मैं समझता हूँ, किसी दिन कोई चतुर लेखक इस ‘महात्मा नगर’ की उत्पत्ति

फा० ११

का इतिहास लिखेगा। किन्तु बड़े से बड़े आश्चर्यजनक दृश्य देखने में भी हमें अधिक समय नष्ट नहीं करना चाहिए। आओ, अब चलें और नहरों का निरीक्षण करें। बिरा पैफ़नाशस। नहीं, बल्कि पुनः भेंट होने तक के लिए नमस्कार ! यदि कभी तुम पृथ्वी पर उतरो और एलेक्जेंड्रिया आओ, तो मैं अनुरोध करता हूँ, मेरे साथ आकर भोजन करना न भूलना।'

शिष्यों ने ये शब्द सुने, बात फैलने लगी, ईसाइयों ने दूर दूर तक ये बातें फैला दीं और पैफ़नाशस की ख्याति में इससे और भी चार चाँद लग गये। लोगों की भिन्न-भिन्न पवित्र भावनाओं के अनुसार ये बातें भी अनेक रूपों में परिवर्तित ओर पूजित होने लगीं। कहा जाने लगा कि स्तम्भशिखर पर बैठे हुए पैफ़नाशस ने जल-सेना के अध्यक्ष को ईसाई-धर्म में दीक्षित कर दिया। कोटा के अन्तिम शब्दों को ईसाइयों ने लाक्षणिक अर्थ प्रदान कर दिया, कोटा-द्वारा भोज का आमन्त्रण उनके लिए एक पवित्र सम्मिलन, एक आध्यात्मिक प्रीतिभोज, एक स्वर्गीय भोजोन्मव बन गया। यह कथा अनेक अद्भुत घटनाओं से सजाई गई जिस पर स्वयं इसके जनक ही पहले विश्वास करते थे। वे कहते, जिस घड़ी कोटा ने काफ़ी तर्क-वितर्क के बाद धर्म ग्रहण किया, उस समय आकाश से एक देवदूत ने उतरकर उसके माथे का पसीना पोछा। वे यह भी कहते कि कोटा के मन्त्री और डाक्टर ने धर्म की दीक्षा ली। जब यह अद्भुत कर्म बहुत फैल गया तब लिबिया के मुख्य चर्चों के अधिकारियों ने इसे प्रामाणिक कथा के रूप में लिख डाला। उस समय से, कहा जा सकता है कि सारा विश्व पैफ़नाशस के दर्शनों के लिए उत्सुक हो उठा और पूर्व तथा पश्चिम—हर जगह का प्रत्येक ईसाई पैफ़नाशस को विस्मित दृष्टि से देखने लगा। इटली के महान् नगरों ने अपने दूत उसके पास भेजे और रोम के सीज़र, महान् कान्सटैन्स ने, जो ईसाई-मत का अनुयायी था, उसे एक पत्र लिखा

जो दूतों ने बड़े सम्मान के साथ उसे प्रदान किया। एक दिन, जब समूचा 'महात्मा नगर' उसके चरणों के पास पड़ा सो रहा था, पैफनाशस ने एक आवाज़ सुनी—

‘पैफनाशस, तू अपने कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गया है, तेरे शब्दों में शक्ति है। भगवान् ने तुझे अपने यशोविस्तार के लिए इतना ऊपर उठाया है। उसने तुम्हें अद्भुत कार्य करने के लिए, रोगियों को चंगा करने के लिए, काफ़िरो को दीक्षित करने, मूर्ख मछुओं को प्रकाश देने, आर्यों को नष्ट करने और संसार में धर्म की सुख शान्ति स्थापित करने के लिए चुना है।’

पैफनाशस ने कहा—‘परमात्मा की इच्छा पूर्ण होगी !’

आवाज़ ने फिर कहा—‘उठ और जाकर अगवित्र कान्सटेन्स को महल में दीक्षित कर, जो अपने भाई कान्सटेन्स के मार्ग पर चलने के बजाय एरियस और मार्कस के चक्कर में पड़ा हुआ है। जा, पीतल के फाटक के सामने अपने आप खुल जायेंगे, तेरी खड़ाऊँ की ध्वनि महल के मुनहरे फर्श पर, मीज़र के सिंहासन के आगे होगी और तेरा शक्तिशाली स्वर्ग कान्सटेन्टाइन के पुत्र का हृदय परिवर्तित कर देगा। तू शान्त और प्रभावपूर्ण धर्म पर शासन करेगा। जिस तरह आत्मा शरीर पर ‘राज्य’ करती है उसी तरह तब धर्म साम्राज्य पर शासन करेगा। तेरा दर्जा राज्याधिकारियों, धनियों और समस्त कुलीनों के ऊपर होगा। लोगों की लोभ-लालसा और बर्बरो की अमानुषिकता को तू बन्द करेगा। वृद्ध कोटा तुझे शासक जान तेरे चरण धोयेगा। तेरी मृत्यु पर तेरा लबादा एलेक्जेंड्रिया के पुरोहित के पास जायगा और वह महान् अथानेसियस उसे एक महात्मा का स्मृतिचिह्न मान चूमेगा। जा !’

पैफनाशस ने उत्तर दिया—‘परमात्मा की इच्छा पूरी होगी।’

उसने उठते हुए उतरने की तैयारी की। आवाज ने उसका इरादा जानकर कहा—‘सीढ़ी से न उतर। यह साधारण व्यक्तियों जैसा कार्य होगा और तेरी प्रतिभा के विपरीत होगा। ओ दैवी पैफनाशस, अपनी शक्तियों को अच्छी तरह पहचान ! तेरे जैसे साधु को वायु में उड़ना चाहिए। कूद पड़, देवदूत तुझे सम्भाल लेंगे। कूद पड़ !’

पैफनाशस ने कहा—‘परमात्मा की इच्छा धरती पर भी उसी भाँति शासन करे जैसे आकाश में करती है।’

अपनी लम्बी बाँहों को, एक बड़े रोगी पक्षी के छिदरे पंखों की भाँति पसार, वह कूदने ही वाला था कि वायु में एक भयंकर उपहासजनक हँसी गूँज उठी। डरकर उसने पूछा—‘इस तरह यह कौन हँस रहा है ?’

आवाज ने हँसकर कहा—‘अभी हमारी मित्रता समाप्त नहीं हुई। किसी दिन अभी तुम्हारा परिचय मुझसे और प्रगाढ़ होगा। प्रिय मित्र, मैंने ही तुम्हें यहाँ ऊपर चढ़ाया था और जिस विनयशीलता से तुमने मेरी इच्छा मान ली उससे मुझे बड़ा संतोष हुआ। पैफनाशस, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ।’

पैफनाशस ने भयग्रसित स्वर में कहा—‘भाग जा, अब मैं तुझ पहचान गया। तू ही मसीह को मन्दिर-शिखर पर ले गया था और उन्हें संसार के समस्त प्रदेश दिखाये थे।’

वह निराश होकर पुनः स्तम्भ पर गिर पड़ा, सोचा—‘मैंने तुझे पहले ही क्यों नहीं पहचान लिया ? मैं उन अन्धों, बहरों और अपंगों से भी गया-गुजरा हूँ जो मुझ पर विश्वास करते हैं। मुझे दैवी वस्तुओं का ज्ञान नहीं रह गया। मैं उन पागलों से भी बदतर हो गया जो मिट्टी फाँकते हैं और शवों के साथ खेलते हैं। मैं नारकीय कोलाहल और स्वर्गीय शब्दों में भेद नहीं कर सकता। मुझे तो अब नवजात शिशुओं की स्वाभाविक

बुद्धि भी नहीं रही जो मा की छाती से हटकर रोने लगता है; उस कुत्ते की बुद्धि भी नहीं रही जो स्वामी का पता सूँघ कर लगाता है और उस पीछे जैसी स्वाभाविक भावना नहीं रही जो आकाश की ओर ऊपर ही उठता है। मैं शैतानों का खिलौना हूँ। शैतान ही मुझे यहाँ ले आया। मेरे साथ ही साथ इस स्तम्भशिखर पर विलास और गर्व भी चढ़े। मेरे असंख्य प्रलोभन ही मुझे त्राम नहीं देते। एण्टोनी को भी ऐसे ही सहना पड़ा था। देवदूतों के सामने ही इन शैतानों की तलवारें मेरा शरीर छेद डालें, मैं यही चाहता हूँ। मुझे अब अपने कष्टों से प्रेम हो गया है। किन्तु प्रभु मौन हैं, उनका यह मौन मुझे चकित कर रहा है। वे मुझे त्याग रहे हैं जिसे उनका ही सहारा है, अपने अभाव की भयंकरता में वे मुझे अकेला छोड़े दे रहे हैं। वे मुझसे दूर भाग रहे हैं। मैं उनके पीछे जाना चाहता हूँ। इस पत्थर पर मेरे पाँव जल रहे हैं। तो मैं अब जल्दी करूँ, मुझे जाना है, भगवान् को पाना है।'

स्तम्भ से टिकाकर खड़ी की हुई सीढ़ी को उसने तुरन्त थाम लिया, उस पर पाँव रक्खा और एक डंडा नीचे उतरा। ठीक सामने गोमुख था जो रहस्यपूर्ण हँसी हँस रहा था ! उसे अब यह विश्वास हो गया था कि जिस स्थान को उसने विश्राम और यश के लिए चुना था वह उसके कष्ट और दुःख का नृशंस साधन था। वह जल्दी से पृथ्वी पर उतर आया। पाँव ज़मीन पर पड़ते ही न थे, काँप रहे थे। उस घृणित स्तम्भ की छाया अपने ऊपर पड़ती देखकर वह भागा। सब लोग सो रहे थे। वह छिपे छिपे सराय, भठियारखाना आदि से भरे हुए उस मैदान को पारकर, एक गली से होकर लिबिया की पहाड़ियों की ओर दौड़ा। एक कुत्ता भूँकते हुए उसका पीछा कर रहा था, वह भी उस विशाल मरुभूमि की सीमा पर पहुँच कर रुक गया। पैफ़नाशस ऐसे देहात से गुज़रा जहाँ सड़कों

के स्थान पर केवल वन्य पशुओं के चरण-चिह्न बने हुए थे। अपने पीछे भोपड़ियों का अम्बार छोड़ता हुआ वह उस रात और दूसरे दिन भागता ही चला गया।

अन्त में, भूख, प्यास और थकान से अधमरा और भगवान् की सत्ता से अज्ञान वह एक नीरव नगर में पहुँचा जो दाँवें-बायें विस्तृत फैला हुआ था और क्षितिज की नोलिमा में धँसा दीख रहा था। दूर दूर पर बने हुए एकसमान घर मीनारों-से जान पड़ते थे जो बीच में काट दिये गये हों। वे समाधियाँ थी। द्वार टूट गये थे और कमरों की छाया के बाहर लकड़-बग्घों और भेड़ियों की आँखें चमकती दीख रही थीं जो अपने बच्चों को दूध पिला रहे थे। बाहर मृतकों के शव पड़े हुए थे जिन्हें डाकुओं ने विफ़्टन कर दिया था और पशुओं ने काट-कूट डाला था। इस मृतक नगर को पारकर पैफनाशस दूर पर बने एक समाधि के सामने थककर गिर पड़ा। यह समाधि छुहारे के वृक्षों की छाया में एक सोते के निकट बनी हुई थी। वह समाधि बहुत सजी-वजी थी। उसमें द्वार नहीं लगा था, अतः वहाँ बहुत-से साँप गेंडुरी मारे दिखाई पड़ रहे थे।

उसने निःश्वास लेकर कहा—‘यही मेरा उपयुक्त निवासस्थान होगा। यही मेरे प्रायश्चित्त और तपस्या का स्थल होगा !’

वह भीतर घुसा, पाँव से सपों को भगाया और फ़र्श पर अठारह घंटों तक औंधा पड़ा रहा, फिर उठकर सोते पर गया और अंजलि में पानी पिया। खजूर और कमलगट्ट निकालकर खाये। यह सोचकर कि यही जीवन सर्वोत्तम है, उसने ऐसा करने का नियम बना लिया। सुबह से शाम तक वह इसी तरह फ़र्श पर पड़ा रहता।

एक दिन, जब वह इसी तरह औंधा पड़ा था, उसने एक स्वर सुना—  
‘उन चित्रों को देख और शिक्षा ग्रहण कर !’

सर उठाकर उसने देखा, कमरे की दीवारों पर हास्यजनक परिचित दृश्यों की तसवीरें बनी हुई थीं। ये बहुत प्राचीन अद्भुत कारीगरी की नमूना थीं। रसोइये फूले गालों से आग फूँक रहे थे, कोई बतखों के पर तोड़ रहा था या बर्तनों में गोشت पका रहा था। आगे बढ़कर एक शिकारी कन्धे पर हिरन लादे जाता दिखाया गया था जिसके शरीर में तीर खुभे हुए थे। कृषक दाने थे जो बीज बो रहे थे और काट रहे थे। एक स्थान पर स्त्रियाँ वीणा, बाँसुरी और तम्बूरो के स्वरों पर नृत्य करती दिखाई गई थीं। एक युवती सितार बजा रही थी। उसके काले और सुघराई से सँवारे बालों में कमल का एक फूल चमक रहा था। पारदर्शक वस्त्रों से उसका अंग अंग झलक रहा था। उसके स्तन और उसका मुख फूलों के समान थे। एक ओर को सुन्दरता से मुड़े हुए मुख से उसकी सुन्दर आँखें सामने की ओर देख रही थीं। उसकी आकृति अत्यन्त सुन्दर थी। पैफ़नाशस ने उसकी ओर देखकर आँखें झुका लीं और आवाज़ से कहा—‘तुम मुझे उन चित्रों को देखने को क्यों कहते हो ? निःसन्देह ये तसवीरें उस मूर्तिपूजक के पार्थिव दिनों की याद दिलाती हैं जो मेरे पाँवों के नीचे एक काले पत्थर के सन्दूक में बन्द पड़ा हुआ है। ये एक मृतक की यादगार हैं और भले ही चित्र-विचित्र हों, पर हैं एक छाया की छाया ही ! एक मृतक का जीवन, आह, इतना मिथ्या गर्व !’

आवाज़ ने उत्तर दिया—‘वह मर गया सही, पर उसका जीवन सफल था। तुम मर जाओगे और कोई नाम भी न लेगा।’

उभ दिन से पैफ़नाशस को एक पल भी चैन नहीं पड़ी। आवाज़ बराबर उससे बातें करती रहती। सितार बजानेवाली युवती अपनी लम्बी पलकों के नीचे से उसे दृष्टि गड़ाये ताकती रहती। अपनी

बारी वह बोली—‘देखो, मैं कितनी रहस्यमयी और सुन्दरी हूँ। मुझे प्यार करो, जो प्यार तुम्हें त्रास दे रहा है उसे मेरे आलिंगन से शान्त कर लो। तुम्हारा भय किस काम का? तुम मुझसे भाग नहीं सकते, मैं स्त्रियों का सौन्दर्य हूँ। पागल, कहाँ भागकर जाना चाहते हो? तुम मुझे फूलों के सौन्दर्य में, खजूरों की शोभा में, कबूतरों की उड़ान में, हिरणों की छलाँग में, सोतों की लहराती धारा में, चाँद के हलके प्रकाश में और यदि आँखें मूँदकर देखो तो स्वयं अपने में निहित पाओगे। हजार बरस पहले, इस व्यक्ति ने मुझे छाती से लगाया था जो आज यहाँ कपड़े में बँधा, काले पत्थरों की सेज पर सोया है। हजार बरस पहले उसने मेरे मुख का अन्तिम चुम्बन प्राप्त किया था और अभी तक उसकी अनन्त निद्रा मेरे चुम्बन की सुगंध से सुवासित है। पैफ़-नाशस, तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो। तुमने मुझे क्यों नहीं पहचाना? मैं ताया के असंख्य अवतारों में से एक हूँ। तुम एक विद्वान् साधु हो और तुम्हारा ज्ञान भी परिष्कृत है। तुमने यात्रायें भी की हैं और यात्रायें बहुत कुछ सिखाती हैं। अकसर यात्रा के एक दिन में इतना चमत्कार होता है जो घर पर बिताये गये दस वर्षों में भी नहीं होता। तुमने सुना ही होगा कि पहले ताया यूनान में हेलेन के नाम से रहती थी। थीब्स में उसने दूसरा अवतार लिया। थीब्स की ताया मैं ही थी। तुमने यह क्यों नहीं समझा? अपने जीवन में संसार के अधिकांश पापों में मैंने भाग लिया है, और अब, यद्यपि मैं एक छायामात्र रह गई हूँ, फिर भी प्रिय साधु, तुम्हारे पापों की साक्षीदार हो सकती हूँ। तुम चकित क्यों हो गये? तुम कहीं भी जाओ, ताया तुम्हें जरूर मिलेगी।’

पैफ़नाशस ने पत्थर पर सिर पटक दिया और भय से चीख उठा। प्रतिदिन रात को वह बीणावादिनी दीवाल त्यागकर पास आती और स्पष्ट

शब्दों में बातें करती। उसकी ठंडी साँस भी उसके मुख पर पड़ती। पैफ़नाशस जब उसके प्रलोभनों को बराबर ठुकराता रहा तब उसने कहा— 'मुझे प्यार करो, मान जाओ मित्र ! जब तक मुझसे दूर भागोगे, मैं तुम्हें कष्ट देनी रहूँगी। तुम एक मृत स्त्री के धैर्य को नहीं जानते। जरूरत होगी तो मैं तुम्हारे मरने तक प्रतीक्षा करूँगी। जादूगरनी होने के कारण मैं तुम्हारे मृत शरीर में एक ऐसी शक्ति भर दूँगी, जो उसे पुनर्जीवित कर देगा और जो मेरी वह इच्छा पूर्ण करेगा जिसके लिए मैं व्यर्थ तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ। पैफ़नाशस, सोचो कि वह कैसी स्थिति होगी जब तुम्हारी आत्मा आकाश से अपने शरीर को पाथों में लिप्त देखेगी ! वह परमात्मा भी घबरा जायगा जिसने हिसाब के दिन के बाद और काल की समाप्ति के बाद तुम्हें यह देह वापस लौटा देने का वचन दिया है ! स्वर्गीय कीर्ति के मध्य वह उस देह को कैसे स्थापित करेगा जिसमें शैतान का निवास है, जो एक जादूगरनी के अधीन है ? तुमने इस कठिनाई पर विचार नहीं किया। भगवान् ने भी नहीं किया। मैं तुम्हें बता दूँ, भगवान् बहुत विवेकशील नहीं है। साधारण जादूगरनी भी उसे छल सकती है और यदि उसके पास बिजली और आकाशस्थित जलप्लावन की शक्ति न होती तो साधारण देहाती छोकरे भी उसकी दाढ़ी नोच लेते। वह वास्तव में ही, उतना चालाक नहीं है जितना उसका विपक्षी शैतान सर्प। सर्प अद्भुत चतुर है। मेरा सौन्दर्य उसका ही गढ़ा हुआ है। उसी ने मुझे बाल गूँथना और सजना-सँवरना सिखाया। तुमने बहुत दिनों उसका असम्मान किया। जब तुम यहाँ रहने आये तो यहाँ के निवासी सर्पों को भगा दिया। यह जानने का भी कष्ट नहीं उठाया कि कहीं वे उसी के परिवार के तो नहीं हैं। उनके अंडों को कुचल डाला। मुझे भय है, मेरे अभागे दोस्त, कि तुम भारी विपत्ति

में पड़े हो। तुम्हें यह तो मालूम ही था कि वह एक गायक और प्रेमी है। तुमने क्या किया? तुमने कला और सौन्दर्य, दोनों का अपमान किया। तुम दयनीय हो, भगवान् तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। उसका आना सम्भव नहीं है। सब वस्तुओं के बराबर उसका आकार है, बिना काफी स्थान के वह डोल ही नहीं सकता और यदि, यद्यपि यह असम्भव ही है, वह तनिक भी हिला-डुला तो समस्त सृष्टि ध्वंस हो जायगी। ओ सुन्दर साधु, वह मुझे एक चुम्बन प्रदान करेगा।'

जाड़ के खेलों में पैफनाशम अपरिचित नहीं था। उसने भयंकर निराशा के साथ मोचा—'शायद मेरे पाँवों-तले दफ़न मृत व्यक्ति उस पुस्तक में लिखी बातें जानता है जो यहाँ से पास ही एक समाधि के तले छिपी पड़ी है। उन मंत्रों के बल पर मृतक व्यक्ति अपनी पूर्व आकृति ग्रहण कर लेते हैं और सूरज का प्रकाश और रमणियों का विलास पुनः देखने है।'

उसे भय था कि वह वीणावादिनी और वह मृतक व्यक्ति कहीं आलिंगन में न बँध जायँ जिसे, उसे देखना पड़े। कभी-कभी उसे लगता, जैसे उसने चुम्बनों के हलके शब्द सुने हों।

उसके चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति थी और भगवान् के अभाव में उसे कुछ चिन्तन करते या देखते भी डर लगता था।

एक दिन नियमानुसार जब वह औंधा पड़ा हुआ था, एक अज्ञात आवाज़ ने उससे कहा—'पैफनाशम, पृथ्वी पर उससे कहीं अधिक प्राणी हैं जितना तुम मोचने हो। जो कुछ मैंने देखा है यदि वह तुम्हें दिखाऊँ तो भय में मर जाओ। ऐसे भी लोग हैं जिन्हें केवल एक आँख माथे में है! एक पाँव के आदमी हैं जो चलने की जगह फुदकते हैं। ऐसे पुरुष हैं जो स्त्री बन जाते हैं, ऐसी स्त्रियाँ हैं जो पुरुष बन जाती हैं। ऐसे पुरुष हैं जो

वृक्ष की तरह हैं जिनकी जड़ें पृथ्वी में बढ़ती हैं। बिना सिर के व्यक्ति हैं जिन्हें दो आँखें, एक नाक और छाती पर मुख है। क्या तुम हृदय पर हाथ रखकर कह सकते हो कि मसीह इनके उद्धार के लिए मरे ?'

एक दिन उसने एक स्वप्न देखा। उसने तीव्र प्रकाश में एक लम्बी पक्की सड़क, सोते और बाग देखे। सड़क पर अरिस्तोबुलस और चेरियस अपने मीरियन घोड़े कुदा रहे थे, इस घुड़दौड़ का उल्लास उनके मुख पर प्रकाशित था। एक पोर्टिको में कैलिक्रेट्स अपनी कविताये पढ़ रहा था, मन्तुष्ट गर्व उसके स्वर में गूँज रहा था और आँखों में प्रभामित था। एक बाग में जेनोथेमिस पके हुए सेव एकत्र कर रहा था और एक नीले पंखोंवाले सर्प को थपथपा रहा था। हमोडोरस श्वेत वस्त्र पहने और चमकती टोपी मिर पर रखे एक पवित्र वृक्ष के नीचे ध्यान-मग्न था, जिसमें फूलों के स्थान पर सुन्दर काट के छोटे-छोटे सिर लटक रहे थे। ये सिर मिस्री देवियों, गीधों, बाजों या कान्तिमान् चन्द्र जैसे गोलाकार थे। सबसे अलग एक भरने के किनारे बैठा हुआ निशियस नक्षत्रों की गति का अध्ययन कर रहा था।

एक नक्रावपोश स्त्री पैफनाशस के पास मेहँदी की एक डाल लिये आई और उससे कहा—'देखो, कुछ लोग अनन्त सौन्दर्य चाहते हैं और अपने नाशमान जीवन को अमर समझते हैं। दूसरे लोग ऐसे हैं जो चिन्तारहित रहते हैं और अपने स्वभाव के अनुसार चलकर सुखी और परितृप्त रहते हैं और इस तरह जीवित रहकर वे उस परमपिता की यशवृद्धि ही करते हैं, क्योंकि मनुष्य स्वयं भगवान् की एक मूर्तिमान् स्तुति है। वे सब सुख को निर्दोष वस्तु मानते हैं और आनन्द प्राप्त करने को वर्जित नहीं समझते। पैफनाशस, अगर इनकी बात सही है तो तुम कितने बड़े मूर्ख हो !'

स्वप्न समाप्त हो गया।

पैफ़नाशस के हृदय और मस्तिष्क को इस तरह लगातार प्रलोभन मिलते रहे। शैतान उसे एक पल भी चैन नहीं लेने देता था। एक समाधि में बड़े नगरों से भी अधिक व्यक्ति बसे जान पड़ते थे। भूत-प्रेत जोर से अट्टहास करते रहते और लाखों कीट और जन्तुविशेष जीवन के कार्यों की नक़ल करते रहते। शाम को जब वह झरने के पास जाता तब भाँति-भाँति के पतित देवतागण उसके चारों ओर नृत्य करते और उसे अपने कामुक कार्यों में खींच ले जाते। शैतानों को अब उससे भय नहीं लगता था। वे उसकी हँसी उड़ाते, गन्दे व्यंग्य करते और आघात भी पहुँचाते। एक दिन एक शैतान ने, जो उसकी बाँह के बराबर था, उसकी कमरपेटी ही चुरा ली।

उसने मन ही मन कहा—‘ओ विचार, तू मुझे कहीं ले आया ?

उसने हाथों से परिश्रम करने का निश्चय किया ताकि उसके मस्तिष्क को आवश्यक शान्ति मिल सके। झरने के समीप, वृक्षों के नीचे कई बड़ी बड़ी पत्तियोंवाले केले के पेड़ थे। इनके तने काटकर वह समाधि के पास लाया। एक पत्थर से उन तनों को कूटकर बारीक रेशे बनाये, जैसे रस्सी बटनेवालों को उसने करते देखा था। वह अपनी कमरपेटी के स्थान पर दूसरी रस्सी बनाना चाहता था। इससे प्रेतों को परेशानी हुई, उन्होंने अपना शोर बन्द कर दिया और वह वीणावादिनी भी स्वयं जादू करना छोड़, दीवाल पर ही अचल, स्थिर रही। तनों को कूटते हुए अपने साहस और धर्म की दृढ़ता के लिए पैफ़नाशस ने कहा—‘भगवान् की सहायता से मैं शरीर पर विजय प्राप्त करूँगा। आत्मा तो अभी विश्वासनिष्ठ है ही। ये शैतान और यह स्त्री मुझे व्यर्थ ही भगवान् के सम्बन्ध में सन्देह दिलाया करते हैं। मैं उन्हें जॉन के शब्दों में उत्तर दूँगा—

‘आरम्भ में केवल शब्द था और शब्द ही ईश्वर था ।’ मेरा इस पर दृढ़ विश्वास है और यदि यह झूठ है तब तो मैं इस पर और दृढ़ विश्वास रखता हूँ। यह भी कह सकता हूँ कि इसे झूठ होना ही चाहिए, नहीं तो मैं इस पर विश्वास न करता, इसे अनुभव करता । जान से जीवन नहीं मिलता, विश्वास ही उसका रक्षक है।’

वह इन अलग अलग रेशों को धूप में सुखाता और ओस में भीगने देता । किन्तु, प्रतिदिन सुबह उन्हें समाधि में उठा लाना न भूलता ताकि वे सड़ न जायें । अपने में बाल-सुलभ-सरलता का उदय जान वह बड़ा प्रसन्न था । रस्सी तैयार कर चुकने के बाद उसने चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाने के लिए कछार के कुछ पौधे काटे । समाधि का वह कमरा किसी टोकरी बनानेवाले का कारखाना जान पड़ने लगा और पैफनाशस काम के बाद सहज ही प्रार्थना करता था । ईश्वर तब भी उस पर प्रसन्न नहीं हुआ क्योंकि एक दिन रात को वह एक आवाज से चौंककर जाग गया । आवाज ने उसके अंग अंग को ठंडा कर दिया । उसने समझ लिया, यह आवाज उसी मृत व्यक्ति की है ।

आवाज ने हलकी आवाज में जल्दी से पुकारा—‘हेलेन, हेलेन, आओ मेरे साथ स्नान करो । जल्दी आओ ।’

एक स्त्री ने, जिसका मुख पैफनाशस के कानों के पास था, उत्तर दिया—‘मित्र, मैं उठ नहीं सकती, मेरे ठीक ऊपर एक मनुष्य है ।’

सहसा ही पैफनाशस ने देखा, उसके कपोल एक स्त्री के वक्षःस्थल पर टिके हुए हैं । उसने पहचाना, वह स्त्री वही वीणावादिनी थी, जिसने, आधा अलग हटते हुए, अपनी छाती ऊपर उठाई । पैफनाशस ने कामासक्त होकर इस पतित और सुन्दर स्त्री के शरीर-पुष्प को दृढ़ता

से आलिंगन कर लिया और अतिशय विषयासक्त होकर पुकार उठा—  
‘ठहरो, ठहरो, मेरी प्राण !’

किन्तु, वह अब द्वार के समीप जा चुकी थी। वह हँसी, चंद्रकिरणों ने उस हँसी पर चाँदी बिखेर दी। उसने कहा—‘अब एककर मैं क्या करूँगी ? तुम्हारे जैसी बृहत् कल्पनावालों के लिए छायामात्र ही पर्याप्त है। फिर, तुमने पाप भी किया है। अब और तुम्हें क्या चाहिए ?’

पैफनाशस रात भर रोता रहा। प्रातःकाल तड़के उसने गम्भीर करुण स्वर में प्रार्थना की—‘ईसू, मेरे ईसू, तुमने मुझे क्यों बिसार दिया। तुम देख रहे हो, मैं कैसी विपत्ति में हूँ। ओ मेरे रक्षक, मेरी सहायता करो। तुम्हारे पिता अब मुझमें प्यार नहीं करते। मेरी बातें नहीं सुनते। समझ लो, मेरे लिए अब तुम्हीं शेष हो। उनसे कुछ पा सकना अब मेरे लिए सम्भव नहीं है। मैं उन्हें पूरी तरह समझ नहीं पाता और वे भी मुझ पर दया नहीं कर सकते। किन्तु तुम तो एक स्त्री के गर्भ में उत्पन्न हुए हो, तभी मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। याद रखो, तुम एक मनुष्य हो। तुम ईश्वर के ईश्वर, ज्योति के ज्योति और परमात्मा के भी परमात्मा हो, इस कारण मैं तुम्हारी भक्ति नहीं करता बल्कि इस कारण कि तुमने भी इस पृथ्वी पर, जहाँ मैं कष्ट उठा रहा हूँ, दरिद्रता और दीनता भेली है, शैतान ने तुम्हें भी वासनाओं में फँसाना चाहा था, मानसिक दुश्चिन्ता का स्वेद तुम्हारी भौहों पर भी चुहचुहा आया था। प्रिय ईसू, बन्धु ईसू, मुझे तुम्हारी मानवता चाहिए।’

वह इस तरह हाथ मल-मलकर जब प्रार्थना कर चुका; एक बृहत् अट्टहास की ध्वनि समाधि की दीवारों तक को हिलाने लगी और उस आवाज ने, जो स्तंभ के ऊपर भी सुन पड़ी थी, उपहास के स्वर में कहा—

‘यह प्रार्थना तो मार्कस की पुस्तक के योग्य है ! पैफ़नाशस भी आर्य हो गया, वह भी विधर्मी हो गया !’

पैफ़नाशस मूर्च्छित होकर गिर पड़ा, जैसे उस पर वज्राघात हो गया हो ।

\* \* \* \*

जब उसने आँखें खोलीं, तो काले वस्त्रधारी साधुओं को अपने चारों ओर पाया जो उसके मुख पर पानी के छीटे दे रहे थे और झाड़फूंक के मंत्र पढ़ रहे थे । कुछ हाथ में खजूर आदि लिये सीधे खड़े थे ।

उनमें से एक ने कहा—‘इस निर्जन से जाते वस्तु हमने इस समाधि में आवाजें सुनीं और अन्दर आने पर आपको फ़र्श पर अचेत पड़ा पाया । निःसन्देह प्रेतों ने आपको मार गिराया है और हमारे आने की वे भाग गये हैं ।’

पैफ़नाशस ने सिर उठाकर क्षीण स्वर में पूछा—‘भाइयो, तुम लोग कौन हो ? ये खजूर आदि हाथों में क्यों लिये हो ? क्या मेरे मृतक संस्कार के लिए तो नहीं ?’

उन्होंने उत्तर दिया—‘भाई, क्या तुम जानते नहीं कि हमारे धर्म पिता एष्टानी एक सौ पाँच वर्ष की आयु में, मृत्यु की सूचना पाकर, अब काल्जिन पहाड़ से नीचे उतर आये हैं, जहाँ अबतक वे विश्राम कर रहे थे ! वे अपने अगणित प्राणप्रिय बच्चों को आशीर्वाद देने आये हैं । ये खजूर आदि लेकर हम उन्हीं पिता से मिलने जा रहे हैं । किन्तु भाई, यह बात क्या है कि तुम इतनी बड़ी घटना से अनभिज्ञ हो ? क्या यह सम्भव हो सकता है कि कोई देवदूत इस समाधि में यह सूचना लेकर तुम्हारे पास न आया हो ?’

पैफ़नाशस ने उत्तर दिया—‘दुःख है कि मैं इस कृपा के योग्य नहीं हूँ । इस समाधि के एकमात्र अधिवासी प्रेत और पिशाच ही हैं । मेरे

लिए भगवान् से प्रार्थना करो। मैं एण्टिनोय का पुरोहित पैफ़नाशस हूँ। भगवान् के सेवकों में सबसे अधिक दुखी !'

पैफ़नाशस का नाम सुनकर सबने, खजूर की डालियाँ हिलाते हुए, उसकी प्रशंसा की। जो अभी बोल चुका था, उसने प्रशंसा से भरकर कहा—'क्या यह सही है कि तुम्हीं महात्मा पैफ़नाशस हो, जो अपने कार्यों में महान् हैं और जिनके विषय में लोगों की धारणा है कि एक दिन वह स्वयं महान् एण्टानी के बराबर हो जायेंगे? ओ परम पूज्य साधु, तुम्हीं वेश्या ताया को दीक्षित करनेवाले व्यक्ति हो, तुम्हीं वह व्यक्ति हो जो दृढ़ स्तंभ पर बैठे हुए देवदूतों से क्रीड़ा करते थे। स्तंभ के नीचे जागते हुए लोगों ने तुम्हारा स्वर्ग की ओर उठना देखा था। मेघमाला की भाँति देवदूतों के पंख तुम्हें घेरे हुए थे और तुम्हारा दाहिना हाथ मनुष्यों को आशीर्वाद दे रहा था। दूसरे दिन जब लोगों ने तुम्हें नहीं देखा तब उनका चीत्कार उस शून्य स्तंभ के ऊपर तक जा पहुँचा। किन्तु फ़्लेवियन ने सबको रहस्य समझा दिया और तुम्हारे स्थान पर साधुओं का शासन उसके हाथ में आया। केवल एक मूर्ख व्यक्ति पॉल ही ऐसा था जिसने इस सार्वजनिक भावना का विरोध करना चाहा। उसे विश्वास था कि स्वप्न में उसने तुम्हें शैतानों द्वारा ले जाये जाते देखा है। लोगों ने उस पर पत्थर फेंके और आश्चर्य है कि वह मरने से बच गया। मेरा नाम जोज़िमस है और मैं इन वैरागियों का प्रधान हूँ जो इस समय तुम्हारे चरणों पर नत हैं। उनके साथ मैं भी तुम्हारे सामने नत होता हूँ, ताकि तुम सन्तानों के साथ-साथ पिता को भी आशीर्वाद दो। इसके बाद उन अलौकिक कार्यों के बारे में हमें बताओ जो भगवान् तुम्हारे द्वारा पूरा कराना चाहते हैं।'

पैफनाशस ने उत्तर दिया—‘मेरे ऊपर कृपा करने के बजाय, जैसा तुम समझते हो, भगवान् ने भयंकर प्रलोभनों से मेरी परीक्षा ली है। मुझे देवदूत नहीं ले गये थे, छाया की एक दीवाल मेरी आँखों के सामने खड़ी हो गई और आगे-आगे चलने लगी। मैं उस समय जैसे सपने में था। भगवान् बिना सब कुछ स्वप्न जैसा ही है। जब मैं एलेक्जेंड्रिया गया था, तब कुछ ही घंटों में कितने ही भाषण सुने थे। तब मैं समझा, भ्रांति की सेना असंख्य है। वही मेरा पीछा कर रही है और मैं तलवारों से घिरा हुआ हूँ।’

जौज़िमस ने कहा—‘पूज्य पिता, हमें यह जानना चाहिए कि महात्मा-गण, विशेषकर वैरागी महात्मा, भयंकर प्रलोभनों के शिकार होते हैं। यदि आप देवदूतों-द्वारा आकाश की ओर नहीं ले जाये गये तो यह तय है कि भगवान् ने यह कीर्ति आपकी छाया को प्रदान की। फ़लेवियन, साधुगण और जनता आपके स्वर्गारोहण के साक्षी हैं।’

पैफनाशस ने जाकर एण्टानी की शुभकामना लेने का निश्चय किया। कहा—‘भाई जौज़िमस, एक खजूर की डाल मुझे भी दो और चलो, पिता से मिल आयें।’

जौज़िमस ने कहा—‘चलो चलें। साधुओं के लिए सैनिक नियम ठीक ही हैं, क्योंकि वे सिपाहियों से भी ऊपर हैं। हम और आप, प्रधान होने के नाते आगे आगे चलेंगे। अन्य सब भजन गाते पीछे पीछे चलेंगे।’

उन्होंने चलना शुरू किया। पैफनाशस ने कहा—‘भगवान् एक है क्योंकि वही सत्य है जो स्वयं एक है। संसार अनेक है क्योंकि वह भ्रांति है। व्यक्ति को समस्त वस्तुओं से विराग ले लेना चाहिए, चाहे वह कितनी ही निर्दोष क्यों न जान पड़े। उनकी अनेकता ही, जो उन्हें सुन्दर रूप प्रदान

करती है, इस बात का प्रमाण है कि वे बुरी हैं। इसी कारण, बिना खिन्न चित्त हुए मैं कमलदलों को भी शान्त जल में डोलते नहीं देख सकता। इन्द्रियों-द्वारा लक्षित सभी वस्तुएँ धृणित हैं। बालू का एक क्षुद्र कण भी विपत्ति ला सकता है। प्रत्येक वस्तु में हमारे लिए प्रलोभन है। और स्त्री तो उन सब प्रलोभनों की मिश्रितरूप है जो वायु में उड़ते रहते हैं, धरती पर डोलते और जल में तैरते रहते हैं। वही व्यक्ति सुखी है जिसकी आत्मा रुद्ध है, वही प्रसन्न है जो गूंगा, अन्धा और बहरा हो जाना जानता है और जो इस संसार का कुछ भी नहीं जानता, नाकि भगवान् को समझ सके !'

जौज़िमस ने इन शब्दों पर विचार करके उत्तर दिया—'पूज्य पिता, जब तुमने अपना हृदय मेरे सामने खोल दिया है तब मेरे लिए यह जरूरी है कि मैं भी अपने पाप तुम्हारे सामने स्वीकार करूँ। धार्मिक नियमों के अनुसार हम एक दूसरे के सामने स्पष्ट स्वीकार करेंगे। साधु होने के पहले मैं इस संसार में धृणित जीवन बिताता था। वेश्याओं के लिए प्रसिद्ध मदौरा नगर में, मैं हर तरह का भोग-विलास करता था। रोज़ रात को युवक कामुक पुरुषों और वीणा बजानेवाली स्त्रियों के साथ खाता-पीता और जो सबसे अधिक पसन्द आती, उसे घर ले आता। तुम्हारे जैसा महात्मा तो मेरी वासना की तेज़ी समझ भी नहीं सकता। मेरे लिए यही कहना पर्याप्त होगा कि मुझसे न तो विवाहिता प्रोढ़ाये बचती थीं और न साधुनी, और चारों ओर मेरी वासना व्यभिचार और अपवित्रता फैलाया करती थी। मैं शराब-द्वारा अपनी इन्द्रियाँ उत्तेजित करता था और यह ठीक ही कहा जाता था कि मैं मदौरा का सबसे बड़ा शराबी था। फिर भी, मैं ईसाई था और अपनी समस्त अतियों में भी मसीह पर अटल विश्वास रखता था। अपना सब कुछ व्यभिचार में स्वाहा कर देने के बाद मुझे दरिद्रता की पूर्व

पीड़ा का अनुभव होने लगा था। उसी समय मैंने अपने साथियों में से सबसे अधिक स्वस्थ आनन्दी साथी को एक भयंकर रोग में तेजी से फँसते देखा। उसके घुटने शिथिल हो गये थे, हाथ उसके सामर्थ्य के बाहर हो गये थे। उसकी ज्योतिहीन आँखें दन्द हो गई। उसके कंठ से कराहों के अनिरिक्त और कुछ न निकलता। उसका मस्तिष्क, शरीर की ही भाँति, मो गया था। पशुसमान जीवन बिताने का दंड उसे देने के लिए भगवान् ने उसे पशु ही बना दिया था। सम्पत्तिके अभाव ने मुझमें यों ही अच्छे विचार जाग्रत् कर दिये थे, पर मित्र का यह उदाहरण और भी मूल्यवान् था। इसका मेरे हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैंने संसार त्याग दिया और निर्जन में चला आया। बीम वरम तक मैंने वह शान्ति-सुख भोगा है जिसमें कोई विघ्न नहीं पड़ा। मैं अपने साथी माधुओं के साथ जुलाहे, राजगीर, बढ़ई और लेखक का काम करता हूँ। यद्यपि वास्तव में लेखन-कर्म में मुझे कोई रम नहीं है, विचार की अपेक्षा कर्म को मैंने सदैव प्राधान्य दिया है। मेरे दिवस आनन्द से भरे होते हैं, रातें स्वप्नहीन। और मैं समझता हूँ, भगवान् की कृपा मुझ पर है क्योंकि भयंकर पापों में भी मैंने कभी आशा और विश्वास नहीं त्यागा।'

इन शब्दों को सुनकर पैफ़नाशस ने आकाश की ओर आँखें उठाकर कहा—'भगवान् ! इतने पाप, व्यभिचार, अपवित्रता से भरे व्यक्ति को तुम कृपा की दृष्टि से देखते हो और मुझसे दूर भागते हो, जिसने सदैव तुम्हारी आज्ञायें मानी हैं ! ओ परमात्मा, तुम्हारा न्याय कैसा विचित्र है, तुम्हारे कार्य कितने दुर्गम हैं !

जौजिमस ने हाथ फैलाकर कहा—'देखो पूज्य पिता, क्षितिज की सीमा पर रेंगते हुए चींटों की कतार-सी दीख रही है। वे हमारे बन्धु हैं, हमारे ही तरह एण्टानी से मिलने आ रहे हैं।'

मिलने के स्थान पर पहुँचकर उन्होंने एक अद्भुत दृश्य देखा। साधुओं की वह सेना तीन पंक्तियों के एक बृहत् गोलाकार में फैली हुई थी। पहली पंक्ति में इस निर्जन के पूर्व निवासी, लम्बी दाढ़ियोंवाले साधु थे जो हाथों में सलीब लिये हुए थे। इफ्रेम और मेरापियन-द्वारा शासित महन्त और नील नदी के सभस्त तपस्वी दूसरी पंक्ति में थे। उनके पीछे दूर-दूर से आये हुए साधु थे। कुछ के काले और शुष्क शरीर पर अस्त-व्यस्त चीथड़े थे, दूसरे वस्त्र के स्थान पर दाँस की खपन्चियों-से नरकट लपेटे हुए थे। कुछ एकदम नंगे थे; पर भगवान् ने उन्हें भेड़ के घने बालों जैसे बाल प्रदान किये थे। सबके सब हरे खजूर की डाल हाथ में लिये थे, उन्हें पन्ने का इन्द्रधनुष भी कहा जा सकता था। उनकी तुलना चर्च के गायक-दल अथवा स्वर्ग की जीवित दीवारों से भी की जा सकती थी।

यह भीड़ इतनी शृङ्खलित थी कि पैफ़नाशस ने सहज ही अपने अधीन साधुओं को खोज निकाला। वह उनके पास ही चला गया। टोपी से अपना मुख अच्छी तरह ढँक लिया ताकि वे उसे पहचान न सकें जिससे उनके धार्मिक आशा में विघ्न पड़े। शीघ्र ही उग्र स्वर में शब्द हुआ—‘महात्मा’ !

चारों ओर से पुकारें उठीं—‘महात्मा आये ! वे ही हैं, जिन्होंने नरक को विजय किया है। भगवान् के प्रिय, हमारे पिता एण्टोनी !’

तब सर्वत्र शान्ति हो गई और सबके माथे बालू पर नत हो गये।

उस विस्तृत निर्जन में एक पहाड़ी के शिखर से, अपने प्रिय शिष्य मैकेरियस और अमाथस के सहारे एण्टोनी उतर रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, शरीर तना हुआ था और उनमें असाधारण शक्ति का निवास दूर से ही देखा जा सकता था। उसकी श्वेत दाढ़ी चौड़े सीने पर फैली हुई थी और उसके चमकीले मस्तक पर प्रकाश की किरणें खेल रही थीं,

जैसे मूसा का मस्तक हो। गीघ जैसी उसकी आँखें थीं और मुख पर बाल-सुलभ मुसकान खेल रही थी। अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए वह खड़ा हुआ, यद्यपि उसके हाथ युगों के लगातार श्रम से शिथिल हो गये थे। अन्त में उसने ये प्रेममय शब्द कहे—‘जैकब, तेरे भवन कितने आकर्षक हैं और इसराईल, तेरे तम्बू कितने सुखमय हैं।’

शीघ्र ही वह साधुओं की जीवित दीवाल एक सिरे से दूसरे सिरे तक मेघगर्जन की भाँति इस स्तुति से गुंजित हो गई—‘ईश्वर से डरनेवाला व्यक्ति ही सुखी है।’

मैकेरियस और अमाथस के साथ एण्टोनी वृद्धों, साधुओं और वैरागियों की पंक्ति पार कर निकला। यह व्यक्ति, जिसने स्वर्ग और नरक दोनों को देखा था, यह साधु, जिसने पहाड़ के शिखर पर बैठे-बैठे ईसाई-धर्म का शासन किया था, यह महात्मा, जिसने भयंकर परीक्षा के दिनों में भी शहीदों के धर्म पर विश्वास दृढ़ रक्खा था, यह डाक्टर, जिसकी वाक्शक्ति ने पाखंड को छिन्न-भिन्न कर दिया था, इस समय अपने प्रत्येक धर्म-पुत्र से स्नेहमय बातें कर रहा था, उनसे बिदा माँग रहा था; क्योंकि आज उसकी मृत्यु का शुभ दिवस था, जिसे उसके करुणामय भगवान् ने कृपा कर उसे देने का वचन दिया था।

उसने इफ्रेम और सेरापियन महन्तों से कहा—‘तुम्हारे अधीन असंख्य सेना है और तुम युद्धकलाविद् हो। तुम्हें स्वर्ग में स्वर्ण सैनिक वस्त्र पहनने को मिलेंगे और तुम्हें प्रधान देवदूत माइकेल अपनी सेना का अध्यक्ष-पद प्रदान करेगा।’

वृद्ध पेलमान को देखकर उसने उसे चूमा और कहा—‘यह मेरा सबसे प्रिय और योग्य पुत्र है। उसकी आत्मा वैसी ही सुगंधित है जैसे फूल, जिन्हें वह प्रतिवर्ष अपने बाग में खिलाता है।’

जौजिमस मे कहा—‘ईश्वरीय सत्ता से तू कभी दूर नहीं हुआ, इसी कारण परमात्मा की शान्ति का तुझमें निवास है। तुम्हारे पापों के पंक पर तुम्हारी कीर्ति का कमल खिला है।’

वह सबसे ज्ञानभरी बातें कर रहा था।

वृद्धों से उसने कहा—‘भगवान् के सिंहासन के चारों ओर चौबीस वृद्धजन श्वेतवस्त्र धारण किये और माथे पर मुकुट रखे बैठे रहते हैं, यह ऋषियों ने कहा है।’

युवकों मे कहा—‘सदैव खुश रहो। उदामी उन लोगों के लिए छोड़ दो जो संसार में मुखी हैं।’

इस तरह उपदेश और परामर्श देता हुआ वह धर्मपुत्रों की सेना के आगे चल रहा था। पैफनाशम उसे आता देख, भय और विश्वास से कंटकित हो, उसके सामने घुटने टेककर बैठ गया। अपनी वेदना से विकल होकर पुकार उठा—‘पिता, पिता, मेरी सहायता करो, मैं मर रहा हूँ। मैंने ताया की आत्मा भगवान् को समर्पित की। मैं एक स्तम्भ के शिखर पर और समाधि में रहा। सदैव पृथ्वी पर माथा टेके, प्रार्थना-निग्त रहने के कारण मेरा माथा ऊँट की पिण्डली के समान कड़ा हो गया है। फिर भी, भगवान् मुझसे रूठ गये हैं। मुझे आशीर्वाद दो पिता, तो मैं बच जाऊँगा। मुझे वरदान दो, मैं फिर से निर्मल और हिम की भाँति उज्ज्वल हो उठूँगा।’

एण्टोनी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने एण्टिनोय के साधुओं की ओर ऐसी दृष्टि से देखा जो कोई नहीं सह सका। पॉल पर दृष्टि जमाये हुए, जिसे मूर्ख कहा जाता था, वह उसका अध्ययन करता रहा, फिर उसे पास आने का संकेत किया। एक संत के एक मूर्ख से बात करने पर जब सब लोग चकित हो रहे थे उसी समय एण्टोनी ने कहा—‘भगवान् ने

इस व्यक्ति को तुम सबसे अधिक प्यार किया है। प्रिय पुत्र पॉल, आँखें ऊपर उठाओ और बताओ, तुम्हें आकाश में क्या दीखता है ?'

मूर्ख पॉल ने आँखें ऊपर उठाईं। मुख पर प्रकाश झलक उठा और उसने कहा—'मैं आकाश में एक पलंग देख रहा हूँ जिस पर नीले और सुनहरे परदे पड़े हैं। इसके चारों ओर तीन कुमारियाँ सतर्कता से पहरा दे रही हैं जिससे, जिसके लिए वह पलंग है, उसके अतिरिक्त कोई और उसके समीप न जा सके।'

इस शय्या को अपनी प्रशंसा का प्रतीक जान पैफ़नाशस परमात्मा को धन्यवाद दे रहा था। एण्टोनी ने उमे चुप रहने और पॉल की बातें सुनने का संकेत किया जो उल्लासभरे स्वर में कह रहा था—'तीनों कुमारियाँ मुझसे बातें कर रही हैं। वे कह रही हैं, एक संत पृथ्वी पर से यहाँ आनेवाला है। एलेक्जेंड्रिया की ताया मरनेवाली है। उसके ही लिए हमने यह शय्या सजाई है। हम उसके तीन गुण हैं—विश्वास, भय और प्रेम !'

एण्टोनी ने पूछा—'सुन्दर पुत्र, तुम और क्या देखते हो ?' पॉल व्यर्थ ही इधर से उधर, पूर्व से पश्चिम तक देखता रहा, फिर सहसा ही उसकी आँखें पैफ़नाशस पर जा टिकीं। एक प्रकार के भय से वह पीला पड़ गया, आँखों से अज्ञात ज्वालायें निकलने लगीं। उसने कहा—'मैं तीन शैतानों को देख रहा हूँ जो उल्लसित हो इस व्यक्ति को पकड़ने की तैयारी कर रहे हैं। एक स्तम्भ की तरह है, दूसरा एक स्त्री और तीसरा जादूगर की तरह है। तीनों के नाम जलते लोहे की शलाकाओं से खुदे हुए हैं, एक के माथे पर, दूसरे के पेट पर और तीसरे की छाती पर। उनका नाम है अहंकार, विलास और शंका। मैंने यही देखा है।'

इसके बाद पॉल पुनः सीधा सादा लगने लगा, आँखें म्लान हो गईं और मुख कुम्हला गया।

एण्टिनोय के साधुगण एन्टोनी की ओर सचिन्त दृष्टि से देखने लगे । उसने इतना ही कहा—‘परमात्मा ने अपना धार्मिक फ़ैसला बतला दिया । हमें उनकी आज्ञा शिरोधार्य करनी चाहिए और चुप रहना चाहिए ।’

वह चला गया और सबको आशीर्वाद देता गया । सूर्य क्षितिज की सीमा पर पहुँच गया और उसे अपने प्रकाश से भर दिया और उसकी छाया, नीले आकाश से मिलकर, एक विशाल दरी की भाँति फैल गई । उसी तरह, जैसे संत एण्टोनी की छाया मनुष्यों के बीच रह जायगी ।

पैफ़नाशस खड़ा तो था पर उसे न कुछ दिखाई देता था, न सुनाई ही पड़ता था । कानों में ये ही शब्द गूँज रहे थे—‘ताया मरनेवाली है !’ उसने ऐसा सोचा भी नहीं था । बीस बरस तक वह एक मृत सिर को ही देखता रहा था, फिर भी इस विचार ने उसे अत्यन्त स्तम्भित कर दिया कि मृत्यु ताया की आँखें सदा के लिए बन्द कर देगी ।

‘ताया मरने ही वाली है !’ इन शब्दों में कितना नवीन और भयंकर भाव भरा हुआ है ! ताया मरनेवाली है ! तब सूर्य का, फूलों का, झरनों का, समस्त सृष्टि का क्या प्रयोजन है ? संसार से क्या लाभ है ? सहसा वह उछलकर खड़ा हो गया । ‘एक बार उसे देखूँगा ।’ वह दौड़ने लगा । वह नहीं जानता था कि कहाँ चला जा रहा है पर प्रेरणा उसे ठीक राह पर ले चली, वह सीधे नील नदी की ओर चला । नदी पर पालों का झुंड बिखरा हुआ था । वह एक नौका पर कूदकर चढ़ गया, जिसे हबशी चलाते थे और उसके सिरे का सहारा ले, आँखों से नदी के विस्तार को निगलता हुआ, दुःख और क्रोध से कह उठा—‘समय रहते ही ताया को मैंने क्यों नहीं अपना लिया, मैं कितना बड़ा मूर्ख हूँ ! यह मानना मूर्खता है कि संसार में उसके अतिरिक्त और भी कुछ है ! पागल, मैंने भगवान् का ध्यान किया, अपने आत्मा की सुरक्षा और अनन्त जीवन की बात सोची, गोया

ताया को देखने के बाद भी इन वस्तुओं का कोई मोल था ! मैंने पहले ही क्यों नहीं सोचा कि इस स्त्री के चुम्बनों में ही अनन्त सुख है, उसके बिना जीवन निस्सार है, केवल एक दुःस्वप्न है ? मूर्ख ! उसे पाकर भी तूने परलोक-सुखों की बात सोची, कायर ! उसे देखकर भी तू भगवान् से डरता रहा ! भगवान्, स्वर्ग ! ये सब क्या हैं ? जो कुछ वह तुझे दे सकती थी उसका एक क्षुद्र अंश भी क्या वे दे सकते हैं ? ओ दयनीय पागल ! तूने ताया के अधरों के बजाय अन्यत्र स्वर्गीय सुख चाहा ! तेरे आँखों पर कीन-सा परदा पड़ा हुआ था ? उस आदमी पर लानत है जिसने तुझे उस समय अन्धा कर दिया था ! अपकीर्ति के बदले तू उसके प्रेम की एक घड़ी का भी अनुभव कर लेता, पर तूने ऐसा नहीं किया । उसने तेरे लिए हाथ फैलाये, जो सुगन्ध-सने और सुन्दर थे और तूने उसकी नंगी छाती के मोन जादू में अपने को विलीन नहीं किया । तूने उस ईर्ष्यालु आवाज को सुना जो कहती थी—दूर रहो । ओ मूर्ख, ओ पश्चात्ताप, ओ निराशा ! अब नरक में एक घड़ी की सुखद स्मृति लेकर जाने और भगवान् से यह कहने का सुयोग निकल गया कि 'मेरे शरीर को जला डालो, मेरी नसों का समूचा रक्त सुखा डालो, हड्डियाँ चूर-चूर कर दो पर उस स्मृति को मुझसे नहीं छीन सकोगे जो शताब्दियों तक मुझे तरोताजा किये रहेगी और सुगन्ध प्रदान करती रहेगी !.... ताया मरनेवाली है ! ओ हास्यास्पद भगवान् ! काश तुम यह जानते कि मैं तुम्हारे नरक पर कितना हँस रहा हूँ ! ताया मर रही है; वह कभी मेरी न होगी, कभी नहीं, कभी नहीं !'

तेज धारा के साथ नौका बढ़ती जाती थी और वह सारे दिन मुंह के बल पड़ा हुआ कहता रहा—'कभी नहीं, कभी नहीं, मेरी कभी नहीं होगी !'

यह सोचकर कि ताया ने उसे नहीं, बल्कि सारे ससार को प्रेम-धारा में स्नान कराया, उसके अधर प्यासे ही रह गये, वह उत्तेजित होकर खड़ा हो गया और वेदना से चीत्कार कर उठा। नाखूनों से छाती विदीर्ण कर डाली, हाथ का मांस काट खाया। उसने सोचा—‘यदि उन सबको मैं मार डाल सकता जिनसे उसने प्यार किया है !’

इस हत्या के विचार ने उसे उत्तेजित कर दिया। उसने सोचा, निशियस को वह धीरे-धीरे, आराम में मार रहा है और उसकी आँखों की ओर दृष्टि गड़ाये है। फिर, तुरन्त ही उसकी उत्तेजना शान्त हो गई। वह रोने और सिसकियाँ लेने लगा। वह शिथिल और दीन हो गया। एक अज्ञात कोमलता ने उसके हृदय को द्रवीभूत कर दिया। उसकी इच्छा हुई कि अपने बचपन के साथी निशियस के गले में बाँहें डालकर, उससे कहे—‘निशियस, मैं तुझे प्यार करता हूँ क्योंकि तूने ताया को प्यार किया है। मुझसे उसकी बातें बता। कह कि उसने तुझसे क्या क्या कहा था !’ उधर लगातार ये शब्दबाण उसके हृदय में खुभ रहे थे—ताया मर रही है !

‘ओ दिवाज्योति, रात की रजत छायाओं, ओ तारो, ओ आकाश ! ओ कम्पित शिखरवाले वृक्षो, ओ जंगली पशुओ, जानवरो, ओ मानवों के हृदय ! क्या तुम नहीं समझ रहे हो, ताया मर रही है ! प्रकाश, वायु और सुगंध ! समाप्त हो जाओ ! संसार के रूप और विचार, हट जाओ ! ताया मर रही है ! वह संसार का सौन्दर्य थी और जो कोई भी उसके पास जाता, उसकी शोभा की छाया से खिल उठता ! वे वृद्ध व्यक्ति और विद्वान् कितने सुखी थे जो अलेक्जेंड्रिया के भोज में उसके समीप बैठे थे ! उनकी बातचीत कितनी मधुर थी ! उनके अधरों पर मुसकान खेल रही थी और उनके विचार

सुख के आनन्द से सुगन्धित थे। ताया की छाया उन पर थी अतः जो कुछ वे कहते थे वह प्रेमयुक्त, सुन्दर और सत्य होता था। उनकी बातचीत में मधुर नास्तिकता की शोभा निहित थी। वे सहज ही मानवीय गरिमा प्रकाशित कर रहे थे। दुःख है कि अब वह सब स्वप्न हो गया ! ताया मर रही है ! ओह, उसकी मौत से मैं कितने स्वाभाविक रूप से मर सकता हूँ ! पर ओ शुष्क जानवर ! क्या तू मर सकता है ? ओ विकृत प्राणी ! क्या तू समझता है कि तू मृत्यु का स्वाद चख सकेगा, तू, जिसने जीवन ही नहीं जाना ? भगवान् यदि कहीं हो और मुझे दंड दे तो शायद मैं मर सकूँ ! मैं ऐसा समझता हूँ। मैं यह चाहता हूँ। भगवान् ! यद्यपि मैं तुझसे घृणा करता हूँ फिर भी मेरी बात सुन ! मुझे दंड दे ! तुझे दंड देने को बाध्य करने के लिए मैं तेरे ऊपर थूकता हूँ। मुझे अनन्त नरक मिलना चाहिए जिसमें मैं अपना अशेष क्रोध बाहर निकाल सकूँ !'

\*

\*

\*

\*

प्रातःकाल अल्बीना ने पैफनाशस को अपनी कुटियों के द्वार पर खड़े पाया।

‘हमारे शान्ति-आगार में तुम्हारा स्वागत है पूज्य पिता, क्योंकि तुम निःसन्देह उस संत स्त्री की आत्मा को आशीर्वाद देने आये हो जिसे तुमने हमें प्रदान किया था। तुम जानते ही होगे कि भगवान् ने अपनी महती कृपा से उसे अपने पास बुलाया है। तुम क्यों नहीं उस समाचार को जानोगे जो देवदूत निर्जन के ओर-छोर तक पहुँचा रहे हैं ! यह सत्य है कि ताया का सुखद अन्त समीप है। उसके कार्य समाप्त हो गये हैं। मैं तुम्हें थोड़े शब्दों में यह बतला दूँ कि हमारे बीच वह कैसे रही ! तुम्हारे जाने के बाद, जब वह तुम्हारी मुहरबन्द भोपड़ी में बन्द कर दी गई तब मैंने उसके खाने के साथ एक बाँसुरी भी भेज दी, वैसी ही,

जैसी भोजोत्सवों में उसके पेशे की लड़कियाँ बजाया करती हैं। मैंने यह इसलिए किया कि वह उदासी न अनुभव करे और उसकी वह शोभा और प्रतिभा भगवान् के सामने कम न हो जो वह यहाँ पुरुषों को दिखाया करती थी। मैंने ठीक ही किया, ताया प्रतिदिन बाँसुरी पर परम-पिता का गुणगान करती थी। और कुमारियाँ, जिन्हें अज्ञात बाँसुरी की ध्वनि अपनी ओर आकर्षित करती, कहा करती थीं—हमें स्वर्ग-कुंजों की बुलबुल का स्वर सुनाई पड़ता है, सलीब पर चढ़ाये गये मसीह के मरणासन्न राजहंस की ध्वनि सुनाई पड़ती है। इस तरह ताया अपनी तपस्या कर रही थी। साठ दिन बाद तुम्हारा बन्द किया हुआ द्वार आपसे आप खुल गया, बिना किसी के छुये वह मिट्टी की मुहर टूट गई। इस संकेत से मैं समझ गई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई और भगवान् ने ताया के पाप क्षमा कर दिये। तब से वह मेरी अन्य पुत्रियों के समान जीवन बिताने लगी, उनके साथ काम और प्रार्थना करती। अपने कार्य और वचनों की विनयशीलता से उसने उन्हें उन्नत किया और उनके मध्य में वह लज्जा की मूर्ति-सी जान पड़ती। कभी कभी वह उदास भी हो जाती पर उदासी के मेघ जल्दी ही हट जाते। जब मैंने देखा कि वह विश्वास, आशा और प्रेम के साथ ईश्वर से सम्बद्ध हो गई है तब मुझे उसके सौन्दर्य और प्रतिभा का उपयोग उसकी अन्य बहनों की उन्नति के लिए करने में भय नहीं हुआ। मैंने उससे धर्म-ग्रंथों में वर्णित साहसी स्त्रियों और कुमारियों का अभिनय अपने सामने करने को कहा। उसने ईस्थर, डेबोरा, जूडिथ, लाज़ारस की बहन मैरी और प्रभु मसीह की माता मरियम का अभिनय किया। मैं जानती हूँ पूज्य पिता, कि तुम्हारी तपस्या को इन अभिनयों पर आश्चर्य होता है किन्तु तुम स्वयं उसे इन दृश्यों में, वास्तविक अश्रु से युक्त और पौधों की भाँति आकाश की ओर हाथ उठाये देखकर

पिघल जाते। मैंने बहुत दिनों तक स्त्रियों पर शासन किया है और मेरा एक नियम यह भी है कि उनके स्वभाव का विरोध न किया जाय। सब बीज एक ही तरह के फूल नहीं देते। एक ही तरह से सब आत्मायें पवित्र नहीं की जा सकतीं। हमें यह भी ख्याल रखना चाहिए कि ताया ने उस समय भगवान् को आत्म-समर्पण किया जब वह सुन्दरी थी, और यह असाधारण नहीं तो कठिन अवश्य है। इस सौन्दर्य ने, इस प्राकृतिक आवरण ने अब भी उसका साथ नहीं छोड़ा है जब कि वह तीन महीने के ज्वर से मर रही है। बीमारी में वह लगातार नभ की ओर देखने को कहा करती है, अतः मैं प्रतिदिन प्रातःकाल उसे कुएँ के पास के आँगन में उस प्राचीन अंजीर वृक्ष के नीचे लिवा लाती हूँ, जिसकी छाया में इस आश्रम की महन्तिनें अपनी सभायें करती हैं। पूज्य पिता, तुम्हें ताया वहीं मिलेगी। पर जल्दी करो, क्योंकि भगवान् उसे बुला रहे हैं। आज संध्या को वह मुख कफ़न से ढँक जायगा जिसे परमात्मा ने इस संसार के कलंक और गौरव के लिए गढ़ा था।'

पैफ़नाशस अल्बीना के साथ प्रातःकाल के प्रकाश से युक्त आँगन में गया। ईंटों की छत के किनारे कबूतरों की मुक्तामाला-सी बनी हुई थी। अंजीर वृक्ष की छाया में एक शय्या पर रक्तहीन ताया, हाथ पर हाथ रखे पड़ी हुई थी। उसके पास खड़ी होकर नक्काबपोश वृद्ध स्त्रियाँ करुण प्रार्थना कर रही थी—'मेरे प्रभु, अपनी महान् स्नेहपूर्ण उदारता से मुझ पर दया करो, अपनी महती दया से मेरे पापों को धो दो !'

पैफ़नाशस ने पुकारा—'ताया !'

ताया ने पलकें उठाई और शब्द की ओर अपनी श्रीहीन आँखों की पुतलियाँ घुमाई। अल्बीना ने नक्काबपोश स्त्रियों को कुछ कदम पीछे हट जाने का संकेत किया।

पैफ़नाशस ने फिर पुकारा—‘ताया !’

ताया ने सिर उठाया, उसके रक्तशून्य अधरों से एक धीमी आवाज़ निकली—‘पिता, तुम हो ? क्या तुम्हें सोते के जल की और उन खजूरों की याद है जो हमने एकत्र किये थे ? पिता, उसी दिन प्रेम और जीवन के लिए मेरा जन्म हुआ था ।’

उसने बोलना बन्द कर दिया और उसका सिर पीछे को झुक गया ।

मृत्यु की छाया उस पर पड़ रही थी और वेदना का स्वेद उसके माथे पर झलक रहा था । भयंकर नीरवता को भेदन करता हुआ एक फ़ास्ते का विलाप वहाँ गूँज उठा । पैफ़नाशस की सिसकियाँ कुमारियों के भजन में एकस्वर हो गईं—‘मेरी कालिमाओं को धो दो और मेरे पाप साफ़ कर दो । मैं अपना कलंक जानती हूँ और मेरे पाप सदैव मेरी आँखों के आगे रहते हैं ।’

सहसा ताया अपनी शय्या पर उठ बैठी । उसकी नीली आँखें विस्तृत हो उठीं, दूर पर देखती हुई और बाँह, दूरागत पहाड़ियों की ओर फैलाये उसने स्पष्ट और प्रसन्न स्वर में कहा—‘अनन्त प्रभान की गुलाबी ऊषा वह देखो !’

(४)

उसकी आँखें चमक उठीं, कानों पर हलका रंग छा गया । वह सदा से अधिक कोमल और सुन्दर बन गई । पैफ़नाशस ने उसके सामने झुक कर उसे अपनी बाँहों में आबद्ध कर लिया ।

क

वह ऐसे स्वर में बोल उठा जिसे वह स्वयं नहीं पहचान सकता था—‘मरो नहीं ताया । मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मरो नहीं ! मुनो प्रिय ताया, मैंने तुम्हें धोखा दिया, मैं मूर्ख था । भगवान् और स्वर्ग, दोनों मिथ्या हैं । इह-जीवन और सांसारिक प्रेम ही सत्य वस्तुएँ हैं । मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मरने का नाम न लो । तुम्हारा मरना नहीं होगा, तुम्हारा मूल्य

बहुत अधिक है। आओ, मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें बाँहों में भरकर कहीं दूर ले चलूँगा। आओ, हम दोनों प्यार करें। मेरी बात सुनो प्रिये, कहो कि 'मैं जिऊँगी, मैं जीना चाहती हूँ।' ताया, ताया, अब तो उठो।'

ताया ने उसकी बात नहीं सुनी। उसकी आँखें अनन्त में तिर रही थीं। उसने धीरे से कहा—'स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं। देवदूत, नबी और महात्मागण मुझे दिखाई पड़ रहे हैं। संत थियोडोर भी उनमें है। उनके हाथ फूलों से भरे हुए हैं, वे हँस रहे हैं और मुझे बुला रहे हैं। दो देवदूत मेरे पास आ रहे हैं, वे आये . . . वे कितने सुन्दर हैं। . . . मैं भगवान् को देख रही हूँ !'

उसने आनन्द की एक उसाँस ली और उसका सिर पीछे तकिये पर झकल होकर गिर पड़ा। ताया मर गई। पैफ़नाशस कसकर उसका आलिंगन किये हुए था और वासना, क्रोध और प्रेम जैसे उसे खाये जा रहा था।

अल्बीना ने पुकारकर कहा—'हट जा नीच !'

उसने मृत ताया की पलकों पर धीरे से उँगलियाँ रक्खी। पैफ़नाशस ढँपता हुआ पीछे हट गया। उसकी आँखें ज्वाला से झुलस गई थीं और उसे जान पड़ता था, पावों-तले की पृथ्वी फट गई है।

कुमारियाँ ज़क़रिया का भजन स्वरसहित गा रही थीं—'इसरायल के परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद !'

एकाएक उनकी आवाज़ कण्ठ में ही रुद्ध हो गई। उन्होंने पैफ़नाशस का मुख देखा और भय से चीखती हुई भागीं—'भूत, भूत !'

वह इतना बीभत्स हो गया था कि अपने मुख पर हाथ फेरने से उसे स्वयं अपनी भयंकर कुरूपता का अनुभव हुआ।



# आगामो २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

## विचार-धारा

### मानव-संबंधी

- (१) जीवन का आनन्द
- (२) ज्ञान और कर्म
- (३) मेरे अन्त समय के विचार
- (४) मनुष्य के अधिकार
- (५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
- (६) मानव-धर्म
- (७) जातियों का विकास
- (८) विश्व-प्रहेलिका

### समाज-संबंधी

- (१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
- (२) विवाह-प्रथा, प्राचीन और

### आधुनिक

- (३) सामाजिक आन्दोलन
- (४) धर्म का इतिहास
- (५) नारी
- (६) दरिद्र का क्रन्दन

### राजनीति-संबंधी

- (१) समाजवाद
- (२) चीन का स्वातन्त्र्य-प्रयत्न
- (३) राष्ट्रों का संघर्ष
- (४) स्वाधीनता और आधुनिक युग

### (५) युवक का स्वप्न

### (६) योरपीय महायुद्ध

### (७) मूल्य, दर और लाभ

## विश्व-उपन्यास

- (१) तावीज
- (२) आना केरेनिना
- (३) मिलितोना
- (४) डा० जेकिल और मि० हाइड
- (५) पम्पियायी के अन्तिम दिन
- (६) अमर नगरी
- (७) काला फूल
- (८) चार सवार
- (९) रेवेका
- (१०) डेविड कूपर फ्रील्ड
- (११) जेन्डा का कौदी
- (१२) वेनहूर
- (१३) कोवेडिस
- (१४) रोमियो-जूलियट
- (१५) दो नगरों की कहानी
- (१६) टेस
- (१७) रहस्यमयी

## आधुनिक उपन्यास

- (१) चुनारगढ़
- (२) विषादिनी

- (३) कालरात्रि
- (४) मुक्ति
- (५) यादगार
- (६) द्वादशिको
- (७) दाना-पानी
- (८) विप्लव
- (९) जलती निशानी
- (१०) ग्रहचक्र
- (११) कजरी
- (१२) जयमाला
- (१३) उत्कंठिता
- (१४) लहर
- (१५) विचित्रा (नाटक)
- (१६) जयंती
- (१७) आलमगीर
- (१८) कर्णाजुन

### रहस्य-रोमांच

- (१) ताज का रहस्य
- (२) शैतान
- (३) धन का मोह
- (४) कौशलगढ़ का किसान
- (५) पहाड़ी फूल
- (६) अन्तिम परिणाम
- (७) अद्भुत जाल
- (८) मृत्यु का व्यापारी
- (९) यौवनशिखा
- (१०) विद्रोही
- (११) छिपा खजाना
- (१२) गाविता
- (१३) चेतावनी

- (१४) देश के लिए
- (१५) दोस्त
- (१६) चौंदी की कुञ्जी
- (१७) आदर्श युवक
- (१८) हुल्लड़
- (१९) शैतान डाक्टर
- (२०) प्रतिशोध
- (२१) अन्याय का अन्त
- (२२) प्रोफेसर चौधरी
- (२३) वज्राघात
- (२४) समय का फेर
- (२५) डाक्टर कोठारी का लोभ
- (२६) चीन का जादू
- (२७) नीला चश्मा
- (२८) हार
- (२९) अफ़रीदी डाकू
- (३०) खतरे की राह
- (३१) मकड़ी का जाला
- (३२) अदृश्य आदमी
- (३३) साहस का पहाड़
- (३४) अंधेरखाता
- (३५) कंकन का चोर
- (३६) अपूर्व सुन्दरी
- (३७) लौह लेखनी
- (३८) गुप-चुप
- (३९) लाल लिफाफ़ा
- (४०) कल की डाक

### कहानी-संग्रह

(‘क’ विभाग)—विदेशी भाषाओं  
चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

- विभाग)---लेखकों की अपनी  
हुनी हुई कहानियाँ---५ भाग
- विभाग)---विभिन्न विषयों पर  
हुनी हुई कहानियाँ---५ भाग
- विभाग)---भारतीय भाषाओं की  
हुनी हुई कहानियाँ---६ भाग

## विज्ञान

- स्वास्थ्य और रोग
- जानवरों की दुनिया
- आकाश की कथा
- समुद्र की कथा
- खाद-विज्ञान
- मनुष्य की उत्पत्ति
- प्राकृतिक चिकित्सा
- विज्ञान का व्यावहारिक रूप
- कृति की विचित्रतायें
- यु पर विजय
- विज्ञान के चमत्कार
- त्रैचित्र जगत्
- आधुनिक आविष्कार

## हिन्दी-साहित्य

- साहित्य
- (१) वैष्णवपदावली
- (२) मीरा के पद
- (३) नीति-संग्रह
- (४) हिन्दी की सूफी कविता
- (५) प्रेममार्गी रसखान और धनानन्द
- सन्नों की वाणी
- (६) सूरदास
- (७) तुलसीदास

- (९) कबीरदास
- (१०) बिहारी
- (११) पद्माकर
- (१२) श्री भारतेन्दु
- साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

- (१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
- (२) हिन्दी-कविता में नारी
- (३) हिन्दी के उपन्यास
- (४) हिन्दी में हास्य-रस
- (५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
- (६) हिन्दी का वीर-काव्य
- (७) नवोन कविता, किधर ?
- (८) व्रजभाषा की देन
- (९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
- (१०) बालकृष्ण भट्ट
- (११) बालमुकुन्द गुप्त
- (१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

## धर्म

- (१) गीता (शङ्करभाष्य)
- (२) ,, (रामानुजभाष्य)
- (३) ,, (मधुसूदनी टीका)
- (४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
- (५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
- (६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)

- (७) सरल उपनिषद् (ईशा, केन, कठ, मुंडक, प्रश्न, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर आदि) २ भाग
- (८) पुराण (समस्त पुराणों के चुने हुए शिक्षाप्रद और मनोमोहक कथानक)
- (९) महाभारत के निम्नांकित अंश  
क—(विदुरनीति)  
ख—(सनक सुजातीय)  
ग—(नारायणीय उपाख्यान)  
घ—(श्रीकृष्ण के समस्त व्याख्यान)  
ङ—(वन, शान्ति और अनुशासन-पर्व के आख्यान)
- (१०) पातञ्जल योगदर्शन (व्यास भाष्य)
- (११) तंत्र सर्वस्व
- (१२) पौराणिक संतों के चरित्र
- (१३) उत्तर-भारत के मध्यकालीन संत
- (१४) दक्षिण-भारत के संत
- (१५) आधुनिक संतों की जीवनी (श्री अरविन्द, रमण महर्षि, विवेकानन्द, उड़िया बाबा आदि)
- (१६) पतिव्रताओं और सतियों के चरित्र
- ऐतिहासिक विचित्र कथा**
- (१) भारत का प्राचीन गौरव
- (२) प्राचीन मिस्र का रहस्य
- (३) प्राचीन ग्रीक की सभ्यता
- (४) मृत्युलोक की भोंकी
- (५) अमेरिका का स्वाधीनता-युद्ध
- (६) फ्रांस की राजक्रांति
- (७) रोमनसाम्राज्य का पतन
- (८) क्रांति की विभीषिका
- (९) रोम के महापुरुष
- (१०) इस्तिंग का भारत-भ्रमण
- (११) ध्रुव प्रदेश की खोज में
- (१२) प्राचीन तिब्बत
- (१३) सहारा की विचित्र बातें
- (१४) मरहटों का उदय और अस्त
- (१५) सिक्खों का उत्थान और पतन
- (१६) भारत के पूर्वी उपनिवेश
- (१७) मुगलसाम्राज्य में भ्रमण
- (१८) मुगलों का दरबार
- (१९) लखनऊ की शाहजादियाँ
- (२०) विदेशी यात्रियों का भारत-वर्णन
- (२१) नरभक्षकों के देश में—
- (२२) पशुओं, मानवों और देवों में—
- जीवन-चरित्र**
- (१) नेपोलियन बोनापार्ट
- (२) लेनिन
- (३) भारतीय राजनीति के स्तम्भ (१)
- (४) तुर्कों का पिता कमाल
- (५) मेज़िनी—इटली का वीर
- (६) सन-यात-सेन—चीन का नायक
- (७) एब्राहिम लिंकन—अमेरिका नेता













